Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24 website- www.dvpnews.in रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 244 ● वर्ष : 11 ● रायपुर, गुरुवार 21 मार्च 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

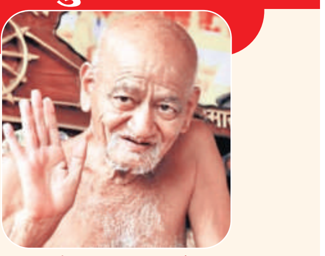

श्रम शब्द में ही श्रम और संयम की प्रतिष्ठा है।

labor has the altitude of labor and control.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

एसीबी-ईओडब्लू के दो निरीक्षकों का हुआ तबादला

रायपुर (विसं)। अचार संहिता लगने के बाद तबादले की एक और सूची सामने आई है। इस बार आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो और एंटी करप्शन ब्यूरो के दो निरीक्षकों का स्थानांतरण आदेश जारी हुआ है। मिली जानकारी के अनुसार निरीक्षक मुकेश सोम को बीजापुर और मुकेश यादव को सुकमा में नई पोस्टिंग दी गई है। पिछले सप्ताह ही दोनों को ईओडब्ल्यू एसीबी में पोस्टेड किया गया था। लेकिन यहां उनहें ज्वाइनिंग नहीं मिल पाई थी। इसी बीच दोनों को फिर से नई पदस्थापना दी गई है।

विश्व प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु सद्‌गुरु जग्गी अस्पताल में भर्ती

नई दिल्ली (आरएनएस)। विश्व प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु सद्‌गुरु जग्गी वासुदेव की तबीयत बिगड़ने का समाचार है। उन्हें दिल्ली के अपोलो हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया जहां उनके ब्रेन की इमरजेंसी सर्जरी की गई। दरअसल 17 मार्च को उनके मस्तिष्क में सूजन और ब्लीडिंग का पता चलने पर उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सदगुरु कई दिनों से सिर में गंभीर दर्द से पीड़ित थे। सद्गुरु का इलाज डॉ. विनित सूरी, डॉ. प्रणव कुमार, डॉ. सुधीर त्यागी और डॉ. एस चटर्जी सहित डॉक्टरों की एक टीम द्वारा किया गया और मस्तिष्क में रक्तस्राव को हटाने के लिए 17 मार्च को एक आपातकालीन ब्रेन सर्जरी की गई।

प्रधानमंत्री भारत मंडपम में स्टार्टअप महाकुंभ में शामिल हुए

भारत की स्टार्टअप क्रांति का नेतृत्व देश के छोटे शहरों के युवा कर रहे : नरेन्द्र मोदी

नई दिल्ली (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत मंडपम में स्टार्टअप महाकुंभ में शामिल हुए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि देश ने स्टार्ट अप इंडिया अभियान के तहत इनोवेटिव आइडिया को एक प्लेटफॉर्म दिया, उन्हें फंडिंग के सोर्स से कनेक्ट किया... इससे आज पूरा देश गर्व से कह सकता है कि हमारा स्टार्ट अप इकोसिस्टम सिर्फ बड़े मेट्रो शहर तक सीमित नहीं है। भारत की स्टार्ट अप क्रांति का नेतृत्व देश के छोटे शहरों के युवा कर रहे हैं।

स्टार्टअप महाकुंभ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि हर क्षेत्र में नौजवान आइडिया लेकर आते हैं। कम से कम रिक्वायरमेंट के साथ वे काम करते हैं और इसी ने इसकी ताकत बढ़ाई है, और यही सपने हैं, यही शक्ति है,इसलिए लोग कहते हैं, मैं इसे नष्ट करूंगा। मोदी ने कहा, हर क्षेत्र में नौजवान आइडिया लेकर आते हैं... कम से कम रिक्वायरमेंट के साथ वे काम करते हैं और इसी ने इसकी ताकत बढ़ाई है... और यही सपने हैं, यही शक्ति है... इसलिए लोग कहते हैं, मैं इसे नष्ट करूंगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ...2047 के विकसित भारत के रोडमैप पर काम कर रहा है, ऐसे समय में स्टार्ट अप महाकुंभ का कई महत्व है। बीते दशकों में भारत ने ढ्रुञ्ज और सोफ्टवेयर सेक्टर में अपनी छाप छोड़ी है। अब हम भारत में इनोवेशन और स्टार्टअप कल्चर का ट्रेंड लगातार बढ़ता हुआ देख रहे हैं।

कार्यक्रम में मौजूद मंत्री पीयूष गोयल ने राष्ट्र निर्माण में स्टार्टअप्स की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। इस वर्ष, भारत में एक लाख से अधिक पेटेंट दिए गए हैं, जिनमें से 50 प्रतिशत भारतीय नवाचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) के क्षेत्र में भारत शीर्ष देशों में अग्रणी देश बनने की ओर बढ़ रहा है। स्टार्टअप महाकुंभ का आयोजन एसोचैम, नैसकॉम, बूटस्ट्रैप इनक्यूबेशन एंड एडवाइजरी फाउंडेशन, टीआईई और इंडियन वेंचर एंड अल्टरनेट कैपिटल एसोसिएशन सहित विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से किया गया था, जिसमें डीपीआईआईटी, एमईआईटीवाई स्टार्टअप हब (एमएसएच) का सहयोग था। भारत में निवेश करें.

सरकार भारत स्टार्टअप इकोसिस्टम रजिस्ट्री के माध्यम से स्टार्टअप निवेश को बढ़ावा देने में सक्रिय रही है, जो स्टार्टअप इंडिया कार्यक्रम का एक घटक है, जिसे भारत के स्टार्टअप परिदृश्य के भीतर विभिन्न हितधारकों को जोड़ने और सहायता करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह रजिस्ट्री एक संपूर्ण डेटाबेस के रूप में कार्य करती है, जिसमें निवेशक, इनक्यूबेटर, शिक्षाविद, सरकारी संस्थाएं, सलाहकार और उद्योग संगठन जैसी श्रेणियां शामिल हैं।जनवरी 2016 में लॉन्च होने के बाद से, स्टार्टअप इंडिया पहल एक मजबूत घरेलू स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने, नवाचार को प्रोत्साहित करने और निवेश को सुविधाजनक बनाने के लिए समर्पित है। डीपीआईआईटी-मान्यता प्राप्त स्टार्टअप कई योजनाओं के तहत विभिन्न प्रोत्साहनों के लिए पात्र हैं, जिनमें फंड ऑफ फंड्स फॉर स्टार्टअप्स, स्टार्टअप इंडिया सीड फंड स्कीम और क्रेडिट गारंटी स्कीम फॉर स्टार्टअप्स शामिल हैं।

रोहिंग्या मुस्लिमों को भारत में रहने का अधिकार नहीं, केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को दी जानकारी

नई दिल्ली (आरएनएस)। रोहिंग्या मुस्लिमों को लेकर बड़ी खबर सामने आई है। खबर यह है कि केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को बताया है कि देश में घुसे अवैध रोहिंग्या मुस्लिमों को भारत में रहने और बसने का कोई भी मौलिक अधिकार नहीं है। केंद्र सरकार ने कहा कि ऐसे भारत में अवैध रूप से घुसे लोगों को शरणार्थी का दर्जा देने के लिए न्यायपालिका अलग श्रेणी नहीं बना सकती, क्योंकि यह संसद और कार्यपालिका के विधायी एवं नीतिगत क्षेत्र में प्रवेश होगा।

एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, सरकार ने शीर्ष न्यायालय अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने वालों को शरणार्थी का दर्जा दिलाने के लिए संसद और कार्यपालिका के विधायी और नीतिगत डोमेन में नहीं जा सकती। सरकार की तरफ से दाखिल हलफनामे में शीर्ष न्यायालय के कई फैसलों का जिक्र है। इसमें सरकार ने कहा है कि विदेशी अनुच्छेद 21 के तहत ही स्वतंत्रा के अधिकारी है और उन्हें भारत में बसने का अधिकार नहीं है।

लोकसभा चुनाव : पहले चरण की अधिसूचना जारी, 102 सीटों पर नामांकन प्रक्रिया शुरू; 19 अप्रैल को मतदान

नई दिल्ली (आरएनएस)। लोकसभा चुनावों का ऐलान चंद दिन पहले हो चुका है। अब पहले चरण के लिए अधिसूचना जारी कर दी गई है। पहले चरण में होने वाले 21 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की 102 सीटों पर नामांकन प्रक्रिया आज से शुरू हो गई है। लोकसभा चुनाव के पहले चरण में 102 सीटों के लिए नामांकन करने की आखिरी तारीख 27 मार्च है। हालांकि, बिहार के लिए नामांकन करने की अंतिम तारीख 28 मार्च रखी गई है। जबकि नामांकन वापस लेने की अंतिम तारीख 30 मार्च है। इसके अलावा बिहार में नामांकन वापस लेने के लिए दो अप्रैल की तारीख निर्धारित है।

हालांकि, एक त्योहार के कारण बिहार में पहले चरण में होने वाले लोकसभा सीटों के लिए नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख 28 मार्च रखी गई है। बिहार की 40 में से चार सीटों पर पहले चरण में मतदान होगा। दरअसल, पहले चरण में जिन 21 राज्यों की 102 सीटों पर चुनाव होगा। उनमें पुडुचेरी, मिजोरम, मेघालय, मध्य प्रदेश, मणिपुर, महाराष्ट्र, अरुणाचल प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, जम्मू-कश्मीर, लक्षद्वीप, राजस्थान, सिक्किम, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बंगाल, नगालैंड, अंडमान निकोबार शामिल हैं। लोकसभा चुनाव के पहले चरण में 21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 102 सीटों पर 19 अप्रैल को मतदान होगा। 18वीं लोकसभा के लिए चुनाव 19 अप्रैल को शुरू होंगे और उसके बाद 26 अप्रैल, 7 मई, 13 मई, 20 मई, 25 मई और 1 जून को सात अलग-अलग चरणों में चुनाव होंगे। जबकि वोटों की गिनती 4 जून को होगी।

बसपा सांसद दानिश अली कांग्रेस में शामिल

नई दिल्ली (आरएनएस)। बसपा के लोकसभा सदस्य दानिश अली समर्थकों के साथ बुधवार को कांग्रेस में शामिल हो गए। कांग्रेस के उत्तर प्रदेश के प्रभारी महासचिव अविनाश पांडे तथा पार्टी संचार विभाग के प्रभारी पवन खेड़ा ने यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन के दौरान उन्हें अंग वस्त्र पहनाकर कांग्रेस में शामिल कराया। उन्होंने कहा कि अमरोहा के सांसद दानिश अली के कांग्रेस में शामिल होने से देश में न्याय की लड़ाई को बल मिलेगा। उनका कहना था कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी की मणिपुर से शुरू हुई भारत जोड़ो न्याय यात्रा में उन्होंने आखिर तक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चिराग पासवान हाजीपुर सीट से एनडीए के प्रत्याशी के रूप में लड़ेंगे चुनाव

हाजीपुर (आरएनएस)। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने आगामी लोकसभा चुनाव की रणनीति बनाने के लिए दिल्ली में चिराग पासवान के नेतृत्व में संसदीय दल की बैठक की। चिराग पासवान ने कहा प्रत्याशियों के नामों पर चर्चा चल रही है, कुछ नामों का सुझाव बिहार संसदीय बोर्ड द्वारा आया है उस पर भी चर्चा हुई है...हाजीपुर सीट से एनडीए के प्रत्याशी के रूप में मैं खुद चुनाव लड़ूंगा। बिहार में एनडीए गठबंधन के बीच सीटों के बंटवारे को लेकर सहमति बन गई है। बिहार में भाजपा 17 और जेडीयू 16 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ेगी। वहीं, चिराग पासवान की पार्टी हाजीपुर सहित 5 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। जबकि, जीतन राम मांझी और उपेंद्र कुशवाहा के खाते में एक-एक सीट गई है। चिराग पासवान की पार्टी हाजीपुर, वैशाली, समस्तीपुर, खगड़िया और जमुई में चुनाव लड़ेगी। जीतन राम मांझी की पार्टी हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा गया और उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी आरएलएम काराकाट लोकसभा सीट पर चुनाव लड़ेगी।

राज्यपाल श्री हरिचंदन ने श्री शुक्ल एवं श्री चन्द्रवंशी को राज्य सूचना आयुक्त के पद की शपथ दिलाई

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचंदन ने आज यहां राजभवन के दरबार हाल में आयोजित समारोह में नवनियुक्त राज्य सूचना आयुक्त श्री नरेंद्र कुमार शुक्ल एवं श्री आलोक चन्द्रवंशी को राज्य सूचना आयुक्त पद की शपथ दिलाई। मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन ने शपथ प्रक्रिया पूर्ण कराई।

शपथ ग्रहण समारोह में राज्यपाल के सचिव श्री यशवंत कुमार, सामान्य प्रशासन विभाग के सचिव श्री डी.डी. सिंह, पूर्व मुख्य सूचना आयुक्त श्री एम. के. राउत, श्री सरजियस मिंज, पूर्व राज्य सूचना आयुक्त श्री एस. के. तिवारी, श्री ए.के. अग्रवाल, श्री मोहन पवार, श्री मनोज त्रिवेदी, श्री धनवेंद्र जायसवाल, राज्य सूचना आयोग के सचिव श्री गोपाल वर्मा सहित श्री आई.पी. मिश्रा, श्री राकेश चतुर्वेदी, डॉ. सुरेंद्र शुक्ल, श्री एल.एन. तिवारी, श्री अंजनी कुमार शुक्ल, श्री डी.सी. पाण्डेय, श्री अनुराग दीवान एवं नवनियुक्त राज्य सूचना आयुक्तों के परिजन और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

ज्ञात हो कि राज्य सूचना आयुक्त श्री नरेंद्र कुमार शुक्ल सेवानिवृत आई.ए.एस. अधिकारी है, एवं कलेक्टर बालोद एवं कमिश्नर टाउन एंड कंट्री प्लानिंग आदि पदों पर कार्यरत रहें। श्री आलोक चंद्रवंशी पूर्व जोन कमिश्नर रहे हैं।

भाजपा में शामिल हुईं तमिलिसाई सौंदरराजन

दो दिन पहले ही दिया था राज्यपाल पद से इस्तीफा

नई दिल्ली (आरएनएस)। तेलंगाना की राज्यपाल और पुडुचेरी की उपराज्यपाल पद से दो दिन पहले इस्तीफा देने वाली तमिलिसाई सौंदरराजन ने अब भाजपा का दामन थाम लिया है। तमिलिसाई सौंदरराजन ने अपना इस्तीफा भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को भेज दिया था।

उनके इस्तीफे को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने स्वीकार कर लिया था। ऐसे में झारखंड के राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन को तेलंगाना के राज्यपाल और पुडुचेरी के उपराज्यपाल का अतिरिक्त प्रभार दिया गया। डॉ. तमिलिसाई सौंदरराजन तेलंगाना की राज्यपाल और पुडुचेरी की उपराज्यपाल बनने से पहले भाजपा की तमिलनाडु प्रदेश अध्यक्ष थीं। वह कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कुमारी अनंतन की बेटी हैं, जो कि पूर्व सांसद हैं। 2019 में उन्होंने थूथुकुडी लोकसभा क्षेत्र से लोकसभा चुनाव लड़ा था और कनिमोझी करुणानिधि से हार गई थी। तमिलिसाई सौंदरराजन के इस्तीफे के साथ ही यह कयास लगाए जाने लगे थे कि वह जल्द किसी पार्टी में शामिल हो सकती हैं। ऐसे में उन्होंने आज भाजपा का दामन थाम लिया।

झारखंड के राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन ने तेलंगाना के राज्यपाल पद की शपथ ली

तेलंगाना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश आलोक अराधे ने राजभवन में पद की दिलाई शपथ

हैदराबाद (आरएनएस)। झारखंड के राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन ने बुधवार को तेलंगाना के राज्यपाल के रूप में शपथ ली। तेलंगाना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश आलोक अराधे ने राजभवन में आयोजित एक समारोह में राधाकृष्णन को पद की शपथ दिलाई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी, उनके कैबिनेट सहयोगी और वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्य सचिव शांति कुमारी ने राष्ट्रपति द्वारा जारी नियुक्ति वारंट पढ़ा, जिसमें झारखंड के राज्यपाल को अपने कर्तव्यों के अलावा तेलंगाना के राज्यपाल और पुडुचेरी के उपराज्यपाल के कार्यों का निर्वहन करने के लिए नियुक्त किया गया। मुख्य न्यायाधीश ने नियुक्ति का वारंट राज्यपाल को सौंप दिया।

तमिलिसाई सुंदरराजन के इस्तीफे के बाद राधाकृष्णन को तेलंगाना और पुदुचेरी का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। सुंदरराजन तमिलनाडु में लोकसभा चुनाव लड़ने की योजना बना रही हैं। राधाकृष्णन तेलंगाना के तीसरे राज्यपाल हैं। वह भाजपा उम्मीदवार के रूप में कोयंबटूर से दो बार सांसद रह चुके हैं। उन्होंने पिछले साल झारखंड के राज्यपाल का पदभार ग्रहण किया था।

दिलचस्प बात यह है कि 2014 में राज्य के गठन के बाद से तेलंगाना के सभी तीन राज्यपाल तमिलनाडु से हैं। ईएसएल नरसिम्हन और तमिलिसाई सुंदरराजन भी तमिलनाडु से थीं।

राजनीतिक दलों के मुफ्त 'उपहार' देने के वादे पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को सुनवाई के लिए एक जनहित याचिका को सूचीबद्ध करने पर सहमति व्यक्त की है। दरअसल, राजनीतिक दलों द्वारा चुनावों के दौरान मुफ्त उपहार का वादा करने की प्रथा के खिलाफ एक जनहित याचिका दी गई है।

बता दें, 19 अप्रैल से लोकसभा चुनाव शुरू होने वाले हैं। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने बुधवार को कहा कि यह जरूरी है और हम इस मामले पर कल सुनवाई जारी रखेंगे। जनहित याचिका दायर करने वाले अश्विनी उपाध्याय की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता विजय हंसारिया ने दलील दी कि याचिका पर लोकसभा चुनाव से पहले सुनवाई की आवश्यकता है। इस पर शीर्ष अदालत ने संज्ञान लिया। याचिका में राजनीतिक दलों के ऐसे फैसलों को संविधान के अनुच्छेद-14, 162, 266 (3) और 282 का उल्लंघन बताया गया है।

बार-बार सप्लीमेंट्री चार्जशीट करने पर ईडी को सुप्रीम कोर्ट की फटकार

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- ऐसी प्रैक्टिस करना गलत

नई दिल्ली (आरएनएस)। देश की शीर्ष अदालत ने बुधवार को प्रवर्तन निदेशालय द्वारा बार-बार सप्लीमेंट्री चार्जशीट करने को गलत बताते हुए कहा कि जांच एजेंसी इसलिए ऐसा कर रही है, ताकि मामले में ट्रायल शुरू न हो पाए और आरोपी को जमानत न मिल सके। कोर्ट ने ईडी से कहा कि इस तरह की प्रैक्टिस गलत है। ऐसा करके किसी आरोपी को अनिश्चितकाल के लिए जेल में नहीं रख सकते। सुप्रीम कोर्ट ने श्नष्ठ की तरफ से पेश हुए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू से कहा, डिफॉल्ट जमानत का पूरा उद्देश्य ही यह है कि आप (आरोपी को) तब तक गिरफ्तार न करो जब तक जांच पूरी न हो। आप (एक आरोपी को गिरफ्तार कर) यह नहीं कह सकते कि जांच पूरी होने तक मुकदमा शुरू नहीं होगा।

ऐसा नहीं हो सकता कि आप पूरक चार्जशीट दाखिल करते रहें और व्यक्ति (आरोपी) बिना मुकदमे के जेल में रहे। कोर्ट ने साथ ही कहा कि इस मामले में शख्स 18 महीने से जेल में है। इससे हमें परेशानी हो रही है। किसी मामले में हम इस मुद्दे को उठाएंगे। जब आप किसी आरोपी को गिरफ्तार करते हैं तो मुकदमा शुरू करना जरूरी होता है। अदालत ने दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की कैद का जिक्र किया, जिन्हें फरवरी 2023 में शराब नीति मामले में श्नष्ठ ने गिरफ्तार किया था।

कांग्रेस का हाथ हुआ मजबूत, पप्पू यादव की जन अधिकारी पार्टी का हुआ विलय

नई दिल्ली (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव से ठीक पहले बिहार की राजनीति में एक बड़ी हलचल हुई है। राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव ने अपनी जन अधिकार पार्टी का कांग्रेस में विलय कर दिया है। कांग्रेस हेडक्वार्टर में उन्होंने कांग्रेस मीडिया के अध्यक्ष पवन खेड़ा समेत अन्य नेताओं की मौजूदगी में इसकी घोषणा की। अब पप्पू यादव की एंट्री महागठबंधन में हो गई है। पप्पू यादव की पार्टी जन अधिकार पार्टी का कांग्रेस में विलय हो गया है। इससे पहले जन अधिकार पार्टी के नेता पप्पू यादव मंगलवार रात आरजेडी प्रमुख लालू यादव और तेजस्वी यादव से राबड़ी आवास में मुलाकात की थी और अपनी इच्छा बताई थी। खबर है कि लालू यादव ने पप्पू यादव को कहा था कि कांग्रेस के साथ चले जाइये, और पूर्णिया से चुनाव लड़िए। माना जा रहा है कि लालू यादव के कहने पर ही पप्पू यादव ने अपनी पार्टी का विलय कांग्रेस में करा दिया है। इस विलय पर कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने कहा कि जन अधिकार पार्टी और पप्पू यादव किसी भी परिचय के मोहताज नहीं हैं। पप्पू यादव एक कद्दावर नेता हैं। वे आज कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व, नीतियों और दिशा से प्रभावित होकर कांग्रेस में शामिल हो रहे हैं। वे 'जन अधिकार पार्टी' का भी कांग्रेस में विलय कर रहे हैं। ये विलय साधारण नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक है। बिहार के कांग्रेस प्रभारी मोहन प्रकाश ने पप्पू यादव की पार्टी का कांग्रेस में विलय कराया। पप्पू यादव के साथ उनके बेटे सार्थक यादव भी मौजूद रहे। सार्थक रंजन रणजी खेलते हैं।

कांग्रेस में शामिल होने के बाद पप्पू यादव ने कहा, बिहार में क्षेत्रीय पार्टी सत्ता में रही और नहीं भी। एक संघर्ष की बड़ी लंबी फेहरिस्त है, न्याय की और सेवा की। सेवा, न्याय और संघर्ष के लिए हमारी पार्टी जानी जाती है। मेरी विचारधारा कांग्रेस की विचारधारा के साथ रही। यह मजबूत ऊर्जा देती रही। हमारी राजनीति सेक्युलर है।

भारतीय सेना के टैंक होंगे पहले से अधिक मजबूत, उच्च शक्ति वाले स्वदेशी इंजन का सफल परीक्षण

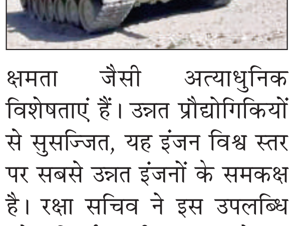

नई दिल्ली (आरएनएस)। सेना के प्रमुख युद्धक टैंकों के लिए देश में ही निर्मित 1500 हॉर्स पावर के इंजन का बुधवार को सफल परीक्षण किया गया। रक्षा सचिव गिरिधर अरमाने ने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड बीईएमएल के मैसूर परिसर में मुख्य युद्धक टैंकों के लिए पहले स्वदेशी 1500 हॉर्स पावर (एचपी) इंजन के पहले परीक्षण की अध्यक्षता की। यह उपलब्धि देश में एक नए युग की शुरुआत है। इससे रक्षा क्षमताओं, तकनीकी कौशल और रक्षा प्रौद्योगिकियों में आत्मनिर्भरता के प्रति देश की वचनबद्धता का पता चलता है। यह इंजन सैन्य प्रणोदन प्रणालियों में आदर्श बदलाव का प्रतीक है, जिसमें उच्च शक्ति-से-वजन अनुपात, ऊंचाई, शून्य से नीचे तापमान और रेगिस्तानी वातावरण सहित चरम स्थितियों में संचालन क्षमता जैसी अत्याधुनिक विशेषताएं हैं। उन्नत प्रौद्योगिकियों से सुसज्जित, यह इंजन विश्व स्तर पर सबसे उन्नत इंजनों के समकक्ष है। रक्षा सचिव ने इस उपलब्धि को परिवर्तनकारी क्षण बताते हुए कहा यह सशस्त्र बलों की क्षमताओं को बढ़ाएगा। बीईएमएल के मुख्य प्रबंध निदेशक शांतनु रॉय ने कहा कि यह उपलब्धि देश में रक्षा उत्पादन में एक प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में बीईएमएल की स्थिति को मजबूत करती है, जो इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में देश की जरूरतों को पूरा करने की उसकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

संक्षिप्त समाचार

देर रात कलेक्टर, एसपी एवं निगम आयुक्त निकले सड़को पर, एसएसटी टीम से ली जानकारी

रायपुर (विश्व परिवार)। मंगलवार देर रात रायपुर कलेक्टर डॉ गौरव कुमार सिंह, एस एस पी श्री संतोष सिंह और नगर निगम कमिश्नर श्री अबिनाश मिश्रा, देर रात राजधानी की सड़कों पर निकल स्थिति का जायजा लिया द्य साथ ही बेमौसम हुई बारिश से निर्मित शहर के स्थिति का हाल देखा। वे सरस्वती नगर थाना, कोटा, शकर नगर थाने में तैनात स्थेथिक टीम से बातचीत की, साथ ही उनसे जानकारी ली। पुलिस अधीक्षक श्री संतोष सिंह ने होली पर्व के साथ ही चुनाव पर्व के मद्देनज़र लॉ एंड ऑर्डर व्यवस्था का जायज़ा लिया। उन्होंने आदर्श आचार सहिता के परिपालन के और त्यौहार के लिए पुलिस अमले को आवश्यक निर्देश दिए।

लाइसेंसी शस्त्र धारियों को सात दिन के भीतर शस्त्र जमा करना अनिवार्य

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। चुनाव प्रक्रिया के दौरान अस्त्रों के दुरूपयोग होने से रोकने के लिए लाइसेंसी शस्त्र धारियों को सात दिन के भीतर शस्त्र जमा करना अनिवार्य है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री के एल चौहान ने आदेश जारी कर जिले में स्वतंत्र,निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण चुनाव सुनिश्चित करने के लिए जिले के सभी लाइसेंसी अस्त्र-शस्त्रधारियों को सात दिवस के भीतर अपने अस्त्र-शस्त्र जमा करने कहा है। जिले के सभी लाइसेंसी अस्त्र-शस्त्रधारी संबंधित पुलिस स्टेशन या शस्त्र जमा करने का लाइसेंस रखने वाले शस्त्र डीलर के पास जमा कर सकते हैं। जारी आदेश के अनुसार जो भी व्यक्ति अपने शस्त्र, डीलर के पास जमा करेंगे इसकी सूचना संबंधित थाने में प्रदान करेंगे और शस्त्र डीलर इसकी जानकारी संबंधित थाने एवं जिला दंडाधिकारी कार्यालय को उपलब्ध कराएंगे। यह आदेश जिले के निवासियों तथा बाहर से आए लाइसेंसधारियों पर भी लागू होगा। गौरतलब है कि बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों के सुरक्षा गार्ड, संवैधानिक पदों पर आसीन व्यक्ति, राष्ट्रीय राइफल एवं जिला राइफल संघ, औद्योगिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं, महत्वपूर्ण शासकीय संस्थाओं के सुरक्षा के लिए तैनात सुरक्षा गार्ड्स को अपने हथियार जमा करने की बाध्यता नहीं होगी। लेकिन जिन लाइसेंसधारी को इस आदेश से मुक्त रखा गया है उन्हें अपने अस्त्र-शस्त्र की सूचना संबंधित थाने में अवश्य देनी होगी। थाना प्रभारी की अनुमति के बिना अपने अस्त्र-शस्त्र परिसर की सीमा क्षेत्र से बाहर नहीं ले जा सकेंगे। निर्वाचन प्रक्रिया के समाप्ति तक जिले की सीमा के भीतर रहने वाले सभी लाइसेंसियों के शस्त्र लाइसेंस निलंबित किए गए हैं तथा आचार संहिता समाप्त होने के बाद उनके अस्त्र-शस्त्र वापस कर दिए जाएंगे।

कलेक्टर ने शत-प्रतिशत मतदान करने 20 हजार नागरिकों को छत्तीसगढ़ी में दिलाई शपथ

कलेक्टर स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम विद्यालय छुरिया में आयोजित मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में हुए शामिल

राजनांदगांव 20 मार्च (आरएनएस)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी संजय अग्रवाल एवं जिला पंचायत सीईओ सुश्री सुरूचि सिंह आज स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम विद्यालय छुरिया में लोकसभा निर्वाचन 2024 में शत-प्रतिशत मतदान के लक्ष्य के लिए आयोजित मतदाता जागरूकता स्वीप कार्यक्रम में शामिल हुए। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कार्यक्रम में उपस्थित स्वसहायता समूह की महिलाएं, मितानीन एवं बीएलओ, शिक्षक एवं वर्चुअल माध्यम से जुड़े 20 हजार नागरिकों को शत-प्रतिशत मतदान करने के लिए छत्तीसगढ़ी में शपथ दिलाई। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने लोकतंत्र में मतदान के महत्व के संबंध में जानकारी दी। मतदाता जागरूकता कार्यक्रम अंतर्गत मानव श्रृंखला एवं रंगोली के माध्यम से शत-प्रतिशत मतदान करने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम स्थल में लगभग 1 हजार मतदाताओं के साथ-साथ वर्चुअल माध्यम से छुरिया जनपद पंचायत अंतर्गत शामिल 118 ग्राम पंचायतों से लगभग 20 हजार से अधिक मतदाताओं द्वारा शत-प्रतिशत मतदान करने का संकल्प लिया गया। इस दौरान एसडीएम डोंगरगांव मनोज कुमार, सीईओ जनपद पंचायत छुरिया नारायण प्रसाद बंजारा, तहसीलदार विजय कोठारी, मुख्य नगर पालिका अधिकारी नगर पंचायत छुरिया सचिन गुप्ता, विकासखंड शिक्षा अधिकारी प्रशांत चितवरकर, परियोजना अधिकारी कमलावती मरकाम, महिला बाल विकास विभाग छुरिया एवं अन्य विभागीय अधिकारी-कर्मचारी कार्यक्रम में शामिल हुए।

लोकसभा आम निर्वाचन-2024 : संपत्ति विरूपण अधिनियम के तहत राज्य में अब तक हटाए गए 3.15 लाख बैनर, पोस्टर और वॉल राइटिंग

सार्वजनिक संपत्तियों से 1.99 लाख बैनर, पोस्टर व वॉल राइटिंग तथा निजी संपत्तियों से 1.16 लाख हटाए गए

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य में लोकसभा आम निर्वाचन के लिए आदर्श आचार संहिता के प्रभावी होने के बाद से संपत्ति विरूपण अधिनियम के तहत सार्वजनिक और निजी संपत्तियों से वॉल राइटिंग, पोस्टर और बैनर हटाने की कार्यवाही द्रुत गति से जारी है। राज्य में इन दोनों तरह की संपत्तियों से 20 मार्च तक कुल तीन लाख 14 हजार 674 प्रचार सामग्रियां हटाई गई हैं। सार्वजनिक संपत्तियों से संबंधित एक लाख 99 हजार 154 और निजी संपत्तियों से संबंधित एक लाख 15 हजार 520 प्रकरणों पर कार्यवाही की गई है।

राज्य की मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती रीना बाबासाहेब कंगाले ने बताया कि सभी कलेक्टरों और जिला निर्वाचन अधिकारियों द्वारा संपत्ति विरूपण अधिनियम के तहत प्रदेश भर में कुल तीन लाख 27 हजार 210 प्रकरण चिन्हांकित किए गए हैं। इनमें सार्वजनिक संपत्ति से संबंधित दो लाख नौ हजार 45 और निजी संपत्ति से संबंधित एक लाख 18 हजार 165 प्रकरण शामिल हैं। सभी जिला प्रशासन द्वारा इन्हें हटाने की कार्यवाही तेजी से जारी है। अधिनियम के अंतर्गत दुर्ग जिले में सरकारी और निजी संपत्तियों से बैनर, पोस्टर, वॉल राइटिंग इत्यादि हटाने की 41 हजार 788, सुकमा में 2048, गरियाबंद में 5784, बेमेतरा में 8928, खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई में 2819, बालोद में 16 हजार 973, जशपुर में 4425, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में 2931 और सरगुजा में 9876 कार्यवाही की गई हैं।

संपत्ति विरूपण अधिनियम के तहत बलौदाबाजार-भाटापारा जिले में कुल 8935, रायगढ़ में 4557, सूरजपुर में 3942, कांकेर में 4591, बिलासपुर में 27 हजार 881, दंतेवाड़ा में 1383, महासमुंद में 23 हजार 137, जांजगीर-चांपा में 8531, बस्तर में 823, कोरबा में 19 हजार 343, कोण्डागांव में 12 हजार 339, कबीरधाम में 12 हजार 700, बीजापुर में 1886, सारंगढ़-बिलाईगढ़ में 5774, राजनांदगांव में 16 हजार 927, बलरामपुर-रामानुजगंज में 5917, गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही में 4109, कोरिया में 2816, नारायणपुर में 191, मुंगेली में 4542, सक्ती में 6917, धमतरी में 8735 और रायपुर में 33 हजार 126 संपत्तियों से वॉल राइटिंग, पोस्टर और बैनर हटाने की कार्यवाही 20 मार्च तक की गई है।

लोकसभा निर्वाचन 2024 : सेक्टर अधिकारियों की हुई प्रशिक्षण कार्यशाला

सेक्टर अधिकारी मतदान दल और आरओ के बीच कड़ी : कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह

रायपुर (विश्व परिवार)। लोकसभा निर्वाचन 2024 के लिए आज कलेक्ट्रेट परिसर स्थित रेडक्रॉस सभाकक्ष में सेक्टर और सेक्टर पुलिस अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में शामिल हुए कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह ने कहा कि सेक्टर अधिकारी गुणवत्तापूर्ण कार्य करें। सेक्टर अधिकारी मतदान दल और रिटर्निंग अधिकारी के बीच कड़ी होते है। निर्वाचन सफलतापूर्वक संपन्न होने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि सेक्टर पुलिस अधिकारी कानून व्यवस्था, कहीं पर किसी प्रकार का कोई विवाद न हो, इसका विशेष ध्यान रखेंगे। लोकसभा निर्वाचन गर्मी के मौसम में हहोना है, ऐसे में सभी सेक्टर अधिकारी समय पूर्व बूथ का निरीक्षण करें और मूलभूत सुविधा व्यवस्थित करें। स्कूल, पंचायत भवन, आंगनबाड़ी में जाएं और वहां और किसी भी प्रकार का आचार संहिता का उल्लंघन न हो रहा हो, इसका विशेष ध्यान रखें। बूथ में वेबकास्टिंग के कार्य को बेहतर तरीके से कराएं और सम्पूर्ण मतदान के बाद ईवीएम मशीन सुरक्षित तरीके से स्ट्रांग रूम तक पहुंचाएं। सेजबहार के शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज में पर्याप्त सुविधाएं रखी जाएगी।

एसपी श्री संतोष सिंह ने कहा कि अधिकारी व कर्मचारी गंभीरता के साथ ड्यूटी करें। शांतिपूर्ण और निष्पक्षता के साथ कार्य करें। निर्वाचन कार्य के द्वारा आचार-व्यवहार बनाएं रखें। मतदान के पूर्व भी किसी भी तरह की अव्यवस्था नहीं होनी चाहिए। मास्टर ट्रेनर श्री अजीत हंडेत ने सेक्टर अधिकारियों को बताया कि मतदान केंद्र में 100 मीटर तक प्रचार-प्रसार न हो, इसका चिन्हाकन करना होगा। केंद्र में लाइट और पंखे की व्यवस्था होनी चाहिए। साथ ही संवेदनशील बूथों की पहचान करेंगे। पुलिस सेक्टर अधिकारी वेलरेनेबल स्थान को चिन्हाकित करेंगे और मतदान में आने वाली बाधा को दूर करने में सहयोग करेंगे। मास्टर ट्रेनर श्री अजीत हुंदैत ने भी प्रशिक्षण दिया। गौरतलब है की रायपुर लोकसभा निर्वाचन 2024 के लिए विधानसभा क्रमांक 45, 47, 48 के सेक्टर अधिकारियों को प्रथम पाली में प्रशिक्षण दिया गया।

कलेक्टर के मार्गदर्शन पर अवैध शराब पर कार्यवाही, 3 प्रकरण में 4 आरोपी गिरफ्तार

रायपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री गौरव सिंह के मार्गदर्शन व उपायुक्त श्री विकास गोस्वामी के निर्देश में जिले में आबकारी विभाग अवैध शराब बिक्री पर कार्यवाही कर रही है। 19 मार्च को गश्त के दौरान आबकारी टीम वृत्त तिल्दा, वृत्त खरोरा ने संयुक्त टीम कार्यवाही की। तीन अलग-अलग प्रकरण में 4 आरोपियों की गिरफ्तारी की गई है, जिन पर धारा 34(2)-3 के तहत अपराध दर्ज किया गया है। आरोपियों से 45.540 बल्क लीटर देशी मदिरा मसाला जब्त किया गया है, जिसकी कीमत 27830 रूपये है। साथ ही दो मोटर साइकिल बरामद किया गया है। कार्यवाही के दौरान दिलीप कुमार प्रजापति, आबकारी उप निरीक्षक वृत्त तिल्दा तथा प्रीति कुशवाहा आबकारी उप निरीक्षक वृत्त खरोरा और आबकारी मुख्य आरक्षक दिगंबर भुरा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

ऑनलाईन सट्टा पर सख्त कार्यवाही करने आईजी ने दिये निर्देश

रायपुर (आरएनएस)। पुलिस महानिरीक्षक, रायपुर रेंज रायपुर अमरेश कुमार मिश्रा ने बुधवार को जिला रायपुर के समस्त राजपत्रित अधिकारियों एवं थाना प्रभारियों की बैठक ली। रायपुर जिले के शहरी क्षेत्रों, कस्बों में अव्यवस्था एवं अपराधों पर पूर्ण नियंत्रण हेतु अर्बन डिसआर्डर मिटिगेशन प्लान के तहत क्षेत्रों को चिन्हांकित करते हुये कार्यवाही की जावे ताकि जनता में सुरक्षा की भावना विकसित हो। इसी तारतम्य में सभी राजपत्रित अधिकारियों को अपने थाना क्षेत्रान्तर्गत चाकूबाजी, अड्डेबाजी, नशाखोरी आदि में सम्मिलित व्यक्तियों की पहचान कर कठोर कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये।

आगामी लोकसभा निर्वाचन 2024 को दृष्टिगत रखते हुये शांतिपूर्ण चुनाव करवाने एवं समस्त व्हीआईपी मूवमेंट में सजगतापूर्वक ड्यिूटी करने हेतु निर्देशित किया गया। अपराधों की विवेचना, संमंस-वारंट की तामिली, जुआ-सट्टा या नशे का सामान, कबाड़ी एवं अन्य अवैध गतिविधियों को रोकने हेतु कार्यवाही बढ़ाई जावे तथा डायल 112 या अन्य माध्यमों से प्राप्त आसूचनाओं को संकलित कर इनका उपयोग अपराधों के रोकथाम हेतु किया जावे। शांति पूर्वक होली के त्योहार मनाने हेतु शांति समिति की बैठक लेकर फ्लेग मार्च निकालने तथा क्षेत्र में तीन सवारी व नशा कर वाहन चलाने वालों के विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये। राजपत्रित अधिकारियों को अभियोजन अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर अपराधिक रिकार्ड का समुचित उपयोग करते हुये अपराधियों का बेल केन्सिलेशन की प्रक्रिया अपनाने के निर्देश दिये गये। आने वाले समय में आईपीएल के आयोजन को देखते हुये ऑनलाइन सट्टा पर सख्त कार्यवाही के निर्देश दिये गये।

विधानसभा स्तरीय बैठक के बाद अब आज से भाजपा का विधानसभा स्तर पर वृहद कार्यकर्ता सम्मेलन

लोकसभा चुनाव के लिए शीर्ष नेता फूकेंगे चुनावी बिगुल

दुर्ग (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव में रिकॉर्ड मतों से सफलता प्राप्त करने भाजपा चुनाव प्रचार में काफी आगे निकल चुकी है। विधानसभा स्तरीय बैठकों के दौर समाप्त होते ही भाजपा ने अब विधानसभा स्तर पर वृहद कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन करेंगी जिसके तहत कल 21 मार्च से 23 मार्च तक दुर्ग लोकसभा के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में विधानसभा स्तर पर वृहद कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित होगा।

कल 21 मार्च को पाटन विधानसभा में जनपद पंचायत मैदान के सामने सुबह 11:00 बजे, दुर्ग ग्रामीण विधानसभा में सेलिब्रेशन पैलेस धनोरा दोपहर 3 बजे आयोजित है। जबकि शुक्रवार 22 मार्च को भिलाई नगर विधानसभा श्रीराम वाटिका जोन एक पोस्ट ऑफिस के पास खुर्सीपार तथा शाम 5 बजे दुर्ग शहर विधानसभा मंगलम तथा 23 मार्च को वैशाली नगर विधानसभा कृष्णा गार्डन शांति नगर रोड वैशाली नगर में दोपहर 3 बजे आयोजित किया जाएगा। इस विधानसभा स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन में दुर्ग लोकसभा प्रत्याशी विजय बघेल के अलावा भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश के शीर्ष नेता भी उपस्थित होकर कार्यकर्ताओं को रिचार्ज करेंगे।

केंद्र में तीसरी बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बनाने तैयारी की मामले में भारतीय जनता पार्टी चुनाव अभियान में काफी आगे निकल चुकी हैं और पखवाड़े भर पहले लोकसभा प्रत्याशी के घोषणा बाद से लगातार संगठन द्वारा जिले से लेकर मंडलों तक बैठको का दौर सम्पन्न हो चुका है और कार्यकर्ता अब मोदी सरकार की योजनाओं से लाभान्वित हुए लाभार्थियों से संपर्क करने विशेष अभियान चला रही है।

वही दूसरी तरफ प्रत्याशी विजय बघेल अपने संसदीय क्षेत्र के सभी 9 विधानसभा में कार्यकर्ताओ से भेट मुलाकात पूरी कर चुके है और अब कल 21 मार्च से कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन करके सार्वजनिक तौर पर चुनावी बिगुल फुकेंगे।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
विद्युत कार्य हेतु ई-निविदा सूचना

(1) ई-निविदा सं.: सीनि.डीईई-जी-आर-ओटीपी-23-24-32, दिनांक: 15.03.2024. कार्य: दुर्ग स्थित प्राथमिक ट्रेनों (आईसीएफ और एलएचबी) के एसी कोचों में एक वर्ष के लिए एसी कोच इलेक्ट्रिकल अटेंडेंट (Attendant) (एसीईए) की आउटसोर्सिंग । निविदा मूल्य: ₹ 1,09,32,329.00. बयाना जमा राशि: ₹ 2,04,700.00.

(2) ई-निविदा सं.: सीनि.डीईई-जी-आर-ओटीपी-23-24-33, दिनांक: 15.03.2024. कार्य: रायपुर मंडल में विद्युत सामान्य सेवाओं के 33/11 केवी उपकेंद्र पर स्काडा प्रणाली का प्रावधान । निविदा मूल्य: ₹ 46,00,000.00. बयाना जमा राशि: ₹ 92,000.00.

निविदा जमा करने की तिथि: 30.04.2024 को 11.30 बजे तक।

विस्तृत जानकारी/निविदा दस्तावेज का विक्रय, पात्रता का मापदंड तथा अन्य विस्तृत विवरण हेतु कृपया वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता (सामान्य), दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर के कार्यालय में संपर्क करें अथवा निविदा कागजात जो हमारी वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है, उससे डाउनलोड कर/देख सकते है। इस निविदा के विरूद्ध मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किए जायेंगे। यदि मैनुअल प्रस्ताव प्राप्त हुआ तो उसे खारिज कर दिया जाएगा।

वरि.मंडल विद्युत अभियंता(सामान्य)/
पीआर/आर/सीनि.डीईई(सा.)/आईपी/278 रायपुर

South East Central Railway @secrail

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **कबीर नगर कॉलोनी,** रायपुर में निर्मित **EWS** भवन योजना के अंतर्गत दुकानों/ भूखण्डों/ भवनों में से भूखण्ड/भवन क्रमांक **EWS-202 श्रीमती वेलिवेला शिर्षा राव पति श्री वेलीवेला नागा श्री निवास** को भाड़ाक्रय/ पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक 21/04/2015 को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के **विक्रय** हेतु दिनांक 24/02/2024 को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्री राज बहोर कुशवाहा पिता श्री जगदीश प्रसाद कुशवाहा** के नाम से **विक्रय करने** के लिए विक्रय अनुमति की मांग की है।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /10283/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 20-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10283
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 69 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR568C00456** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DINESH GOYAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM PRATAP GOYAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. ANUJA KELKAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ADITYA KELKAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

AUCTION NOTICE **IndusInd Bank Ltd.**

Bids are invited to Sale below mentioned vehicle as on where is basis, for inspection interested person may contact to respective person on given contact no as below. Through the present notice we hereby once again call upon the borrower & Co-borrower concerned for clear their dues on or before **28.03.2024,** else we shall be constrained to sell off the vehicle and loss if any shall be recovered from them.

Branch Name	Deal No.	Customer/Co-borrower Name	Vehicle Model	Reg. No.	Chassis No.	Engine No.	Yard Name	Contact Person
RAJNANDGON	FRG002 10G	MR. S HARBHAJAN SINGH	Mahindra Supro Profittruck Mini Lx BS 6	CG08AU 1730	MA1FN2XURN 6B55118	XUN6B14331	GAGAN YARD	HEMANT YADAV 9713500181

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **रामकृष्ण परमहंस नगर कोटा कॉलोनी** रायपुर में निर्मित सी टाईप भवन योजना के अंतर्गत, दुकानों/ भूखण्डों/ भवनों में से भूखण्ड/ भवन क्रमांक **बी-116 श्री जमील हुसैन पिता स्व. श्री हाजी जकीउद्दीन** को भाड़ाक्रय/ पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक **23.11.2015** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु दिनांक **12.03.2024** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन/ भूखण्ड **श्रीमती सुनीता शर्मा पति श्री ध्रुव कुमार शर्मा** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की है।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./10268/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 20-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10268
वार्ड का नाम- 14- रमण मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 14 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR221B0023B** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SHRICHAND SACHDEV** पिता/पति, श्री/श्रीमती **TEUMAL SACHDEV** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री संजय सचदेव** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता स्व. श्री टेऊमल सचदेव** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के.डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./10269/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 20-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10269
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737D0102B** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **ANIL KUMAR FATWANI, NANDLAL FATWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JHAMAN DAS FATWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्रीमती मीनाक्षी गुप्ता - पति श्री अजय गुप्ता** पिता/पति, श्री/श्रीमती **2. श्रीमती ममता गुप्ता - पति श्री विजय गुप्ता** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के.डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./9192/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 25-02-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 9192
वार्ड का नाम- 45 - स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 45 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR739E0450A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **NEELAM GOWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAVI KUMAR GOWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **माधुरी साहू** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति मनीष साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./9191/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 17-02-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 9191
वार्ड का नाम- 45 - स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 45 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR739E00450** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAVI GOVANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SURESH KUMAR GOVANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती माधुरी साहू** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति मनीष साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (4)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /10232/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 20-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10232
वार्ड का नाम- 2 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 2 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801T00018** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **GURDEEP SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BIKKAR SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **CHANDRASHEKHAR SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KANHAIYA SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./9875/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 20-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 9875
वार्ड का नाम-50- रानी दुर्गावती

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445Q00236** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VIMAL PRAKASH AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती ...... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ARUNA AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O LT. BIMAL PRAKASH AGRAWAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ ..../ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./9962/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 20-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 9962
वार्ड का नाम-50- रानी दुर्गावती

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445D00223** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **LOVELY MOTWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **VISHAL KUMAR MOTWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. DARSHAN KAUR PANNU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O SHRI KARNAIL SINGH PANNU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

लोकसभा निर्वाचन 2024 : स्थैतिक दलों और उड़नदस्ते में शामिल अधिकारी-कर्मचारियों का प्रशिक्षण

प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि प्रत्येक दल में एक मजिस्ट्रेट और तीन या चार पुलिस कर्मी होंगे

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत के निर्देशन में जिला पंचायत सभाकक्ष में लोकसभा निर्वाचन 2024 के लिए गठित स्थैतिक जांच दलों में शामिल अधिकारी, कर्मचारियों का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। मास्टर ट्रेनर डॉ. एम.एम.जोशी ने अपर कलेक्टर श्रीकांत वर्मा की उपस्थिति में स्थैतिक निगरानी दल के अधिकारी एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि प्रत्येक दल में एक मजिस्ट्रेट और तीन या चार पुलिस कर्मी होंगे जो चेक पोस्ट पर कार्यरत होंगे। यह दल प्रमुख मुख्यमार्गीय सड़कों, जिले की सीमाओं पर चेक पोस्ट स्थापित करेगा और अपने क्षेत्र में अवैध शराब, रिश्वत की वस्तुओं या भारी मात्रा में नकदी, हथियार एवं गोला-बारूद के लाने एवं ले जाने तथा असामाजिक तत्वों की आवाजाही पर भी नजर रखेगा। जांच किये जाने की संपूर्ण प्रक्रिया की वीडियोग्राफी की जाएगी। निर्धारित फार्मेट में दैनिक कार्यकलाप रिपोर्ट भेजेगा और उसकी प्रति आरओ, डीईओ और व्यय प्रेक्षक, सामान्य प्रेक्षक एवं पुलिस मुख्यालय के नोडल अधिकारी जिले की ऐसी सभी रिपोर्टों का संकलन करेंगे और उसी दिन फैक्स/ई मेल के जरिए आयोग को भेजा जायेगा। इसके साथ ही उसकी एक प्रति राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी को भी भेजी जायेगी। स्थैतिक एवं उड़नदस्ता दल सी-विजिल व ईएसएमएस ऐप में सक्रिय रहेंगे। उसके आधार पर आगे की कार्यवाही करेंगे। स्थैतिक निगरानी दलों द्वारा संपूर्ण जांच प्रक्रिया कार्यपालन मजिस्ट्रेट की उपस्थिति में की जाएगी और उसकी वीडियोग्राफी की जाएगी। मजिस्ट्रेट के द्वारा ईएसएमएस ऐप में प्रविष्टि की जाएगी तथा जानकारी संबंधित नोडल अधिकारी को प्राप्त होगी। संबंधित विभाग के नोडल अधिकारी द्वारा नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। प्रशिक्षण के दौरान सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देश के अनुसार कार्यवाही करने हेतु निर्देश दिए गए।

अवैध शराब विक्रय के विरुद्ध लगातार कार्यवाही जारी

महासमुंद(विश्व परिवार)। अवैध शराब विक्रय के विरुद्ध कार्यवाही के दौरान ग्राम जिवतरा थाना महासमुंद में जिवतरा डेरा नदी किनारे अज्ञात आरोपी के कब्जे से लावारिस स्थिति में 20 लीटर हाथ भट्टी महुआ शराब एवं 50 किलोग्राम महुआ लाहन जप्त कर अज्ञात आरोपी के विरुद्ध धारा 34(1)(क), 34(2), 34(1)(च) 59(क) के तहत कार्यवाही की गई। मौके पर आरोपी की तलाश करने पर एवं गांव वालों से पूछताछ पर उनका कोई पता नहीं चला। प्रकरण को विवेचना में लिया गया, पतासाजी जारी है। उक्त कार्रवाई आबकारी वृत्त महासमुंद शहर प्रभारी आबकारी उपनिरीक्षक श्री मुकेश कुमार वर्मा के नेतृत्व में की गई। उक्त कार्यवाही के दौरान आबकारी उप निरीक्षक वृत्त बागबाहरा विकास बढेंद्र, आबकारी उप निरीक्षक वृत्त महासमुंद आन्तरिक हृदय कुमार तिरपुडे, आरक्षक संजय तिवारी तथा आबकारी स्टाफ महासमुंद शहर/ग्रामीण/ आंतरिक/ बागबाहरा उपस्थित थे।

अभियान के तहत की गई रेलवे स्टेशन बस स्टेशन, होटल लॉज, ढाबा की जांच

पुलिस ने बाहर से आकर डेरा लगा कर, बिना मुसाफिरी दर्ज करा रहने वाले संदिग्ध व्यक्तियो को किया गया चेक

पुलिस के द्वारा निष्पक्ष एवं भय मुक्त वातावरण में आम चुनाव कराने का दिया संदेश

कोरबा(विश्व परिवार)। आम चुनाव 2024 की घोषणा के साथ ही जिले में आदर्श आचार संहिता प्रभावशील हो गई है। इसके साथ ही पुलिस अपनी तैयारियों में जुट गई है। पुलिस पर चुनाव में कानून व्यवस्था बनाए रखने की बड़ी जिम्मेदारी होती है। पुलिस अधीक्षक कोरबा सिद्धार्थ तिवारी द्वारा आगामी लोक सभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए कोरू में बाहर से आकर डेरा लगाने वाले, होटल लॉज, रेल्वे स्टेशन, बस स्टैण्ड मे संदिग्ध व्यक्तियों चेकिंग करने निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक यू.बी.एस. चौहान एवं नेहा वर्मा के पर्यवेक्षण में जिले के सभी राजपत्रित अधिकारी थाना चौकी के द्वारा मुख्य रेल्वे स्टेशन कोरबा, बस स्टैण्ड एवं शहर के आसपास बाहर से आकर डेरा लगाने वाले, बिना मुसाफिरी दर्ज कराए तथा संदिग्ध व्यक्तियो की चेकिंग की गई। डेरा लगाने वालों, बिना मुसाफिर दर्ज कराए लोगो तथा होटल लॉज में बाहर से आकर रूके लोगो को भी चेक किया गया। अभियान के दौरान 47 व्यक्तियों के मुसाफिर दर्ज कर 44 एसएस रौल संबंधित थानों को सत्यापन हेतु भेजे गए हैं । पुलिस टीम के द्वारा सजग कोरबा अभियान के तहत आम जनता से अपील करती है कि बिना पहचान पत्र/मोबाईल नंबर के किसी भी बाहरी व्यक्ति को कमरा किराए पर ना दे। बाहरी व्यक्तियो को मकान व भवन किराए पर देने के बाद दस्तावेज समेत जानकारी संबंधित थाना में जमा करा देवें। आने वाले दिनो में पुलिस द्वारा अभियान चलाकर किराएदारो की सघन जांच की जाएगी। मकान मालिक द्वारा लापरवाही बरतने पर उनके विरूद्ध भी सख्त कार्यवाही की जावेगी। जिलेवासियों को सुरक्षा का बोध कराने और आदर्श आचार संहिता का सख्ती से पालन सुनिश्चित कराने जिले के सभी थाना क्षेत्र अंतर्गत पुलिस ने चेकिंग अभियान निकाला। चुनाव को निष्पक्ष और पारदर्शिता के साथ संपन्न कराने के लिए पुलिस पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

पहाड़ी कोरवा ने शिक्षक पर लगाया 10.53 लाख ठगने का आरोप

कोरबा(विश्व परिवार)। माध्यमिक शाला देवपहरी में भृत्य की नौकरी करने वाले एक पहाड़ी कोरवा ने शिक्षक पर 10 लाख 53 हजार 500 रूपये ठगने का आरोप लगाया है। उसका कहना है कि शिक्षक ने नौकरी बचाने के नाम पर उससे राशि ली, अब और राशि की मांग कर रहा है। कलेक्टर को लिखे पत्र में पहाड़ी कोरवा सुंदर साय ने बताया कि वह माध्यमिक शाला देवपहरी मे भृत्य का काम करता है। बीच- बीच में स्कूल नहीं गया। इसकी वजह से शिक्षक करम ने शिकायत करने की बात कही। तब सुंदर ने नौकरी बचाने की गुहार करम से लगाई। इस पर उसने राशि देने की बात कही। सुंदर ने बताया कि वह बैंक ले गया और 4.50 लाख रूपये लोन निकलवाया। उसमें 2.10 लाख रुपये देकर शेष राशि 2.40 लाख वरिष्ठ साहब को देने के नाम पर रख लिया। इसके बाद पुन: करम ने कहा कि बड़े साहब पैसा के लिए बोल रहे हैं। तब दो लाख 10 हजार रूपये खर्च होने की जानकारी देने पर करम ने कहा कि अभी मै साहब के लिए अपना पैसा दे देता हूं, लेकिन बाद में पूरा पैसा ब्याज समेत वापस करना। इसके बाद करम गुरू पैसा मांगने लगा। साथ ही कहा है कि पैसा नहीं है तो फिर से लोन निकलवा देता हूं। इसके बाद उन्होने 25 मार्च 2021 को 6.50 लाख रूपये लोन निकलवाया। इसमें 1.60 लाख रूपये दिया और शेष चार कोरे चेक में हस्ताक्षर कराकर रख लिया। सुंदर ने बताया कि जब पेमेंट लेने बैंक गया, तब उसे पता चला कि खाता में राशि नही है।

परीक्षा में पास करने प्रोफेसर को दी धमकी, दो विद्यार्थी गिरफ्तार

कोरबा(विश्व परिवार)। परीक्षा में पास कराने के नाम पर प्रोफेसर के साथ गाली गलौच करने के बाद जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने मामला कायम कर दो युवक को गिरफ्तार कर लिया। जानकारी के अनुसार एसईसीएल सुभाष ब्लाक निवासी महेश्वर भारती मानिकपुर चैकी क्षेत्र अंतर्गत संचालित ओरिएंटल मेडिकल कालेज में प्रोफेसर के पद पर पदस्थ हैं। प्रोफेसर ने बताया कि कुछ युवकों ने पहले फोन किया और उससे एडमिशन लेने संबंधित बातचीत की। इस पर उन्होंने, कालेज जाकर इस संबंध में जानकारी लेने की बात कही। इसके बाद भी युवक फोन कर प्रोफेसर भारती को लगातार परेशान कर रहे थे। प्रोफेसर इससे तंग आ कर युवकों से मिलने पहुंचा। प्रोफेसर अपने पत्नी और बच्चों के साथ कार से मिलने गया। इस दौरान युवकों से मिलने पहुंच गए। तब युवकों ने उनके साथ गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी देने लगे। घटना देख रही कार में बैठी प्रोफेसर की पत्नी नीचे उतर कर मोबाइल में वीडियो बनाने लगी, तब सभी युवक मौके से भाग खड़े हुए। बाद में प्रोफेसर ने घटना की रिपोर्ट मानिकपुर पुलिस चैकी में दर्ज कराई। मानिकपुर चैकी प्रभारी प्रेमचंद साहू ने बताया कि प्रोफेसर ने शिकायत की थी कि कुछ युवकों द्वारा परीक्षा में पास करने को लेकर धमकी दी जा रही। जांच के बाद कोरबी निवासी अविनाश राठौर और हितेश कुमार को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ कार्रवाई की गई।

बरातियों से मारपीट व वाहन में तोड़फोड़ करने वाले चार आरोपी जेल दाखिल

कोरबा(विश्व परिवार)। दूल्हे के भाई व बारातियों के साथ गाली- गलौच कर डंडा व बेल्ट से मारपीट की गई। इसके साथ ही बारातियों का वाहन को क्षतिग्रस्त कर दिया गया। मामले की शिकायत पर पुलिस ने चार आरोपित को गिरफ्तार किया है। घटना उरगा थाना अंतर्गत ग्राम जमनीपाली में हुई, पर रिपोर्ट सिविल लाइन थाना रामपुर पुलिस में दर्ज कराई गई। बताया जा रहा है कि ग्राम दादरखुर्द मानिकपुर निवासी संतोष कुमार पटेल के बड़े पुत्र दिनेश कुमार की शादी ग्राम जमनीपाली थाना उरगा में तय हुई थी। सात मार्च को संतोष कुमार अपने परिवार के सदस्यों व रिश्तेदार समेत अन्य लोगों के साथ बरात लेकर जमनीपाली गए थे। जहां सभी नाच कूद रहे थे, तभी रात 8.30 बजे के लोकनाथ पटेल,किशन, लकेश्वर पटेल, कमल सिंह व अन्य लोग लोग पुरानी रंजिश व बात को लेकर मां- बहन की गाली गलौच करते हुए जान सहित मारने की धमकी दिए और एक राय होकर हाथ मुक्का, बेल्ट व डंडा से दूल्हे के भाई सुरेश कुमार पटेल व बारातियों के साथ मारपीट किए। घटना में छोट भाई हरीश पटेल, दादा संतराम पटेल दोनों के सिर में एवं देवेन्द्र के सीने के पास चोट लगी। इसके साथ ही लोकनाथ, किशन, लकेश्वर पटेल, कमल सिंह समेत अन्य लोगों ने बारात में गए वाहनों में तोड़फोड़ किए। घटना की रिपोर्ट दूल्हे के छोटे भाई सुरेश कुमार ने पुलिस के समक्ष दर्ज कराया। इस पर पुलिस ने धारा 294, 506, 323, 427, 34 कायम कर विवेचना में लिया। इस दौरान पुलिस ने सरपंच, कोटवार समेत अन्य लोगों का बयान लिया, तब पता चला कि लकेश्वर पटेल गांव में नहीं है। प्रार्थी व गवाहों के कथन में पाया गया कि प्रार्थी के रिपोर्ट दर्ज कराते समय उनके साथियों द्वारा बताए अनुसार गौरीशंकर पटेल के नाम के स्थान पर लकेश्वर पटेल नाम से रिपोर्ट दर्ज कराया गया था।

पेनाल्टी कर असर: शराब पीकर वाहन चलाने के मामलों में प्रकरण हुए कम

दीपका पुलिस ने 185 चालकों पर की कार्रवाई

कोरबा(विश्व परिवार)। कई प्रकार के मामलों में सुधार लाने के लिए पुलिस को सडक पर उतरकर ठोस कार्रवाई करनी पड़ रही है और सभी तरह के दबाव को खारिज करना पड़ रहा है। इस कार्रवाई ने वाहन चालकों को सुधरने के लिए मजबूर किया है। बताया गया कि शराब पीकर वाहन चलाने के मामले में धारा 185 के अंतर्गत की गई कार्रवाई से अब इस प्रकार के प्रकरण काफी कम हुए हैं। दीपका टीआई युवराज तिवारी ने बताया कि वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर स्थानीय पुलिस अपने काम में लगी है। अपराध नियंत्रण के साथ-साथ गुंडा, बदमाशों की तलाश करने और उन्हें आगामी दिनों के लिए अच्छे तरीके से समझाईश दी जा रही है। बता दिया गया है कि आचरण में सुधार नहीं होने पर उन्हें जेल का रास्ता दिखाया जाएगा। होली और लोकसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए पुलिस ने इस इलाके में कई तरफ चेक प्वाइंट बनाए हैं और संदिग्धों से लेकर तेज व लापरवाहीपूर्वक वाहन चलाने वालों की जांच कर रही है। बीते दिनों में हुए हादसों के अनुभव के आधार पर उन चालकों पर धारा 185 में कार्रवाई करते हुए अधिकतम पेनाल्टी लगाई गई जो जांच में शराब पीकर वाहन चलाते पकड़े गए। तिवारी ने बताया कि विभाग की व्यवस्था के अंतर्गत ऐसे मामलों में एल्कोमीटर से चालकों की जांच की गई। मानक से ज्यादा एल्कोहल का स्तर मिलने पर प्रावधान के तहत प्रकरण बनाए गए। ऐसे मामलों में 10 हजार तक की पेनाल्टी का प्रावधान है। दीपका पुलिस ने हाल के कुछ दिनों में काफी मामलों में कार्रवाई की और चालकों को सख्त संदेश दिया कि शराब पीकर वाहन चलाना अपने साथ-साथ दूसरे के जीवन को संकट में डालने जैसा है। अभियान के प्रभाव साफतौर पर नजर आ रहे हैं। लगातार की जा रही जांच में अब शराब के नशे में वाहन चलाने वाले चालकों की संख्या में अप्रत्याशित गिरावट दर्ज की गई।

सड़क हादसे में युवक की मौत

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले में रफ्तार का कहर थम नहीं रहा है. आज फिर दर्दनाक सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई. दरअसल, उरगा थाना अंतर्गत बरपाली के पास तेज रफ्तार हाइवा ने बाइक सवार युवक को रौंद दिया. हादसे में बाइक की मौके पर ही मौत हो गई. वहीं घटनास्थल से हाइवा चालक वाहन लेकर फरार हो गया है. घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच में जुट गई है. इस दर्दनाक हादसे का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। वीडियो में देखा जा सकता है कि उरगा थाना अंतर्गत बरपाली के पास निर्माणाधीन मार्ग से युवक बाइक सावर होकर जा रहा है. तभी दूसरी ओर से तेज गति से आ रहे हाइवा ने बाइक में टक्कर मार दी. युवक बाइक के साथ नीचे घाट में फेंका गया और गंभीर चोट लगने से उसकी मौत हो गई. मृतक का नाम ईश्वर साहू था. वह दीपका से दर्राभांटा स्थित अपने घर जा रहा था. इसी दौरान ये हादसा हुआ. मामले में पुलिस मर्ग कायम कर जांच कर रही है. साथ ही ट्रक चालक के खिलाफअपराध दर्ज कर उसकी तलाश की जा रही है।

संक्षिप्त समाचार

चचेरे भाई के साथ जा रहा युवक ने बाइक रूकवाकर बांध में लगा दी छलांग

कोरबा(विश्व परिवार)। अपने चचेरे के भाई के साथ बाइक में जा रहा युवक जैसे हसदेव बराज के पास पहुंचा, तो उसने बाइक रूकवाई। भाई कुछ समझ पाता, इसके पहले ही युवक ने दर्री बराज में छलांग लगा दी। घटना से हक्के- बक्के रह गए भाई ने दर्री पुलिस को सूचना दी। रात होने की वजह से रेस्क्यू आपरेशन नहीं चल सका। सुबह पुलिस ने गोताखोरों की मदद से करीब तीन घंटे की मशक्कत के बाद शव को पानी से बाहर निकाला गया। मृतक का नाम अजय पाल तंवर 28 वर्ष है। जो बांकीमोंगरा थाना अंतर्गत ग्राम जवाली निवासी बृजलाल तंवर का पुत्र है। अजय ने दर्री बांध में छलांग लगा कर आत्महत्या क्यों की, यह अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। पुलिस ने मर्ग कायम कर वैधानिक कार्रवाई के बाद पोस्टमार्टम करा शव अंतिम संस्कार के लिए स्वजनों को सौंप दिया। पुलिस का कहना है कि मामले में स्वजनों व परिचितों से पूछताछ की जा रही है।

तेज रफ्तार ट्रेलर ने पहले कार को मारी ठोकर, फिर बाइक सवार को रौंदा

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले में रफ्तार का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा है. एक तेज रफ्तार ट्रेलर ने पहले कार को ठोकर मारी उसके बाद बाइक सवार को रौंदा दिया. इस भीषण हादसे में युवक की मौके पर ही मौत हो गई. घटना से इलाके में सनसनी फैल गई है. हादसे के बाद आक्रोशित लोगों ने सड़क जाम कर दिया. वहीं पुलिस अधिकारी के समझाइश के बाद लोगों ने प्रदर्शन बंद किया. यह मामला कुसमुंडा थाना क्षेत्र का है. जानकारी के अनुसार, सर्वमंगला चौकी अंतर्गत कनकी मुख्य मार्ग के पास अनियंत्रित ट्रेलर पहले एक कार को टक्कर मारी और फिर बाइक सवार को कुचल दिया. हादसे में युवक की मौके पर ही मौत हो गई. हादसे के बाद ग्रामीणों ने चक्का जाम कर दिया. जिससे सड़क के दोनों तरफवाहनों की लंबी कतार लग गई. घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और मर्ग कायम कर जांच में जुट गई है. बाइक सवार मृतक की अब तक पहचान नहीं हो पाई है. बता दें कि ग्रामीणों ने एक दिन पहले ही भारी वाहनों के आवाजाही को लेकर आंदोलन किया था. ग्रामीणों का आरोप है कि भारी वाहन के चलते लगातार हादसे हो रहे हैं मौते हो रही है.

अवैध कबाड़ के विरुद्ध की गई कार्यवाही

कोरबा(विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक कोरबा सिद्धार्थ तिवारी द्वारा क्षेत्र में हो रहे अवैध कबाड़ के विरुद्ध सख्त कार्यवाही के संबंध में दिये गये निर्देशों के परिपालन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक व नगर पुलिस कोरबा के मार्गदर्शन पर थाना प्रभारी कोतवाली निरीक्षक मोतीलाल पटेल द्वारा अपने मातहत कर्मचारियों के साथ राताखार क्षेत्र में संचालित मायरा इंटरप्राइजेज पर कार्यवाही की गई । मुखबीर से प्राप्त सूचना के मुताबिक मेरा इंटरप्राइजेज में अवैध रुप से कबाड़ रखने की सूचना पर थाना प्रभारी द्वारा स्टाफ तथा नायब तहसीलदार के साथ सूचना तस्दीक के लिए रवाना हुए । मौके पर पहुंच कर पाया कि मायरा इंटरप्राइजेस गोदाम राताखार में भारी मात्रा में लोहे का कबाड़, टीना, लोहे के पाट्र्स, लोहे का पाईप, लोहे का राड, सायकल एवं मोटर साइकिल के पाट्र्स एवं अन्य लोहे के सामान एवं पाट्र्स मिलन धारा 102 जा.फ ौ. में जप्त कर कब्जे पुलिस लिया गया तथा मायरा इंटरप्राइजेस गोदाम राताखार को नायब तहसीलदार के द्वारा सील किया गया है।

परीक्षा में नकल कराने वाला व्याख्याता अरविंद राजवाड़े निलंबित

सूरजपुर(विश्व परिवार)। परीक्षा में नकल कराने वाले व्याख्याता को राज्य सरकार ने सस्पेंड कर दिया है। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बड़सरा, भैयाथान, सूरजपुर के व्याख्याता अरविंद राजवाड़े पर 10वीं-12वीं की प्रैक्टिकल परीक्षा में नकल कराने का आरोप था। स्कूल में नकल की शिकायत 14 मार्च को टीवी चैनल पर प्रसारित की गयी थी। शिकायत के बाद भैयाथान के बीईओ स्कूल जांच करने के लिए पहुंचे थे। जांच के दौरान पाया गया कि शिक्षक ने बच्चों को नकल कराने के लिए पुराने प्रैक्टिकल फाईल दी थी। व्याख्याता ने नकल कराने की बात को भी स्वीकार किया। इसकी पुष्टि बीईओ ने अन्य बच्चों से भी की। जिसके बाद बीईओ ने अपनी रिपोर्ट डीईओ को भेजी थी। शासन स्तर पर भेजी गयी रिपोर्ट के बाद अब डीपीआई ने आदेश जारी कर अरविंद कुमार राजवाड़े को निलंबित कर दिया है।

संपादकीय

कठघरे में है सरकार

अगर लगे आरोपों को साक्ष्यों के जरिए साबित कर दिया जाता है, तो फिर इलेक्ट्रॉल बॉन्ड योजना की छवि आजाद भारत में हुए एक बड़े राजनीतिक घोटाले के रूप में बनेगी। क्या इस प्रकरण की विशेष एवं पूरी जांच जरूरी नहीं है? इलेक्ट्रॉल बॉन्ड्स के मुद्दे ने भारतीय लोकतंत्र की साख पर ऐसा ग्रहण लगाया है, जिसकी छाया से उबरना आसान नहीं होगा। अब यह बात बेहिचक कही जा सकती है कि चुनावी चंदे की यह योजना शुरुआत से ही बदनीयती से प्रेरित थी। मकसद चुनावी चंदे पर मोटा परदा डालना था। वैसे सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर भारतीय स्टेट बैंक ने जो जानकारियां सौंपी हैं, उससे बात सिर्फ यहीं तक नहीं रह गई है। बल्कि उससे कई बुनियादी सवाल उठे हैं। जब तक इन प्रश्नों पर स्थिति स्पष्ट नहीं होती, यह धारणा पुख्ता बनी रहेगी कि स्वार्थी और अवांछित ताकतें धन-बल के जरिए सत्ताधारी दलों एवं राजनेताओं को साध कर अपना उल्लू सीधा कर रही हैं। सबसे परेशानी वाली बात यह सामने आई है कि कथित खोखा (शेल) कंपनियां सियासी चंदा दे रही हैं और पार्टियां उन्हें स्वीकार भी कर रही हैं। कई ऐसी कंपनियां बेनकाब हुई हैं, जिन्हें एक वित्त वर्ष में जितना मुनाफा हुआ, उससे छह गुना से भी ज्यादा रकम उन्होंने चंदा दिया। तो सवाल उठा है क्या सियासी चंदा देने के लिए ही कुछ बड़े कॉरपोरेट घरानों ने ऐसी कंपनियां बनाई? यह पहलू इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इनमें से कई कंपनियों की स्थापना इलेक्ट्रॉल बॉन्ड योजना लागू होने के बाद हुई। एक अन्य मुद्दा चंदे के बदले लाभ पहुंचाए जाने और भयादोहन के बदले चंदा उगाहने के आरोप से संबंधित है। चूंकि स्टेट बैंक ने अभी तक यूनिक कोड उपलब्ध नहीं करवाए हैं, इसलिए ठोस रूप से यह दिखा पाना अभी संभव नहीं है कि किस कंपनी ने कब किस पार्टी को कितना चंदा दिया। मगर आकलन के आधार पर विशेषज्ञों ने इस तरफ इशारा किया है कि ईडी जैसी केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई के शुरू होने तुरंत बाद कुछ कंपनियों ने इलेक्ट्रॉल बॉन्ड खरीदे। उधर कुछ कंपनियों को इस माध्यम से चंदा देने के कुछ समय बाद परियोजनाओं के बड़े ठेके मिले। अगर यह रिश्ता साक्ष्यों के साथ स्थापित कर दिया जाता है, तो फिर इलेक्ट्रॉल बॉन्ड योजना की छवि आजाद भारत में हुए एक बड़े राजनीतिक घोटाले के रूप में बनेगी। क्या इस प्रकरण की पूरी जांच जरूरी नहीं है?

क्या सैनी से भाजपा के हित सधेगें?

अजीत द्विवेदी

नायब सिंह सैनी को हरियाणा का मुख्यमंत्री बनाने को भाजपा का नायाब दांव माना जा रहा है। माना जा रहा है कि एक दांव से भाजपा ने कई लक्ष्य साध लिए हैं। अब भाजपा सरकार के खिलाफ एंटी इन्कम्बैंसी खत्म हो जाएगी। किसानों की नाराजगी दूर हो जाएगी। पिछड़ी जातियों का पूरी तरह से ध्रुवीकरण भाजपा के पक्ष में हो जाएगा और दूसरी ओर त्रिकोणात्मक लड़ाई में दुष्यंत चौटाला जाट वोटों का बंटवारा करके कांग्रेस को नुकसान पहुंचा देंगे। लेकिन क्या सचमुच ऐसा हो जाएगा? क्या राजनीति सचमुच इस तरह एकरेखीय और इतनी ही सरल होती है कि चुनाव से पहले एक चेहरा बदल देने से पूरी राजनीति बदल जाएगी? कुछ राज्यों जैसे गुजरात और उत्तराखंड में ऐसा जरूर हुई है लेकिन उन राज्यों की राजनीति और सामाजिक संरचना दोनों भिन्न थे। हरियाणा की राजनीति उनसे अलग है। उसी तरह जैसे कर्नाटक की राजनीति अलग थी और वहां चेहरा बदलने का दांव नहीं चला। हालांकि इसका यह मतलब नहीं है कि हरियाणा में यह नायाब दांव अनिवार्य रूप से विफल ही हो जाएगा। बहरहाल, मनोहर लाल खट्टर लगातार नौ साल से अधिक समय से मुख्यमंत्री थे तो क्या चुनाव से पहले उनको बदल देने से उनकी सरकार के खिलाफ अगर कोई एंटी इन्कम्बैंसी थी तो वह खत्म हो जाएगी? ध्यान रहे पिछले 10 साल में जितने राज्यों में भाजपा की सरकार बनी और जो भी मुख्यमंत्री बना उनमें से किसी का कार्यकाल इतना लंबा नहीं रहा, जितना खट्टर का था। सो, उनके खिलाफ बाकी राज्यों से ज्यादा एंटी इन्कम्बैंसी स्वाभाविक रूप से बनी होगी। दूसरे, उनके कार्यकाल में दोनों किसान आंदोलन हुए, जिनके केंद्र में हरियाणा रहा। पहले आंदोलन के समय किसानों को दिल्ली आने से रोकने के लिए खट्टर सरकार ने जो कार्रवाई की थी उसने किसानों को बुरी तरह से नाराज किया था। दूसरे आंदोलन में भी पंजाब और हरियाणा के खनौरी और शंभू बॉर्डर पर जिस तरह से किसानों

पर आंसू गैस के गोले छोड़े गए या नकली गोलियों से फायरिंग हुई उससे किसान नाराज हैं। उनकी नाराजगी निश्चित रूप से सिर्फ मनोहर लाल से नहीं होगी। भाजपा पिछले करीब 10 साल से हरियाणा में जाट बनाम गैर जाट की राजनीति करती रही है। उसने 10 साल पहले हरियाणा सहित कई राज्यों में शक्तिशाली और सत्ता की स्वाभाविक दावेदार मानी जाने वाली जातियों को छोड़ कर दूसरी जातियों को सत्ता सौंपी। महाराष्ट्र में गैर मराठा देवेंद्र फड़नवीस, हरियाणा में गैर जाट मनोहर लाल खट्टर और झारखंड में गैर आदिवासी रघुबर दास मुख्यमंत्री बनाए गए थे। मोटे तौर पर यह राजनीति कामयाब रही है। हालांकि महाराष्ट्र और झारखंड में लगातार दूसरी बार सरकार नहीं बनी फिर भी भाजपा अपना वोट बढ़ाने और उसे बनाए रखने में कामयाब रही। इसी राजनीति के तहत पंजाबी समुदाय के मनोहर लाल को हटा कर पिछड़ी जाति के नायब सिंह सैनी सीएम बनाए गए हैं। गैर जाट चेहरा बता कर उनको नायाब दांव की तरह पेश किया जा रहा है। यह सही है कि राज्य में एक तिहाई से ज्यादा आबादी पिछड़ी जातियों की है लेकिन क्या सैनी के नाम से सब भाजपा से जुड़ जाएंगे? दूसरा सवाल यह है कि गैर पिछड़ी जातियों का क्या होगा? क्या वे भी सैनी को नेता मान कर भाजपा के इस प्रयोग को सफल बना देंगे? यह ध्यान रखने की जरुरत है कि सैनी अगर गैर जाट चेहरा हैं तो वे गैर ब्राह्मण भी हैं, गैर दलित भी हैं, गैर गुर्जर भी हैं तो फिर ये जातियां कैसे उनके साथ जुड़ेंगी? क्या गैर जाट की भावना इतनी प्रबल है कि उसके विरोध में सारी जातियों किसी को भी नेता स्वीकार कर लेंगी? अगर बहुत सरल तरीके से यह मानें कि जिस जाति या समुदाय का व्यक्ति मुख्यमंत्री होता है उसकी जाति उसके साथ ज्यादा मजबूती से गोलबंद होती है तो फिर इसी तर्क से यह मानना होगा कि दूसरी जातियां उससे दूरी बनाएंगी। इसलिए जाति का हिसाब कभी भी इतने सरल तरीके से काम नहीं करता है। उसके साथ कुछ और फैक्टर जोड़ने होते हैं। सैनी के प्रयोग के साथ भाजपा के पक्ष में यह बात जाती है कि पहले लोकसभा का चुनाव होना है, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर होना है। इसलिए लोकसभा चुनाव में बिल्कुल निचले स्तर पर जातियों का विभाजन होने की संभावना कम है। लेकिन विधानसभा चुनाव में तस्वीर पूरी तरह से बदल भी सकती है। यह बात समझने की जरुरत है कि अगर सत्ता के शीर्ष पर बैठा नेता अपनी जाति के वोट आकर्षित करता है तो उसकी वजह से दूसरी जातियों के वोटों में विकर्षण भी होता है। भाजपा का ट्रैक रिकॉर्ड रहा है कि चुनाव से पहले जिसको मुख्यमंत्री बनाया जाता है चुनाव जीतने के बाद भी वही सीएम बनता है। गुजरात से उत्तराखंड तक यह बात दिखाई देती है। उत्तराखंड में तो मुख्यमंत्री रहते विधानसभा का चुनाव हारने वाले पुष्कर सिंह धामी को ही सीएम बनाया गया था। इस हिसाब से हरियाणा के मतदाताओं में यह मैसेज अपने आप जाएगा कि भाजपा जीतेगी तो फिर सैनी ही मुख्यमंत्री बनेंगे। यह मैसेज विधानसभा चुनाव में कई जातियों को भाजपा से दूर भी कर सकता है। ध्यान रहे जमीनी स्तर पर जातियों की गोलबंदी हमेशा एक जैसे अंदाज में काम नहीं करती है। यह मानना भी पूरी तरह से ठीक नहीं होगा कि दुष्यंत चौटाला को अब भाजपा ने अपने से दूर कर दिया तो वे अलग लड़ कर जाट वोटों का बंटवारा कर देंगे, जो अभी लगभग पूरी तरह से कांग्रेस के पक्ष में दिखाई दे रहा है। कांग्रेस ने प्रदेश की कमान पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र हुड्डा को सौंपी है। वे 10 साल तक हरियाणा के मुख्यमंत्री रहे हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में जाट उनके साथ एकजुट हुए थे, जिससे कांग्रेस को 30 सीटें मिलीं। उस चुनाव में दुष्यंत चौटाला की नई बनी जननायक जनता पार्टी को 10 सीटें मिली थीं। चुनाव के बाद एक समय ऐसा लग रहा था कि कांग्रेस और चौटाला की पार्टी मिल कर सरकार बना सकते हैं। लेकिन भाजपा को केंद्र और राज्य की सत्ता में होने का लाभ मिला और उसने चौटाला के साथ मिल कर सरकार बना ली। चौटाला चार साल से ज्यादा समय तक कई महत्वपूर्ण मंत्रालय लेकर उप मुख्यमंत्री बने रहे। इसलिए अचानक अलग होकर वे भाजपा विरोधी राजनीति करते हैं तब भी भाजपा विरोधी नेता की उनकी साख नहीं बनेगी। सो, उनके जरिए जाट वोटों का बंटवारा हो ऐसा भाजपा की सदिच्छा हो सकती है लेकिन यह इच्छा पूरी होगी, ऐसा नहीं कहा जा सकता है।

विचार

मैराथन चुनाव कार्यक्रम

चुनाव कार्यक्रम को देखकर अगर मैराथन दौड़ की याद आती हो, यह कहा जाएगा कि इसमें अंत तक टिके रहने के लिए आर्थिक संसाधन, टिकाऊ चुनाव मशीनरी और अपने चुनावी नैरेटिव को आकर्षक बनाए रखने की क्षमता पूर्व शर्त बन जाती हैं।लोकसभा के आम चुनाव के कार्यक्रम की खबर एक विदेशी अखबार ने इस शीर्षक के साथ प्रकाशित की है- भारत में मैराथन चुनाव कार्यक्रम का एलान। एथलेटिक्स की दुनिया में कहा जाता है कि मैराथन दौड़ में शामिल होने के लिए शारीरिक बल, अंतर्शक्ति, टिकाऊ ऊर्जा एवं गहरे धीरज की जरूरत होती है। जिन धावकों में ये गुण ना हों, वे 42.195 किलोमीटर की इस प्रतिस्पर्धा में सफल नहीं हो सकते। भारत के चुनाव कार्यक्रम को देखकर अगर इस दौड़ की याद आती हो, यह भी सहज ही कहा जाएगा कि इसमें अंत तक टिके रहने के लिए कई खास पहलू अनिवार्य हो जाते हैं। आर्थिक संसाधन, लंबे समय तक सक्रिय रह सकने वाली चुनाव मशीनरी और अपने चुनावी नैरेटिव को आकर्षक बनाए रखने की क्षमता इनमें शामिल हैं। चुनावी चंदे और प्रचार तंत्र की वर्तमान स्थिति देखें, तो कहा जाएगा कि इन तकाजों को पूरा करना विपक्षी दलों के लिए एक कठिन चुनौती है। वैसे तो सात चरणों में लोकसभा का चुनाव होना अब नई बात नहीं रही, लेकिन इस बार एक खास पहलू यह है कि अनेक बड़े राज्यों में भी चुनाव को सात चरणों तक खींच दिया गया है। इससे यह कहने की स्थिति बनती है कि मैच शुरू होने के पहले ही पिच सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी के अनुकूल हो गई है। चूंकि उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में सातों चरणों में वोट डाले जाएंगे, इसलिए वहां हर मतदान के दिन करीब के चुनाव क्षेत्रों में प्रचार करने की गुंजाइश बनी रहेगी। वर्तमान रुझान यह है कि प्रधानमंत्री के भाषणों का टीवी चैनल सीधा प्रसारण करते हैं।इस तरह मतदान के समय भी उनका संदेश मतदाताओं तक पहुंचता रहेगा। मतलब यह कि ऐसे चुनाव कार्यक्रम के कारण प्रचार संबंधी आदर्श चुनाव आचार संहिता बेमायने हो गई है। फिर मतदान के बाद 40 दिन तक वोटिंग मशीनों की विश्वसनीय ढंग से रक्षा और सुरक्षा की कठिन चुनौती बनी रहेगी। जिस समय चुनाव प्रक्रिया को लेकर कई तरह के संदेह वातावरण में हैं, कहा जा सकता है कि ऐसे चुनाव कार्यक्रम से उन्हें दूर करने में कोई मदद नहीं मिलने वाली है।

चंदा सत्ता की पार्टी को ही!

चुनावी बॉन्ड के जरिए राजनीतिक दलों को मिले चंदे का ब्योरा सार्वजनिक हो गया है। केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार की ओर से चुनावी बॉन्ड के जरिए चंदा देने का जो कानूनी तरीका स्थापित किया गया था उसमें पारदर्शिता की कोई गुंजाइश नहीं थी। देश के नागरिकों से यह बात छिपाई गई कि किस पार्टी को कौन चंदा दे रहा है और कितना चंदा दे रहा है? लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस गोपनीयता पर से परदा हटा दिया है। यह भी कह सकते हैं कि पहला परदा हट गया है। यह पता चल गया है कि किस कंपनी ने किस तारीख को कितने रुपए का बॉन्ड खरीदा। यह भी पता चला है कि किस पार्टी ने किस तारीख को कितने रुपए का बॉन्ड भुनाया। हालांकि अब भी बॉन्ड का यूनिक नंबर सार्वजनिक नहीं किया गया है, जिससे यह पता चले कि किस कंपनी द्वारा खरीदा गया बॉन्ड किस राजनीतिक दल ने भुनाया है। फिर भी यह पता चल गया है कि किस कंपनी ने सबसे ज्यादा बॉन्ड खरीदा और किस पार्टी ने सबसे ज्यादा बॉन्ड को कैश कराया। अभी जितना खुलासा हुआ है उसका लब्बोलुआब है कि भले इसे राजनीतिक चंदे का नाम दिया जा रहा है लेकिन यह चंदा राजनीतिक दलों को कम और सरकारों को ज्यादा मिलता है। कहने का मतलब है कि जिस पार्टी की सरकार रहती है उसको चंदा मिलता है। विपक्षी पार्टियों को चिड़िया के चुग्गे के बराबर चंदा मिलता है। दूसरा निष्कर्ष यह भी है कि उत्तर भारत के हिंदी पट्टी की पार्टियों की हैसियत कुछ नहीं है। देश के बड़े कॉरपोरेट घराने उनको कुछ नहीं समझते हैं। इसका कारण यह भी हो सकता है कि हिंदी पट्टी के राज्यों में बड़े कॉरपोरेट घरानों के लिए कोई अवसर नहीं होता है इसलिए वे इस इलाके की पार्टियों को नाममात्र का चंदा देते हैं या नहीं देते हैं। तभी बिहार में सत्ता में होने के बावजूद नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यू को बहुत मामूली चंदा मिला है। उनके मुकाबले मुख्य विपक्षी राजद को थोड़ा ज्यादा चंदा मिला है। उत्तर प्रदेश की समाजवादी पार्टी को भी चुनावी बॉन्ड के जरिए बहुत कम फंडिंग हुई है, जबकि बसपा को चुनावी बॉन्ड से कोई चंदा नहीं मिला है। सबसे हैरान करने वाली बात यह है कि खनिज संपदा से संपन्न राज्य झारखंड में सत्तारूढ़ झारखंड मुक्ति मोर्चा चार साल से सरकार में है लेकिन उसका नाम टॉप पार्टियों में नहीं है।

हिमाचल में हलचल, हरियाणा में परिवर्तन

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

यदि कांग्रेस इन छह पूर्व विधायकों को फिर से स्वीकार लेती है, तो क्या होगा। राजनीति संभावनाओं का खेल है। अब कांग्रेस इनको पार्टी में तो वापस ले सकती है, लेकिन विधानसभा अध्यक्ष अब इनको दोबारा विधानसभा का सदस्य नहीं बना सकेंगे। अब लोकसभा के चुनाव परिणामों का इंतजार है भारतीय जनता पार्टी ने हरियाणा में मुख्यमंत्री बदल दिया है और हिमाचल में कांग्रेस सरकार के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू को फिलहाल 'स्टेटस को' दिया हुआ है। लेकिन सबसे ज्यादा आश्चर्य मनोहर लाल खट्टर की जगह नायब सैनी को मुख्यमंत्री बनाने को लेकर व्यक्त किया जा रहा है। चार दिन पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मनोहर लाल की जमकर तारीफ की और दूसरे ही दिन उन्होंने इस्तीफा दे दिया। इस्तीफे के तुरन्त बाद विधायक दल की बैठक हुई और उसमें मनोहर लाल ने नायब सिंह सैनी, जो फिलहाल हरियाणा भाजपा के अध्यक्ष और कुरुक्षेत्र से सांसद हैं, का नाम भाजपा विधायक दल के नए नेता के तौर पर पेश किया, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। और उसके साथ ही राज्यपाल ने उन्हें मुख्यमंत्री पद की शपथ दिला दी। अगले दिन उन्होंने विधानसभा में 48 विधायकों के समर्थन से अपना बहुमत भी सिद्ध कर दिया। यह सारा घटनाक्रम इतनी तेजी से घटित हुआ कि मीडिया इसकी भनक तक नहीं पा सका। लेकिन इस आप्रेशन में, जननायक पार्टी, जो ओमप्रकाश चौटाला के परिवार में राजनीतिक कुश्ती के चलते अस्तित्व में आई थी, हलाल हो गई। जननायक पार्टी के दुष्यन्त चौटाला मनोहर लाल की सरकार में अपने दस विधायकों के बल पर उप मुख्यमंत्री के पद पर विराजमान थे। नब्बे सदस्यीय विधानसभा में भाजपा के 41 विधायक हैं। नायब सिंह सैनी की सरकार को सात निर्दलीय विधायकों ने समर्थन दे दिया तो जननायक दुष्यन्त की जरूरत नहीं रही। सब जानते हैं कि राजनीति में बिना जरूरत कोई किसी को नहीं ढोता। कहा जा रहा है कि दुष्यन्त हरियाणा में लोकसभा की दस सीटों में से दो सीटों की मांग कर रहे थे, लेकिन भाजपा एक सीट देने को तैयार थी। पिछले पांच साल में जननायक पार्टी ने अपना जनाधार दुष्यन्त चौटाला की कार्यप्रणाली के चलते खोया है और ओमप्रकाश चौटाला की पार्टी इनेलो यानी इंडियन नैशनल लोकदल, अपनी तमाम कलाबाजियों के बावजूद हरियाणा में पुन: जड़ें नहीं जमा सकी। भारतीय जनता पार्टी ने चौटाला परिवार के इस राजनीतिक पतन को देख लिया था, लेकिन चौटाला परिवार शायद जानकर भी अनजान बना हुआ था। इतना ही नहीं, दुष्यन्त चौटाला तो अपनी शर्तों पर अड़ा हुआ था। यहां तक कि दुष्यन्त अपने ही घर में टूट रही दीवारों की आवाज नहीं सुन सका। उसके दस विधायकों में से पांच उसका साथ छोड़ गए। कुल मिलाकर चार विधायक उसके पास बचे। भाजपा पिछले कुछ समय से सोशल इंजीनियरिंग के माध्यम से देश में सामाजिक समरसता का ऐतिहासिक प्रयोग कर रही है। उसी प्रयोग के चलते नायब सिंह सैनी हरियाणा के मुख्यमंत्री बने। वे ओबीसी श्रेणी से आते हैं जिससे पूरे राज्य में एक गहरा संदेश गया है। सोनिया कांग्रेस के राहुल गान्धी जब पूरे देश में घूम घूम कर यह घोषणा कर रहे हैं कि यदि वे प्रधानमंत्री बन गए तो वे भारतीय सामाजिक संरचना को राजनीति की बिसात पर 'जाति जनगणना' के नाम पर तार-तार करके रख देंगे, तब भारतीय जनता पार्टी ने बिना शोर-शराबा किए नायब सिंह को मुख्यमंत्री बना कर व्यावहारिक धरातल पर हरियाणा में एक नया प्रयोग किया है। इससे हुड्डा परिवार व चौटाला परिवार दोनों सकते में हैं। न निगलते बनता है, न उगलते बनता है। ऐसे समय जब सोनिया गान्धी, भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, ओम प्रकाश चौटाला, लालू यादव, अखिलेश यादव व एमके स्टालिन अपने परिवार से बाहर न देखने को तैयार हैं और न ही निकलने को तैयार हैं, नायब सिंह सैनी का मुख्यमंत्री बनना देश में परिवारवाद की राजनीति पर गहरा आघात है। राजनीति के धुरंधर पंडित भी भाजपा की इस सांगठनिक कुशलता पर सिर धुनते नजर आ रहे हैं। इससे पूर्व राजस्थान, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ में भी भारतीय जनता पार्टी ने नए मुख्यमंत्रियों के चयन के समय सबको चौंकाया था। राजनीतिक विश्लेषणों की शब्दावली में चाहे इसे चौंकाना कहा जाए, लेकिन यह भारतीय राजनीति में ऐसा प्रयोग कहा जा सकता है जो कई स्थापित मिथकों को तोड़ता है। कांग्रेस पार्टी ने जहां भारतीय जनतंत्र में परिवारवाद का वृक्ष रोपने की कोशिश की, जिसकी देखादेखी दूसरे राजनीतिक दलों में भी यह प्रदूषण फैला, वहीं भारतीय जनता पार्टी ने उसी 'जन' को राजनीति के केन्द्र में स्थापित करने की कोशिश की जिसके बलबूते 'जनतन्त्र' चलता है। हरियाणा में मनोहर लाल से नायब सैनी तक के इस प्रयोग के साथ साथ हिमाचल प्रदेश में हुए धमाके की पुन: विवेचना करना भी जरूरी है। हिमाचल प्रदेश में राज्यसभा चुनाव में बहुमत होते हुए भी कांग्रेस के अभिषेक मनु सिंघवी की पराजय और भाजपा के हर्ष महाजन की विजय के बाद के घटनाक्रम को देखना भी जरूरी है। फिलहाल प्रदेश विधानसभा में 62 सदस्य हैं। छह सदस्यों की सदस्यता हिमाचल प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष ने इस कारण से समाप्त कर दी है क्योंकि उन्होंने कांग्रेस के प्रत्याशी के स्थान पर भाजपा के प्रत्याशी को वोट दे दिया था। इस समय सरकार चलाने के लिए बत्तीस सदस्यों की जरूरत है। भाजपा के पास पच्चीस सदस्य हैं। तीन निर्दलीय उसके साथ हैं जिन्होंने हर्ष महाजन को वोट दिया था। इसका अर्थ हुआ कि हिमाचल में सरकार बनाने के लिए भाजपा को चार और सदस्य दरकार हैं। कांग्रेस के विक्रमादित्य सिंह की गतिविधियों को देखते हुए प्रश्न पैदा होता है कि क्या भाजपा इस समय हिमाचल में सरकार बनाने से गुरेज कर रही है और उसने सुखविन्दर सिंह सुक्खू की सरकार को फिलहाल 'स्टेटस को' दिया हुआ है? यदि सचमुच ऐसा है तो भाजपा ने कांग्रेस सरकार को यह 'स्टेटस को' क्यों दिया हुआ है? दूसरे प्रश्न का उत्तर यह हो सकता है कि भाजपा पर आम तौर पर पारिवारिक राजनीतिक दल आरोप लगाते रहते हैं कि वह उनकी सरकार जोड़-तोड़ से गिरा रही है जो लोकतन्त्र की मूल भावना के खिलाफ है। इसके लिए पूर्व में कर्नाटक व मध्य प्रदेश का उदाहरण दिया जाता है। शायद हिमाचल प्रदेश में भाजपा आसन्न लोकसभा चुनावों को देखते हुए इससे बचना चाहती है।

स्वर्गिक हेती, नरक में धंसता

श्रुति व्यास

हेती ये नाम जादू की दुनिया के किसी देश का लगता है। हेती को खोजने के लिए हमें क्रिस्टोफर कोलंबस का शुक्रगुज़ार होना चाहिए। हेती में वह सब कुछ है जिसके लिए दुनिया का कैरीबियन क्षेत्र जाना जाता है ङ्क खुशनुमा ट्रॉपिकल मौसम, हरियाली, झरने, साफ़ नीला पानी और वह सब जो आपको प्रसन्नता और शांति दे सकता है। मगर परियों की कहानियां हमें बताती हैं कि जादू की दुनिया पर हमेशा किसी दुष्ट राक्षस की बुरी नज़र लगी रहती है। हेती पर भी है। यह देश लगातार राजनैतिक अस्थिरता और प्राकृतिक आपदाओं का शिकार बनता रहा है। फ्रांस के इस पूर्व उपनिवेश के निवासी सुख-चैन से जीना जान ही नहीं पाए हैं। डूवालिए की तानाशाही के अवसान के बाद के पिछले 38 सालों में हेती के लोगों ने 19 शासक देख लिए हैं। देश में कानून-व्यवस्था का नामोनिशान नहीं है और लोगों की ज़िन्दगी और रोज़ी-रोटी हमेशा खतरे में रहती है। बलात्कार, हत्याएं और चोरियां आम हैं। करीब 1.15 करोड़ की आबादी वाले इस देश का सालाना बजट 2.2 अरब अमरीकी डॉलर है। जुलाई 2021 में तत्कालीन राष्ट्रपति जोवेनल मोईस की उनके आधिकारिक निवास में हत्या कर दी गई थी। तब से देश में राजनैतिक अराजकता का माहौल और गहरा गया है। देश की आधी आबादी ङ्क करीब 55 लाख ङ्क को मानवीय सहायता की ज़रुरत है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार, हेती में करीब 10 लाख बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं। इनमें से जो बच्चे आपराधिक गिरोहों के बोलबाले वाले इलाकों में रहते हैं, वे इन गिरोहों में शामिल हो रहे हैं। कोढ़ में खाज यह कि 2022 में हेती में हैजा एक महामारी के रूप में फैला जिससे देश की

कमर टूट गयी। और अब हेती एक नयी मुसीबत में है। वह गृहयुद्ध की कगार पर है। गत 7 मार्च से अपराधियों के गिरोह देश की राजधानी पोर्ट ओ प्रिंस की सड़कों पर उत्पात कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि राजधानी का करीब 80 प्रतिशत हिस्सा उनके कब्ज़े में है। प्रधानमंत्री एरियल हेनरी देश में नहीं हैं। वे केन्या में हैं, जहाँ वे उस देश द्वारा 1,000 पुलिसकर्मी हेती भेजे जाने के लिए समझौते पर दस्तखत करने गए थे। हेनरी ने केन्या से यह सहायता 2022 में मांगी थी और 2023 में संयुक्त राष्ट्रसंघ ने उनकी मांग का अनुमोदन किया। हेनरी की अनुपस्थिति गैंगों के लिए राजधानी पर कब्ज़ा करने का सुनहरा मौका बन गयी है। वे सरकारी इमारतों पर हमले कर रहे हैं। उन्होंने देश के सभी 4,000 जेलों के दरवाजे खोल दिए हैं और सारे के सारे कैदी भाग निकले हैं। उन्होंने हवाईअड्डों और पुलिस थानों को घेर रखा है। कुल मिलाकर, वहां भारी अफरातफरी और अराजकता का माहौल है। एरियल हेनरी वापस अपने देश नहीं आ पा रहे हैं। हेती की पुलिस और सेना लाचार है। गैंगों के गुर्गों की संख्या उनसे कहीं ज्यादा है और कई मामलों में सैनिक और पुलिसकर्मी गोलाबारी में भी गैंगों के आगे टिक नहीं पा रहे हैं। गैंगों की एक ही मांग है ङ्क प्रधामंत्री एरियल हेनरी इस्तीफा दें। जिमी चेरिज़ेर, जिन्हें 'बारबेक्यू' के नाम से जाना जाता है, गुंडों की इस विशाल फौज़ के मुखिया हैं। उन्होंने पोर्ट ओ प्रिंस में संवाददाताओं को बताया कि अगर एरियल हेनरी इस्तीफ़ा नहीं देते तो देश में गृहयुद्ध और कत्लेआम होगा। लाचार एरियल हेनरी ने इस्तीफा दे दिया है। ये गैंगें अचानक क्यों मैदान में कूद पडीं और पहले से बर्बाद देश को और बर्बाद करने में क्यों जुट गईं? बात यह है कि उन्हें लग रहा था कि वे खतरे में है। इन गैंगों के मुखिया माफिया हैं, डॉन हैं। वे ज़मीनों, होटलों, घरों और यहाँ तक कि परचूनी की दुकानों और पेट्रोल पम्पों के मालिक हैं। अगर किसी भी अंतर्राष्ट्रीय संस्था को हेती में कुछ भी करना है तो उन्हें इन गैंगों की कृपादृष्टि चाहिए ही होती है। अब तक संयुक्त राष्ट्र हेती को धन उपलब्ध करवाता रहा है और देश को स्थिरता प्रदान करने की कोशिश करता रहा है। हालाँकि इस मदद को अनजाने में देश में हैजा फैलाने और यौन हमलों में बढ़ोत्तरी के लिए भी ज़िम्मेदार बताया जाता है। मगर अब जो नया समझौता हो रहा है उसके अंतर्गत मदद बजरिये केन्या पहुंचेगी। यही कारण है कि हेनरी केन्या में थे और यही कारण है कि गैंगों ने सड़कों पर उतर आईं हैं। संयुक्त राष्ट्र के विपरीत, केन्या की मदद गैंगों की नेताओं की आमदनी को खतरे में डाल सकती है। वैसे हेनरी के खिलाफ भी देश का नेतृत्व सम्हालने के समय से ही असंतोष था। अमेरिका के शह पर वे संविधान में ऐसे परिवर्तन कर रहे थे जिनसे वे राष्ट्रपति की नियुक्ति के बिना, प्रधानमंत्री बतौर देश पर बिना रोकटोक के राज कर सकते थे। वे देश में बदलाव के लिए नागरिक समाज द्वारा तैयार किये गए रोडमैप का समर्थन करने के लिए तैयार नहीं थे। पिछले हफ्ते उन्होंने चुनाव की तारीखों की घोषणा की मगर 2026 तक अपना प्रधानमंत्री बना रहना सुनिश्चित कर लिया। और इसके लिए उन्होंने कैरीकॉम नामक क्षेत्रीय राजनैतिक यूनियन की सहमती प्राप्त की, हेती के लोगों के नहीं। पिछले एक साल से हेती में एक भी निर्वाचित पदाधिकारी नहीं है। गैंगों के मुखियाओं ने पहली जीत हासिल कर ली है। मगर हेनरी के इस्तीफे से देश में सामाजिक और राजनैतिक अनिश्चितता और बढेगी ही। पिछले कुछ सालों में गैंगों ने बेहतर हथियार हासिल कर लिए हैं और वे पहले से बेहतर संगठित हैं। अब कीनियाई वहां आ रहे हैं जो न तो हेती की भाषा बोलते हैं और ना ही वहां के लोगों को समझते हैं। इसका अर्थ होगा लोगों के लिए और मुसीबतें, और तकलीफें। हेती के लोग लम्बे समय से नरक में धंसते जा रहे हैं और वापसी की राह और कठिन होती जा रही हैं।

संक्षिप्त समाचार

संकटकाल में पूर्व अर्जित पुण्य रक्षा करता है, पुण्य और फल भिन्न-भिन्न रूपी होता है : मुनिश्री सुधासागर जी महाराज

गौरेला (विश्व परिवार)। पुण्य भिन्न भिन्न रुपी होता है और पुण्यफल भी भिन्न भिन्न होता है। मुनिपुंगव श्री सुधासागर महाराज ने

पुण्य का विश्लेषण करते हुये बताया कि कर्मों का फल जन्म जन्मांतर तक मिल सकता है/ मिलता है।कानपुर से कुण्डलपुर पदविहार करते हुये छतरपुर के ग्राम सटई में जिज्ञासाओं का समाधान करते हुये निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज ने पुण्य और पुण्यफल का विश्लेषण करते हुये बताया कि दोनों भिन्न भिन्न रूपी होते हैं। महाराज जी ने बताया आज अर्जित पुण्य भविष्य में संकट के समय फल देता है। उस फलोदय से टले संकट को ही चमत्कार कह देते हैं। श्रमण शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के सुयोग्य शिष्य मुनिपुंगव श्री सुधासागर महाराज ने पुण्य और कर्म की पहेली को अनावृत्त करते हुये बताया कि कभी कभी भयंकर दुर्घटना में वाहन पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो जाता है और सवार सुरक्षि बच जाते हैं। दुर्घटना में सुरक्षित बचे ये सवार पूर्व में देव शास्त्र गुरु की यात्रा में साथ चले होगें। संत के पदविहार में पदयात्रा करते हुये कुछ कदम चले होगें।भगवान की शोभायात्रा में नगर भ्रमण करते हुये अनुशासन और समर्पण के साथ चलकर जो पुण्य अर्जन हुआ था उसका ही फल है कि दुर्घटना में वाहन क्षतिग्रस्त हो गया मगर सवार सुरक्षित बच गये। **-वेदचन्द जैन**

कुंडलपुर में आचार्य पद पदारोहण अनुष्ठान महामहोत्सव में शामिल होंगे संघ प्रमुख डॉक्टर मोहन भागवत जी

कुंडलपुर (विश्व परिवार)। दिगम्बर जैनाचार्य, समाधि सम्राट, परम पूज्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज की परम्परा में नये आचार्य पद पदारोहण अनुष्ठान महामहोत्सव में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख आदरणीय डॉक्टर मोहन भागवत जी उपस्थित रहेंगे। यह महामहोत्सव 16 अप्रैल 2024, मंगलवार को कुंडलपुर में बड़े बाबा देवाधिदेव श्री आदिनाथ भगवान के चरण सान्निध्य में होगा। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री संतोष जैन पेंडारी के नेतृत्व में जैन समाज का प्रतिनिधि मंडल आज नागपुर में डॉक्टर मोहन भागवत जी से मिला। महामहोत्सव समिति के प्रशासनिक संयोजक रवीन्द्र जैन पत्रकार ने कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ. भागवत जी ने गौर से सुनकर इस महोत्सव में आने की स्वीकृति प्रदान कर दी। प्रतिनिधि मंडल में महोत्सव की सह संयोजक डॉ. सुधा मलैया, कुंडलपुर कमेटी के महासचिव आरके जैन, सिद्धार्थ मलैया, स्वतन्त्र जैन खिमलासा, प्रभात सेठ, ललित जैन आदि उपस्थित थे। **-रवीन्द्र जैन**

लोकसभा आम निर्वाचन-2024 : छत्तीसगढ़ में पहले चरण के निर्वाचन के लिए अधिसूचना जारी, पहले दिन कोई नामांकन नहीं

रायपुर (विश्व परिवार)। लोकसभा आम निर्वाचन के तहत छत्तीसगढ़ में प्रथम चरण के निर्वाचन के लिए आज अधिसूचना जारी हो गई है। प्रदेश में प्रथम चरण में बस्तर लोकसभा क्षेत्र में 19 अप्रैल को मतदान होगा। बस्तर लोकसभा क्षेत्र के लिए निर्वाचन की अधिसूचना जारी होने के साथ ही आज से वहां नामांकन दाखिले की प्रक्रिया शुरू गई है। आज पहले दिन किसी भी प्रत्याशी द्वारा कोई नामांकन दाखिल नहीं किया गया। बस्तर लोकसभा क्षेत्र के लिए उम्मीदवार 27 मार्च तक अपना नामांकन दाखिल कर सकते हैं। शासकीय अवकाश दिवसों को छोड़कर कार्यालयीन दिवसों में प्रात: 11 बजे से दोपहर तीन बजे तक नामांकन दाखिल किया जा सकता है। प्राप्त नामांकन पत्रों की संवीक्षा 28 मार्च को की जाएगी। उम्मीदवार 30 मार्च तक अपना नामाकंन वापस ले सकेंगे।

ट्रैफिक पुलिस ने वाहनों से हटाए पदाधिकारियों के प्लेट

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर में लोकसभा चुनाव की तारीखों के एलान होते ही आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है। आचार संहिता के लागू होते ही रायपुर पुलिस एक्शन मोड में आ गई है। ट्रैफिक पुलिस ने गाड़ियों में अवैध तरीके से लगे नेम प्लेट, हूटर और ब्लैक फिल्म की जांच कर कार्रवाई कर रही है। इस कार्रवाई में ट्रैफिक पुलिस ने गाड़ी में रिटायर्ड पै लिखकर रौब से घूम रहे व्यक्ति पर भी एक्शन लिया है। शहर में कुछ युवक प्रदेश अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सचिव जैसे पदनाम लिखकर खुद को टप्प् बता रहे थे। ट्रैफिक पुलिस ने ऐसे लोगों की भी हेकड़ी उतारी है। इन लोगों को चौक-चौराहे पर ही खड़ा कर रेड नेम प्लेट उतारा गया। आचार संहिता के दौरान शहर में सायरन हूटर का उपयोग करना पूरी तरह वर्जित है। इसे आचार संहिता का उल्लंघन माना जाता है। जिसके तहत हूटर पर एक्शन हुआ है। इसी प्रकार चुनाव को मद्देनजर रखते हुए अपराधिक गतिविधियों की रोकथाम के लिए ब्लैक फिल्म लगे वाहनों पर कार्रवाई की गई है।

आचार्य-दीदी को दिया बाल उद्यान का प्रशिक्षण

रायपुर (आरएनएस)। ग्राम भारती जिला रायपुर द्वारा संचालित तुलसी संकुल तरपोंगी, सांकरा, कुथरेल, किरना, रायखेड़ा, तुलसी, देवरी सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्य दीदीयों का एक दिवसीय आवर्ती प्रशिक्षण संपन्न हुआ। प्रशिक्षण में मुख्य प्रशिक्षक के रूप में ग्राम भारती के जिला कोषाध्यक्ष डोमार वर्मा ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संबंध में जानकारी प्रदान की। जिला समन्वयक टीकाराम द्वारा अभिभावक संपर्क कैसे करें इसके बारे में जानकारी दी गई। तरपोंगी प्रशिक्षक दीदी सुमन साहू द्वारा शिशु वाटिका से संबंधित और किरना की प्रशिक्षक दीदी रामेश्वरी द्वारा हिंदी विषय से संबंधित जानकारी प्रदान की। प्रशिक्षण वर्ग में 7 विद्यालय से 65 दीदी और 5 आचार्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में तुलसी विद्यालय के अध्यक्ष राघवेन्द्र वैष्णव ने दीप प्रज्ज्वलित कर आशीर्वाद प्रदान किया गया। प्रशिक्षण में तरपोंगी के प्रधानाचार्य तुलसीराम, सांकरा के प्रधानाचार्य संगीता वर्मा, देवरी प्रधानाचार्य येलन वर्मा, रायखेड़ा से थानेश्वर सोनवानी, कुथरेल से राधा गोस्वामी, तुलसी से अन्नपूर्णा वर्मा प्रमुख रूप से शामिल रहीं।

मन की एकाग्रता के साथ सिद्ध भगवान की पूजन अर्चना करने से मानसिक और शारीरिक दुःख दूर होते हैं : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज

पारसोला (विश्व परिवार)। पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज संघ सहित पारसोला में विराजित है।श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान आराधना महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ का आयोजन पारसोला में 17 मार्च से 26 मार्च तक आयोजित किया गया है आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने धर्म सभा में उपदेश में बताया कि भगवान बनने का गुण और शक्ति सभी प्राणियों में है, पुरुषार्थ कर शक्ति गुण क्षमता को प्रकट कर भगवान के नित्य दर्शन, अर्चना पूजन, स्वाध्याय, अभिषेक विधि पूर्वक करने से आप भी सिद्ध बन सकते हैं।भगवान की भक्ति नृत्य करते समय हमारी भावना यही होनी चाहिए कि मैं भी आप जैसे बन सकूं आपके गुण प्राप्त कर सकूं, हमारी आत्मा पर जो कर्मों का आवरण है वह कर्म हटने पर, क्षय होने पर ही गुण प्रकट होते हैं। यह मंगल देशना पारसोला सम्मति भवन में आयोजित धर्म सभा में पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधी आचार्य श्री वर्धमान

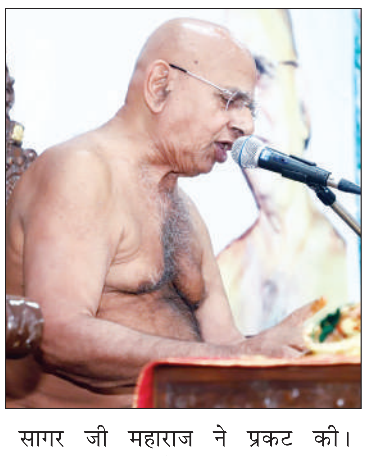

सागर जी महाराज ने प्रकट की। ब्रह्मचारी गज्जू भैया, राजेश पंचोलिया इंदौर अनुसार आचार्य श्री ने आगे बताया कि प्रतिदिन देव दर्शन, अभिषेक पूजन, स्वाध्याय, त्याग, तप, संयम आत्मा के चिंतन का महान पुरुषार्थ करने से आत्मा परमात्मा बन सकती है। अभी लोगों के पास पंच परमेष्ठी को स्मरण करने का गुणानुवाद करने का समय नहीं है।नमो सिद्धानम का एक छोटा मंत्र जाप आचार्य श्री ने दिया।

आचार्य श्री ने कहा कि भगवान द्वारा प्रतिपादित धर्म का पालन करें।मनुष्य जीवन सामान्य जीवन नहीं है कई वर्षों के संचित पुण्य भाग्य से मनुष्य जीवन मिलता है संसार रूपी चौराहे पर सही मार्ग का उपदेश देव शास्त्र गुरु देते हैं मन वचन काय पूर्वक धर्म के कार्य करना चाहिए धर्म कार्य से पुण्य अर्जित होता है मनुष्य पर्याय में चार कषाय को कम करना, हटाना चाहिए। आजकल लोगों के त्याग करने के भाव नहीं बनते, उपवास नहीं कर सकते इससे सरल उपाय यही है कि आप प्रतिदिन देव दर्शन अभिषेक पूजन स्वाध्याय करें। महामंडल विधान की भक्ति पूर्वक एकाग्रता से पूजन करने से इच्छाओं की पूर्ति सुख शांति और पुण्य मिलता है आचार्य श्री ने पांच इंद्रियों और विषय कषाय को कम करने की प्रेरणा दी। विगत दिनों से सिद्ध भगवान की पूजन में भगवान के गुण, रिद्धि, शुद्ध स्वरूप का गुणानुवाद कर रहे है इससे पुण्य प्राप्त कर मनुष्य जीवन सार्थक करने का प्रयत्न करे। **-राजेश पंचौलिया**

स्वयम्भू स्तोत्र-65 : मुनिश्री संधानसागर जी महाराज ने कहा- 'मानी नहीं-ज्ञानी बनो'

अमरावती (विश्व परिवार)। संत शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिव्य युवा तरुणाई के प्रखर खेळता मुनिश्री 108 संधानसागर जी महाराज ने कहा कि ज्ञानी सो मानी नहीं, मानी सो ज्ञानी नहीं। आजका व्यक्ति स्वाभियान के चक्कर में अभिमानी हो जाता है, अपने ही मान की पुष्टि में वह विनम्रता को भूल जाता है। पूज्यश्री ने कहा कि शरीर पर यदि नमक का पानी डाला जाये तो जलन वही होगी जहाँ कट लगा है। कट नहीं तो कितना भी नमक जलो जलन होने वाली नहीं। मुनि श्री जी ने कहा कि मान की पुष्टि को करने बाल वाले कारण तो इस जग में चारों ओर भरे पड़े है। मुनि श्री जी स्वयम्भू गीत पर प्रवचन करते हुये बोले कि कम गुणों को बढ़ाचढावर कहना स्तुति कहलाती। परन्तु भगवन के तो अनंत गुण है, उन गुणों को ही में बहने में अशक्य हूँ फिर भी आपको गुणों का कीर्तन करने से मेरी ही कीर्ति बहेगी, मेरे पापों का क्षय होगा। अंत में मुनि ही जीने हायकू लिया- प्रभुषद में वाणी काया के साथ मन नहीं है। मन वो

ताक में रख दोगे तबही वाली और शरीर प्रभु पद में लगेगा।

मुक्ता गिर में पहुँचेगे होली पर युगल मुनिराज के सान्निध्य में इस बार की होली मुक्तागिरी में होगी। मुनिश्री 108 संधानसागर जी महाराज जी ने बताया कि 24 मार्च को सामूहिक विधान होगा तथा 25 मार्च को पूर्णिमा के अवसर पर 1008 मंत्रो से सहस्त्रनाम शांतिधारा होगी एवं 1024 अर्द्ध भी चढाये जायेगे। मुनिव्दय का विहार कुण्डलपुर की ओर चल रहा है। इसी क्रम में 24-25 मार्च को पूज्यश्री मुक्तागिरी सिद्धक्षेत्र पर पहुँचको मुक्तागिरी प्रबंधकारणी कमेटी ने आकर मुगल मुनिराज के चरणों में श्री फल चढाया। पीकुण्डलपुर के इस विहार में अनेक लोग चलने को तैयार हुये है। सभी लोग भुक्तागिरी में विधान करेंगे।

-विद्यावाणी संकलन

कुंडलपुर में 16 अप्रैल को होगा आचार्य पदारोहण महामहोत्सव

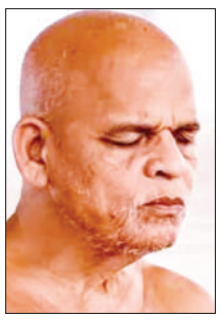

सागर (विश्व परिवार)। दिगंबर मानसरोवर के राजहंस आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की समाधि के उपरांत नए आचार्य पद का पदारोहण महामहोत्सव 16 अप्रैल को सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर में होगा। सर्वसम्मति से निर्यापक मुनि महाराजो के द्वारा यह तिथि निर्धारित की गई है। दिगंबर जैन पंचायत सभा सागर के अध्यक्ष मुकेश जैन ढाना ने बताया कि आचार्य संघ के सभी मुनि संघो और आर्यिका संघों का विहार कुंडलपुर की ओर चल रहा है और लगभग सभी मुनि संघ और आर्यिका संघ का कुंडलपुर में प्रवेश 10 अप्रैल तक होने की संभावना है चार मुनि संघ और कुछ आर्यिका संघ कुंडलपुर बिहार करते हुए पहुंच चुके हैं जबकि भावी आचार्य श्री 108 समयसागर महाराज अभी कुंडलपुर से 140 किमी दूर शहपुरा भिटौनी के पास चरगुवां में है। निर्यापक मुनि श्री योगसागर, मुनि श्री नियमसागर, मुनि श्री सुधासागर, मुनि श्री समतासागर, मुनि श्री प्रसादसागर, मुनि श्री अभयसागर, मुनि श्री संभवसागर और मुनि श्री वीरसागर के साथ मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज का बिहार निरंतर कुंडलपुर की ओर चल रहा है अगले 10 दिनों में संघ कुंडलपुर में एकत्रित होंगे दूसरी ओर कुंडलपुर में तैयारियां जोरों पर चल रही है।

संघ प्रमुख डॉ मोहन भागवत आचार्य पदारोहण महामहोत्सव में शामिल होने 16 अप्रैल को कुंडलपुर आएंगे। 16 मार्च को नागपुर में जैन समाज कं प्रतिनिधि मंडल को कुंडलपुर पहुंचने की सहमति दी।

सिद्धचक्र महामंडल विधान के चौथे दिन श्री आदिनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में इंद्र इंद्राणीयों ने 128 अर्घ्य समर्पित किए

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में चल रहे 8 दिवसीय श्रीसिद्ध चक्र महामण्डल विधान में आज मंगलवार को चौथे दिन भगवान शांतिनाथ की वृहद शांतिधारा का वाचन ब्रह्मचारी विजय भईया गुणायतन द्वारा किया गया ट्रस्ट मंदिर कमेटी के अध्यक्ष संजय जैन नायक ने बताया कि विधान में सैकडों श्रद्धालुओं ने आज पुष्पदंत भगवान का स्वर्ण कलशों से अभिषेक कर पूजा अर्चना की।

साथ ही आज की चमत्कारिक रिद्धि सिद्धि प्रदाता शांति धारा करने का सौभाग्य दिलीप निकुंज जैन गुढियारी को प्राप्त हुआ विधान की पूजा में चौथे वलय की आराधना करके इन्द्र इन्द्राणियों ने 128 श्रीफल अर्घ्य समर्पित किए। इस अवसर पर ब्रम्हचारी विजय भईया गुणायतन ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि भगवान की पूजा अर्चना करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है और सुख दुःख तो आते जाते हैं। अपने अपने कर्मो का फल सबको मिलता है। बड़े मंदिर में सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में ब्रह्मचारी विजय भईया के सान्निध्य में चल रहे सिद्धचक्र मण्डल विधान की मधुर भक्तिमय संगीत से महा अर्चना हुई, जिसमें प्रथम बार 300 श्रावक श्राविकाओं ने एक साथ महा आराधना की। सभी ने संगीतमय भजनों पर नृत्य भी किया इस अवसर पर ट्रस्ट कमेटी एवं कार्यकारणीगण के साथ साथ समाज के धर्म प्रेमी बंधु सदस्य उपस्थित थे। **-प्रणीत जैन**

सड़क दुर्घटना में घायलों की त्वरित मदद करने वाले 'गुड सेमेरिटंस' का हुआ सम्मान

रायपुर (विश्व परिवार)। सड़क दुर्घटनाओं में घायलों को त्वरित चिकित्सा उपलब्ध कराने वाले छह गुड सेमेरिटंस (नेक व्यक्ति) की पहचान कर सम्मानित किया गया. इसके साथ ही इन गुड सेमेरिटंस के फेटो राजधानी रायपुर के चौक-चौराहों में लगाए गए हैं, जिससे अन्य लोग भी प्रेरणा लेते हुए जरूरत के समय दुर्घटना में घायल लोगों की तत्काल मदद करें.

बता दें कि भारत देश में प्रति वर्ष सड़क दुर्घटना में लगभग डेढ़ लाख लोगो की मृत्यु होती है, जिसका प्रमुख कारण घायलों को त्वरित चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध नही होने के कारण होता है. सड़क दुर्घटना के दौरान प्रथम तीस मिनट का समय गोल्डन आवर कहलाता है. इस दौरान यदि घायल व्यक्ति को किसी भी प्रकार से हास्पिटल तक पहुंचा दिया जाता है या फिर चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध करा दिया जाता है तो घायल की जान बचाई जा सकती है. किन्तु अधिकांश सड़क दुर्घटनों में लोगों द्वारा मोबाइल से वीडियो फेटो बना लिया जाता है, किन्तु घायल की जान बचाने हेतु कोई उपाय नहीं किया जाता.

इसे ध्यान में रखते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संतोष सिंह ने सभी थाना प्रभारियों को निर्देशित किया है कि थाना क्षेत्र में घटित सड़क दुर्घटना में घायल को त्वरित सहायता पहुंचाने हेतु गुड सेमेरिटंस का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने एवं घायल को त्वरित सहायता पहुंचाकर जान बचाने वाले गुड सेमेरिटंस को प्रोत्साहित व पुरस्कृत करने के लिए निर्देशित किया गया है.

इसी क्रम में रायपुर जिले में घटित विभिन्न सड़क दुर्घटनाओं में घायलों की मदद करने वाले गुड सेमेरिटंस को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा मोंमेंटो व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया था.

वैशाली नगर जैन मंदिर पंचकल्याणक महोत्सव के पात्रों का किया सम्मान, जयकारों के बीच की सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी की गोद भराई

जयपुर (विश्व परिवार)। वैशाली नगर के श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में प्रथम तल पर प्रतिष्ठित होने जा रहे नव निर्मित जिनालय के 27 मार्च से 1 अप्रैल तक आयोजित होने वाले जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पात्रों का -राजस्थान जैन सभा सहित अन्य संस्थाओं एवं समाज बन्धुओं की ओर से सम्मान एवं गोद भराई की गई।

सभा के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन ने बताया कि भट्टारक जी की नसियां में आयोजित समारोह में पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव के सौधर्म इंद्र प्रवीण-प्रिया बडजात्या, प्रतीक जैन, मंजू शाह, सुनीता झाँझरी, निशा बडजात्या, रेशु जैन, अनीता जैन सहित अन्य इन्द्र-इन्द्राणियों का सम्मान किया गया। इस मौके पर धार्मिक विधि विधान के साथ मंत्रोच्चार करते हुए जयकारों के बीच गोले एवं पतासों से गोद भराई की गई।

राजस्थान जैन सभा के महामंत्री मनीष बैद, मंत्री विनोद जैन कोटखावदा, कार्यकारिणी सदस्य प्रदीप जैन, अनिल छाबडा सहित संगिनी फारम जेएसजी मेट्रो की संस्थापक अध्यक्ष दीपिका जैन कोटखावदा, रचना बैद, जौहरी बाजार दिगम्बर जैन महिला समिति की अध्यक्ष डॉ शीला जैन,राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश मंत्री भारत भूषण जैन,प्रदेश संयुक्त महामंत्री पूनम चांदवाड झोटवाडा, जयपुर ग्रामीण जोन के महामंत्री अमन जैन कोटखावदा ने खोपरे का गोला, पतासों से गोद भराई की। इन्द्र - इन्द्राणियों को माला, दुपट्टा व प्रतीक चिह्न भेट कर सम्मान किया।इस मौके पर सुनिता अजमेरा, मिनाक्षी सोगानी, कल्पना वैद सहित बड़ी संख्या में महिला मण्डलो की सदस्याऐ भी शामिल हुई।

घर बैठे मतदाता सूची में जुड़वाएं अपना नाम

रायपुर (आरएनएस)। चुनाव आयोग ने आगामी लोकसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान कर दिया है. जिसमें वोट करने के लिए आपके पास वोटर आईडी कार्ड होना चाहिए. लेकिन जरा सोचिए जिनके पास ये नहीं है वो कैसे वोट करेंगे? क्या वो वोट कर पाएंगे? ऐसे में अगर आपकी उम्र 18 साल या इससे अधिक हो गई है और आपके पास भी वोटर आईडी कार्ड नहीं है, तो आप घर बैठे ही वोटर लिस्ट में अपना नाम जुड़वा सकते हैं. आइए हम आपको तरीका बताते हैं-

ऐसे करें आवेदन : सबसे पहले आधिकारिक वेबसाइट httpsÑ//www.nvsp.in/ पर जाएं। होमपेज पर आपको New registration for general electors दिखेगा, उस पर क्लिक करें। इसके बाद आपको Sign up करना होगा। इसके बाद वहां मांगी गई सभी डीटेल्स दर्ज करें। अब आपको अपना mobile number, password, captcha और OTP डालकर रजिस्ट्रेशन करना होगा। इसके बाद फॉर्म 6 सब्मिट कर दें। **वोटर आईडी खोने पर क्या करें :** अगर आपका वोटर आईडी कार्ड कहीं खो गया है तो आप आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर इसे डाउनलोड कर सकते हैं। **ऐसे डाउनलोड करें वोटर आईडी कार्ड :** सबसे पहले आधिकारिक वेबसाइट httpsÑ//www. nvsp.in/ पर जाएं. वहां आपको Login का ऑप्शन दिखेगा, उस पर क्लिक कर मोबाइल नंबर, पासवर्ड और कैप्चा डाले. इसके बाद आपके फोन पर एक OTP आएगा, वहां 'Verify & Login' पर क्लिक करें. इसके बाद 'E-EPIC Download' टैब पर क्लिक करें. यहां आपको EPIC नंबर भरकर, अपना राज्य चुनें. आपको अपने स्क्रीन पर आईडी कार्ड दिख जाएगी. वहां होम पेज पर 'Download e-EPIC' का ऑप्शन दिख जाएगा. इसे डाउनलोड कर लें. अगर आपके पास वोटर आईडी कार्ड नहीं है तब भी आप भारत सरकार द्वारा जारी कई सरकारी डॉक्यूमेंट का उपयोग कर वोट डाल सकते हैं. **इन डॉक्यूमेंट का उपयोग कर डाल सकते हैं वोट :** आधार कार्ड, राशन कार्ड, मनरेगा जॉब कार्ड, बैंक पासबुक, बीमा स्मार्ट कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, पासपोर्ट, पेंशन डाक्यूमेंट, नेशनल पॉपुलेशन रजिस्टर (NPR) की ओर से जारी स्मार्ट कार्ड। **वोटर लिस्ट में नाम कैसे चेक करें :** अगर आपको चेक करना है कि वोटर लिस्ट में आपका नाम है या नहीं तो आप चुनाव आयोग की वेबसाइट httpsÑ//eci.gov.in/ या मतदाता हेल्पलाइन 1950 पर कॉल कर सकते हैं. इसके अलावा आप हेल्पलाइन नंबर 1950 पर कॉल कर सकते हैं. इसके अलावा वोटर आईडी लिस्ट में नाम जुड़वाने के लिए या किसी तरह के बदलाव के लिए भी आप httpsÑ//eci.gov.in/ पर जाकर बदलाव कर सकते हैं. **कब तक कर सकेंगे अपलाई :** आपको बता दें कि आचार संहिता लागू होने के बाद लगभग 10 दिन तक वोटिंग लिस्ट में नाम जुड़वाया जा सकता है. यानी कि अगर किसी का वोटर लिस्ट में नाम नहीं जुड़ा है. तो उसके पास नाम जुड़वाने के लिए 26 मार्च तक का समय है.

डीपीआई ने सामूहिक नकल मामले में 9 शिक्षकों को किया निलंबित

शासकीय कन्या उमावि बरमकेला का मामला

रायपुर (आरएनएस)। लोक शिक्षण संचालनालय (डीपीआई) ने सामूहिक नकल मामले में बड़ी कार्रवाई करते हुए 9 शिक्षकों को निलंबित कर दिया है। शासकीय कन्या उच्च विद्यालय बरमकेला में 18 मार्च को सामूहिक नकल की शिकायत मिली थी। एसडीएम ने 19 मार्च को इसकी जांच की। जांच में पता चला कि 12वीं हिंन्दी परीक्षा में कुल 246 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 5 अनुपस्थित थे। 5 कक्षाओं में परीक्षा का आयोजन हो रहा था, सभी कक्ष में नकल कराया जा रहा था। जांच के दौरान केंद्राध्यक्षों समेत 8 प्रर्यवेक्षक नकल मामले में शामिल पाये गए। केंद्र अध्यक्षक समेत 9 शिक्षकों को सस्पेंड कर दिया गया। शिक्षकों निलंबन अवधि में नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ता की पात्रता होगी। निलंबित कर्मचारियों का मुख्यालय कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, रायगढ़ नियत किया गया है।

इन पर गिरी निलंबन की गाज : हेमंत पटेल, शिक्षक, पूर्व माध्यमिक शाला, बरमकेला, दिलीप सिदार, सहायक शिक्षक (एल.बी) प्रा.शा. हास्टलपारा बरमकेला, श्यामा सिदार, प्रधान पाठक प्रा.शा. पुरैना, गिरधारी पटेल, सहायक शिक्षक विज्ञान, शा.क.उ.मा.वि. बरमकेला, चन्द्रशेखर वैष्णव व्याख्याता शा.क.उ.मा.वि. बरमकेला, दयासागर प्रधान, व्याख्याता, शा.उ.मा.वि. सांकरा, अंजली सिदार, सहायक शिक्षक (एल.बी.) प्रा. शा.कनकीडीपा, लोकनाथ साहू सहायक शिक्षक, (एल.बी.) प्रा.शा. भंवरपुर, युवधेश पटेल, सहायक शिक्षक (एल.बी.) प्रा.शा. बुन्देली।

संक्षिप्त समाचार

गढ़चिरौली के जंगलों में नक्सल से मुठभेड़

बीजापुर/सुकमा(विश्व परिवार)। लोकसभा चुनाव से पहले नक्सली बड़ी वारदात को अंजाम देने का लगातार प्रयास कर रहे हैं। बस्तर संभाग में लगातार हमले के बाद अब नक्सलियों का मूव्हमेंट महाराष्ट्र सीमा में दर्ज किया जा रहा है। छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र सीमा पर कोलामार्का के जंगलों में सुरक्षाबलों ने नक्सलियों के मंसूबों पर पानी फेर दिया। दरअसल, छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र सीमा पर पुलिस और नक्सलियों के बीच जबरदस्त मुठभेड़ हुई है। दोनों तरफ से हुई गोलीबारी में 36 लाख के चार इनामी नक्सली मारे गए। हालांकि, सर्चिंग के बाद जवानों ने मौके से एके 47 समेत कई हथियार बरामद किया है। यह मुठभेड़ गढ़चिरौली के कोलामार्का के जंगलों में हुई है। दरअसल, गढ़चिरौली पुलिस को छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र सीमा पर कोलामार्का के जंगलों में बड़े नक्सलियों की मौजूदगी की खबर मिली। इस पर जवानों ने नक्सलियों को घेरने सर्चिंग अभियान शुरू किया। सी-60 कमांडो ने कोलामार्का के जंगलों में नक्सलियों को घेर लिया। नक्सलियों ने अपने आप को घिरा पाकर जवानों पर फायरिंग शुरू कर दी। सी-60 कमांडो के जवानों ने भी जवाबी कार्रवाई करते हुए मुंहतोड़ जवाब दिया। सी-60 कमांडो के जवानों ने मुठभेड़ में बड़ी कामयाबी हासिल करते हुए चार नक्सलियों को मार गिराया। मुठभेड़ में नक्सली डीवीसी मेंबर वर्गीश, डीवीसी मंगतू, प्लाटून सदस्य कुरसम राजू और प्लाटून सदस्य वेंकटेश मारे गए। ये सभी माओवादी तेलंगाना राज्य समिति के सदस्य थे।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने ली बैंकर्स की बैठक

बालोद(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल ने लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के मद्देनजर बालोद जिले के बैंकर्स की बैठक लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि निर्वाचन कार्य के सफल संपादन में बैंकर्स की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। श्री चन्द्रवाल ने कहा कि बैंकर्स लोकसभा चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों का खाता अपनी शाखाओं में प्राथमिकता के साथ खुलवाएं। उन्होंने बैंकर्स को लोकसभा आम निर्वाचन के दौरान खाताधारकों के खाते में सामान्य लेन-देन में अचानक वृद्धि होने पर उसका पूरी गंभीरता से निगरानी करने के निर्देश दिए। श्री चन्द्रवाल ने बैंकर्स को आवश्यकतानुसार अपने शाखा में चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों के खाते जीरो बैलेंस में खोलने एवं प्रत्याशियों के बैंकिंग कार्य को प्राथमिकता के साथ करने के निर्देश दिए। इसके लिए उन्होंने जरूरत पड़ने पर पृथक से काउंटर बनाने के निर्देश भी दिए। उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री चन्द्रकांत कौशिक ने कहा कि निर्वाचन कार्य के अंतर्गत बैंकर्स की ड्यूटी माइक्रो आब्जर्वर के रूप में लगाई जाएगी। इसके लिए उन्होंने बैंक अधिकारियों को जानकारी भी देने को कहा। बैठक में संयुक्त कलेक्टर एवं व्यय अनुवीक्षण के नोडल अधिकारी श्रीमती पूजा बंसल सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

जल जीवन मिशन से पानी की सुविधा नहीं, सलोरा क्षेत्र के लोग परेशान

कोरबा(विश्व परिवार)। कटघोरा विकासखंड के सलोरा क्षेत्र में इस गर्मी में लोग हैरान हैं कि उन्हें जल जीवन मिशन का पानी कब मिलेगा। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग ने योजना का क्रियान्वयन कराया जरूर है लेकिन नलों से पानी आने का रास्ता साफ नहीं हुआ है। ग्रामीण बताते हैं कि टेस्टिंग की प्रक्रिया पूरी होने के बावजूद सुविधा मुहैया नहीं कराई गई है। जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर सलोरा गांव में 500 के आसपास घर हैं जहां पर जल जीवन मिशन से स्वच्छ और शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने का मसौदा तैयार किया गया। पीएचईडी ने इसके लिए योजना का क्रियान्वयन ठेकेदार से कराया। पाइप लाइन बिछाने के साथ नल कनेक्शन दे दिए गए, दूसरी व्यवस्थाएं भी पूरी कर ली गई। इतना सबकुछ होने पर लोगों को लग रहा था कि इन नलों से पानी प्राप्त करते हुए देखेंगे लेकिन यह सोचना बेकार साबित हुआ। योजना को पूर्ण हुए अरसा हो चुका है लेकिन नतीजे दूर हैं। मीडिया से जुड़े लोगों ने आज यहां का जायजा लिया। स्थानीय लोगों से बातचीत की गई और योजना को जानने की कोशिश की। ग्रामीणों ने अफसोस के साथ कहा कि गर्मी से पहले जो सुविधा प्राप्त हो जानी चाहिए थी वह अब तक दूर की कौड़ी बनी हुई है। गर्मी में उन्हें दूसरे विकल्पों से पानी प्राप्त करना पड़ रहा है। लोगों की नाराजगी इस बात को लेकर रही कि भारत सरकार प्राथमिकता के अंतर्गत जिस जल जीवन मिशन को लांच किये हुए हैं, उससे लोगों को लाभ दिलाने के मामले में यहां का तंत्र उदासीन बने हुए हैं।

जितनी अच्छी होगी तैयारी, उतना ही अच्छा होगा चुनाव- कलेक्टर

मतदान दलों की केंद्रों में पहुंच और वापसी समय पर करवाने की व्यवस्था को सुनिश्चित करें

जगदलपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी विजय दयाराम के. ने कहा कि निर्वाचन की प्रारंभिक तैयारी जितना अच्छी करेंगे, उतना ही अच्छे से निर्वाचन के कार्य को संपादित कर सकेंगे। सभी सेक्टर अधिकारी रूट चार्ट के आधार पर आवश्यक तैयारी कर मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर लें, मतदान दलों की केंद्रों में पहुंच और वापसी समय पर करवाने की व्यवस्था को सुनिश्चित करें। कलेक्टर विजय मंगलवार को प्रेरणा सभाकक्ष में लोकसभा निर्वाचन हेतु बनाए गए सेक्टर अधिकारियों की प्रशिक्षण कार्यक्रम में निर्देश दे रहे थे। कलेक्टर ने लोकसभा निर्वाचन हेतु बनाए गए सेक्टर अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी सेक्टर अधिकारियों को अपने क्षेत्र में वनरेबल मैपिंग की जानकारी होनी चाहिए। सेक्टर अधिकारी को मॉक पोलिंग समय पर करवाने, रिपोर्टिंग निर्धारित समय पर करने, सेक्टर अधिकारी व पीठासीन की डायरी में डाटा में कोई असमानता नहीं हों और संभावित आवश्यकता को देखते हुए अतिरिक्त ईव्हीएम मशीन की व्यवस्था भी सुनिश्चित करना होगा। उन्होंने पहली बार सेक्टर अधिकारी बनने वाले अधिकारियों से चर्चा कर सजगता के साथ दायित्व निर्वहन किए जाने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने मतदान दलों को दी जाने वाले तीन चरणों को प्रशिक्षण में सेक्टर अधिकारियों को उपस्थित रहने के निर्देश दिए। प्रशिक्षण में सेक्टर अधिकारियों को मतदान केंद्रों की व्यवस्था, मतदान दलों को सामग्री वितरण पश्चात मतदान केंद्रों के लिए रवानगी, मतदान के दिन सही समय पर मॉक पोल करवाने, समय-समय मतदान की रिपोर्टिंग, ईवीएम मशीन सहित मतदान दलों की सकुशल वापसी, समय पर पूरा फॉर्मेट का संधारण, सीलिंग सहित अन्य आवश्यक जानकारी दी गई। साथ ही विधानसभा निर्वाचन में बने सेक्टर अधिकारियों से उनके अपने अनुभव के आधार पर आई समस्या पर भी चर्चा किया गया। साथ ही ईव्हीएम मशीन का भी हैंड ऑन प्रशिक्षण भी दिया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ प्रकाश सर्वे, नोडल अधिकारी प्रशिक्षण सुनील शर्मा, सभी अनुविभागीय अधिकारी राजस्व सहित सभी सेक्टर अधिकारी उपस्थित थे।

कलेक्टर ने ली समय सीमा की बैठक

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। लोकसभा निर्वाचन-2024 के तहत आदर्श आचार संहिता का अनुपालन सुनिश्चित करें। वहीं निर्वाचन दायित्वों को पूरी जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन करें, सभी मतदान केन्द्रों पर पूर्व से ही मूलभूत सुविधाएं उपलब्धता कराने की कार्यवाही प्राथमिकता के साथ करें। उक्त निर्देश कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री मयंक चतुर्वेदी द्वारा संयुक्त जिला कार्यालय भवन के सभाकक्ष में आयोजित समय सीमा की बैठक के दौरान अधिकारियों को दिए गये। इसके साथ ही बैठक दौरान कलेक्टर ने एफएसटी, एसएसटी, वीएसटी, विडियों अवलोकन टीम व्यव लेखा जांच दल, मतदान दलों का प्रशिक्षण, मतदान दलों का गठन, व्यव प्रेक्षक, मीडिया प्रमाणन एवं अनुवीक्षण संबंधी कार्यों की जानकारी चाही और दिशा निर्देश दिए।

निर्वाचन कार्य में त्रुटि सुधार की कोई गुंजाइश नहीं, अधिकारी सजगता व सतर्कता के साथ करें सौंपे गए दायित्वों का निर्वहन

जिला निर्वाचन अधिकारी ने नोडल अधिकारियों की बैठक लेकर दी समझाइश

कांकेर(विश्व परिवार)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा शनिवार 16 मार्च को लोकसभा निर्वाचन-2024 के कार्यक्रमों की घोषणा कर दी है, इसके साथ ही आदर्श आचरण संहिता लागू हो गई है। निर्वाचन संबंधी दायित्वों के निर्वहन के लिए जिले में नियुक्त किए गए नोडल अधिकारियों एवं सहायक नोडल अधिकारियों की बैठक लेकर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अभिजीत सिंह ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह अतिमहत्वपूर्ण कार्य है, जिसे सभी को पूरी सजगता, सतर्कता, निष्पक्षता एवं सावधानीपूर्वक निर्वहन करना होता है। उन्होंने आगे कहा कि निर्वाचन कार्य के किसी भी स्तर में किसी प्रकार के त्रुटि-सुधार की कोई गुंजाइश नहीं होती, क्योंकि यह ''जीरो टोलेरेंस'' वाला कार्य है। उन्होंने बैठक में निर्वाचन हेतु गठित सभी समितियों की विस्तृत समीक्षा करते हुए अब तक की गई तैयारियों की जानकारी ली। मतदान कार्य में यथासंभव नहीं ली जाएगी 55 वर्ष से अधिक आयु के कर्मचारियों से ड्यूटी- कलेक्टोरेट सभाकक्ष में आज सुबह 10.30 बजे से आहूत बैठक में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि आयोग द्वारा जारी निर्वाचन कार्यक्रम के अनुसार कांकेर लोकसभा क्षेत्र अंतर्गत आगामी 28 मार्च से नाम निर्देशन प्रारंभ होगा तथा मतदान 26 अप्रैल को सम्पन्न होगा। उन्होंने कहा कि मतदान सम्पन्न कराने वाली पोलिंग पार्टी में 55 वर्ष से अधिक आयु वाले शासकीय सेवकों की ड्यूटी यथासंभव नहीं लगाई जाएगी। उन्होंने इस परिप्रेक्ष्य में आवश्यक कार्यवाही करने उप जिला निर्वाचन अधिकारी को निर्देशित किया। साथ ही प्रत्येक शासकीय कार्यालय से शासकीय कैलेण्डर सहित विभिन्न योजनाओं पर आधारित बैनर, पोस्टर, फ्लेक्स, बुकलेट, ब्रोशर आदि को तत्काल हटवाने और इस आशय की जानकारी निर्वाचन शाखा में देने के निर्देश दिए। जिला निर्वाचन अधिकारी ने गत विधानसभा निर्वाचन-2023 में शहरी क्षेत्रों में 65 प्रतिशत से कम और ग्रामीण क्षेत्रों में 70 प्रतिशत से कम वोटिंग वाले मतदान केन्द्रों में संबंधित सेक्टर अधिकारियों, पंचायत सचिवों और बीएलओ के माध्यम से उसकी जानकारी लेने व तद्नुसार वहां मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने हेतु निर्देशित किया। कलेक्टर ने जिले में स्थित सभी 727 मतदान केन्द्रों में मूलभूत आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सभी जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि मतदान दिवस को ग्रीष्मकालीन मौसम को देखते हुए छांव, शीतल पेयजल, बिजली, पंखे, रैम्प आदि की व्यवस्था अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराएं।

रेल सुविधा नहीं, कम से कम आरक्षण केंद्र तो मुहैया कराये रेलवे

कोरबा(विश्व परिवार)। राजस्व जिले कोरबा के सबसे बड़े कस्बे कटघोरा को भले ही नेशनल हाईवे से जोड़ दिया गया है लेकिन रेल सुविधा से इलाका वंचित है। नागरिक चाहते हैं कि दूसरे प्वाइंट से यात्रा की शुरुआत करने और इस सिलसिले में आरक्षित रेल टिकट की व्यवस्था के लिए कटघोरा में ही कम्प्यूटरीकृत टिकट आरक्षण केंद्र प्रारंभ किया जाए। विधायक ने इसके लिए अनुशंसा की है। कुछ वर्ष पहले लोगों की मांग पर लोगों ने जनपद पंचायत भवन में रेल टिकट आरक्षण केंद्र खोला था जो बाद में रेलवे के ही रवैये के कारण बंद हो गया। तर्क दिया गया कि राजस्व नहीं मिलने से इस तरह का कदम उठाया गया। वर्तमान में इलाके की आबादी बढने और भिन्न-भिन्न काम से लोगों का आवागमन छत्तीसगढ़ सहित दूसरे राज्यों में ट्रेन के जरिए हो रहा है। ऐसे में उन्हें या तो ऑनलाइन टिकट करानी पड़ रही है या फिर मैन्युअल टिकट आरक्षण के लिए कोरबा या बिलासपुर तक की दूरी तय करनी पड़ रही है। यह महंगा सौदा पड़ रहा है। जोनल रेल उपभोक्ता सलाहकार समिति के सदस्य संजय मित्तल ने डीआरएम को इसके लिए पत्र लिखा है। विधायक द्वारा की गई अनुशंसा भी इसमें संलग्र की गई है। मित्तल ने मांग की है कि कटघोरा में रेल आरक्षण सुविधा शुरू की जाए। इसके लिए भवन, बिजली और अन्य सुविधा उपलब्ध करा दी जाएगी। उन्होंने अधिकारी को बताया कि कटघोरा से लेकर अंबिकापुर तक बीच में कहीं भी लोगों के लिए रेलवे ने कोई सुविधा उपलब्ध नहीं कराई है। इससे इन्हें कुल मिलाकर परेशान होना पड़ रहा है। मित्तल ने कहा है कि भारत सरकार सबका साथ सबका विकास के दावे कर रही है।

कलेक्टर ने छात्रावास एवं जल जीवन मिशन के कार्यों का किया निरीक्षण

कलेक्टर बरमकेला-सरिया क्षेत्र के दौरे पर रहे

सारंगढ़-बिलाईगढ(विश्व परिवार)(विश्व परिवार)। कलेक्टर धर्मेश कुमार साहू बरमकेला एवं सरिया क्षेत्र के दौरे पर रहे। इस दौरान कलेक्टर ने झनकपुर स्थित पोस्ट मैट्रिक आदिवासी कन्या छात्रावास का निरीक्षण किया एवं छात्रावास के रजिस्टर में बच्चों की उपस्थिति एवं अन्य जानकारियों की जांच की कर छात्रावास प्रबंधन और कर्मचारियों को आवश्यक निर्देश दिए। इसके अलावा उपस्थित विभागीय अधिकारी को छात्रावास निरीक्षण का रिपोर्ट बनाकर रखने के लिए कहा। इसके साथ ही कलेक्टर श्री साहू ने छात्रावास की छात्रों से मुलाकात किए एवं उनसे उनकी समस्याओं के बारे में पूछा, जिस पर छात्राओं ने साईकिल स्टैण्ड की मांग की एवं मनोरंजन के लिए टीवी की मांग किए, जिस पर कलेक्टर ने आवश्यक करने हेतु आश्वस्त किया। इसके पश्चात् कलेक्टर ने जल जीवन मिशन अंतर्गत चले रहे निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया। श्री साहू ने इस निरीक्षण में ग्राम बिलाईगढ़ (स) के निर्माणाधीन पानी टंकी का निरीक्षण किया एवं उपस्थित विभागीय अधिकारी को गुणवत्तापूर्ण कार्य करने हेतु निर्देशित किया। इसके अलावा ग्राम भिखमपुरा स्थित नवनिर्मित पानी टंकी कार्य का निरीक्षण किया एवं शेष कार्यों को समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिए।

महिलाओं का लैगिक उत्पीड़न विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला सम्पन्न

गरियाबंद(विश्व परिवार)। वन विभाग के ऑक्शन हॉल में महिलाओं का लैगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध और प्रतितोष) अधिनियम 2013 एवं अनैतिक व्यापार, महिलाओं तथा बच्चों की टैफिकिंग रोकथाम के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विशेष अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश श्री यशवंत वासनीकर द्वारा कार्यस्थल पर महिलाओं का लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध और प्रतितोष) अधिनियम 2013 के तहत कार्यस्थल पर गठित समिति का सूचना पटल लगाने को कहा। उन्होंने पाक्सों एक्ट के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई। इस दौरान अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती तेजेश्वरी देवी देवांगन ने कहा कि आज की महिलाएं पहले की अपेक्षा आत्मनिर्भर हो चुकी है। तथा महिलाओं का लैंगिक उत्पीड़न अधिनियम 2013 अंतर्गत आंतरिक शिकायत समिति गठन के संबंध में जानकारी दी। न्यायिक मजिस्टेड्ट प्रथम श्रेणी गरियाबंद श्री प्रशांत कुमार देवांगन ने महिलाओं के साथ होने वाले यौन उत्पीड़न के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट द्वारा जारी विशाखा गाईडलाईन के आधार पर कार्यवाही के बारे में बताया। इस अवसर पर महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री अशोक कुमार पाण्डेय ने महिला एवं बाल विकास का गठन के उद्देश्य एवं उनके कार्यो के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि महिला एवं बाल विकास विभाग 04 स्तंभो पर कार्य करता है। पहला बच्चों का विकास, दूसरा बच्चों का सुरक्षा, तीसरा महिलाओं का विकास एवं चौथा महिलाओं का सुरक्षा की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि गठित समिति का सूचना पटल पर चस्पा करना चाहिए एवं जिस विभाग में आंतरिक शिकायत समिति गठन नही करने की स्थिति में 50 हजार रूपये का जुर्माना का प्रावधान है।

अनुविभागीय अधिकारी जयंत नाहटा ने ली नोडल अधिकारियों की समीक्षा बैठक

निर्वाचन दायित्वों को गंभीरतापूर्वक निर्वहन करने के दिये निर्देश

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री मयंक चतुर्वेदी के निर्देशानुसार आज संयुक्त जिला कार्यालय भवन के भू-तल स्थित सभा कक्ष में एसडीएम श्री जयंत नाहटा के द्वारा लोकसभा निर्वाचन 2024 के लिए निर्वाचन संबंधी नियंत्रणकर्ता अधिकारी द्वारा नोडल अधिकारियों की बैठक ली। बैठक में सभी निर्वाचन दायित्वों को गंभीरतापूर्वक निर्वहन किये जाने का निर्देश दिया। उन्होने इस दिशा में समय पूर्व संबंधित कार्यों के लिए तैयारी पूरा करने का निर्देश अधिकारियों को दिया। बैठक के दौरान उन्होंने लोकसभा निर्वाचन के लिए रूट चार्ट, मतदाता सूची की चिन्हित प्रति तैयार करने, वाहनों का आंकलन एवं अधिग्रहण करने, प्रेक्षकों के लिए आवश्यक व्यवस्था, आदर्श आचार संहिता से संबंधित मसलों का निराकरण, मतदान हेल्पलाइन से संबंधित पर्यवेक्षण, मीडिया प्रमाणन एवं अनुवीक्षण संबंधी कार्य, मतदान दलों एवं मतगणना दलों का गठन एवं प्रशिक्षण, सेक्टर अधिकारियों का प्रशिक्षण, स्ट्रॉग रूम की व्यवस्था एवं सीलिंग संबंधी कार्य,नाम निर्देशन दाखिला हेतु आवश्यक व्यवस्था, अभ्यर्थियों को सभा रैली, वाहन इत्यादि के लिए अनुमति देना,सम्पति विरूपण के तहत कार्यवाही, अभ्यर्थियों का व्यय लेखा संबंधी कार्य,कानून व्यवस्था, उड़नदस्ता दल एवं व्यय निगरानी दलों का गठन, सामग्री वितरण केन्द्र, मतगणना केन्द्र से संबंधित व्यवस्था, नियंत्रण कक्ष की व्यवस्था और मतदान हेल्पलाईन का पर्यवेक्षण संबंधी पूर्व कार्यों का गहन समीक्षा करके नियुक्त नोडल अधिकारियों को सभी कार्यों को सुचारू रूप से संपादित करने के निर्देश दिये। बैठक में अपर कलेक्टर श्री राजेश पात्रे, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अभिषेक तिवारी सहित नोडल अधिकारी उपस्थित थे।

मुठभेड़ में मारे गये दो नक्सली

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। दंतेवाड़ा बीजापुर के सीमावर्ती इलाके थाना किरंदुल क्षेत्रान्तर्गत पुरंगेल, गमपुर के जंगल में पुलिस और माओवादियों के बीच हुई मुठभेड़ में एक महिला नक्सली सहित दो नक्सलियों के ढेर होने की खबर है। पुलिस ने मौके से दो हथियार भी बरामद किया है। मुठभेड में कई नक्सलियों के घायल होने की भी संभावना है। मारे गये नक्सलियों की पहचान की जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार दिनांक 18/03/2024 को दंतेवाड़ा एवं बीजापुर के सीमावर्ती क्षेत्र में थाना किरंदुल क्षेत्रान्तर्गत पुरंगेल गमपुर के जंगल में सशस्त्र माओवादियों की उपस्थिति की आसूचना पर डीआरजी एवं बस्तर फाइटस दंतेवाड़ा, तथा सीआरपीएफ 111, 230, 231 बटालियन की यंग प्लाटून की संयुक्त टीम नक्सल विरोधी अभियान पर निकली थी। नक्सल गश्त सर्च अभियान के दौरान मंगलवारक को पुलिस और माओवादियों के बीच थाना किरंदुल क्षेत्रान्तर्गत पुरंगेल, गमपुर के जंगल में मुठभेड़ मे एक पुरुष माओवादी व एक महिला माओवादी को मार गिराया है। मुठभेड़ के बाद जवानों को मौके से एक महिला तथा एक पुरूष नक्सली का शव बरामद किया है साथ ही दो बंदूक,भारी मात्रा में गोला बारूद एवं दैनिक उपयोग की सामग्री जप्त की है। घटना स्थल के आसपास सघन सर्चिंग जारी है।

व्यापार समाचार

चिकित्सा उपकरणों के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एचएमडी निरंतर अग्रसर

रायपुर। डिस्पोज़ेबल और ऑटोडिसेबल सिरिंज बनाने वाली दुनिया की अग्रणी कंपनी हिन्दुस्तान सिरिंजिस एंड मेडिकल डिवाइसिस (।ॅरुष्ठ) ने सबसे उन्नत व अपनी तरह का पहला डिस्पोजेक्ट सिंगल यूज़ सिरिंज, सेफ्टी नीडल के साथ रायपुर में लांच किया है। यह उत्पाद चिकित्सा उपकरणों के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर तथा वैश्विक शक्ति बनाने में मददगार साबित होगा। एचएमडी (।ॅरुष्ठ) आने वाले दिनों में देशभर में डिस्पोजेक्ट लॉन्च करेगा । भारत चिकित्सा उपकरणों के विनिर्माण एवं निर्यात के लिए आत्मनिर्भर केन्द्र बनने हेतु प्रयासरत है और यह लांच इसी दिशा में देश को मजबूत करेगा। अपेक्षा है कि डिस्पोजेक्ट स्वास्थ्य कर्मियों को लगने वाली चोटों व उनसे जुड़ी लागत को कम करते हुए स्वास्थ्य उद्योग पर सकारात्मक प्रभाव कायम करेगा। एचएमडी 13 से 15 मार्च 2024 तक मुंबई ऐक्ज़ीबिशन सेंटर, गोरेगांव में एमैड पैविलियन, जी10, एच-10 में डिस्पोजेक्ट को प्रदर्शित करेगी। एचएमडी का लक्ष्य है क्रांतिकारी डिस्पोजेक्ट सेफ्टी सिरिंज के माध्यम से स्वास्थ्य कर्मियों को पेश आने वाली नीडल स्टिक इंजरी से बचाना, संक्रमण नियंत्रण की लागत घटाना और स्वास्थ्य उद्योग पर दीर्घकालिक सकारात्मक वित्तीय प्रभाव कायम करना। देश में निर्मित तकनीकी रूप से उन्नत उत्पाद भारत को अनुसंधान एवं विकास के मोर्चे पर मजबूती प्रदान करेंगे।

रियलमी ने कम रोशनी में फोटोग्राफी के मानकों को बदलते हुए 18,999 रुपये की शुरुआती कीमत में रियलमी नार्ज़ो 70 प्रो 5जी पेश किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में सबसे विश्वसनीय स्मार्टफोन सेवा प्रदाता, रियलमी ने अपने अपनी नार्ज़ो सीरीज में नया स्मार्टफ़ोन - रियलमी नार्ज़ो 70 प्रो 5जी पेश किया है। रियलमी की नार्ज़ो सीरीज में यूज़र्स को बेहतरीन अनुभव प्रदान करने के लिए स्मार्टफोन की एक स्टाइलिश श्रृंखला आती है। भारत में लगातार बढ़ते हुए 16 मिलियन यूज़र्स के साथ रियलमी की नार्ज़ो सीरीज अगली पीढ़ी के स्मार्टफ़ोन पेश करती है। इन डिवाइसेज को आधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रीमियम फ़ीचर्स के साथ डिज़ाइन किया गया है ताकि यूज़र्स शिखर पर रहते हुए अपने व्यक्तित्व का प्रदर्शन कर सकें। नए रियलमी नार्ज़ो 70 प्रो 5जी का उद्देश्य लो-लाइट फोटोग्राफी में नए मानक स्थापित करना और इनोवेशन एवं उत्कृष्टता की रियलमी की प्रतिबद्धता को मजबूत करना है। रियलमी और अमेज़न ने ग्राहकों को रियलमी की नार्ज़ो श्रृंखला के साथ खरीदारी का शानदार अनुभव प्रदान करने के लिए रणनीतिक सहयोग किया है। रियलमी की नार्ज़ो सीरीज केवल अमेज़न.इन पर उपलब्ध है और अपने यूज़र्स को आधुनिक टेक्नोलॉजी प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। अपनी ड्युअल प्लेटफ़ॉर्म की रणनीति के अनुरूप, रियलमी ने मार्च 2023 में अमेज़न पर अपना पहला ऑनलाइन स्टोर लॉन्च किया। रियलमी नार्ज़ो 70 प्रो 5जी एक पॉवर-पैक्ड स्मार्टफोन है जिसमें स्मार्टफोन का अनुभव बेहतर बनाने के लिए शानदार फ़ीचर्स दिए गए हैं। इसमें बेहतरीन, ब्लर-फ्री फोटो लेने के लिए ऑप्टिकल इमेज स्टेबिलाइज़ेशन (ओआईएस) के साथ भारत का पहला 50 मेगापिक्सल सोनी आईएमएक्स890 कैमरा दिया गया है।

डेक्कन गोल्ड माइन्स लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी, डीजीटीपीएल ने तंज़ानिया में खोजा सोना; लिथियम के लिए प्रॉस्पेक्टिंग लाइसेंस का इंतज़ार

नईदिल्ली (एजेंसी)। सोने के अन्वेषण और खनन से जुड़ी भारत की एकमात्र सूचीबद्ध कंपनी (स्क्रिप कोड: DECNGOLD 7 512068 7 INE945F01025) डेक्कन गोल्ड माइन्स लिमिटेड (डीजीएमएल) की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी डेक्कन गोल्ड तंज़ानिया प्राइवेट लिमिटेड (डीजीटीपीएल) ने तंज़ानिया के एन्ज़ेगा ङ्क टेबोरा ग्रीनस्टोन बेल्ट में सोने की खोज की है। इसके अलावा, डेक्कन गोल्ड तंज़ानिया प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में 100.49 वर्ग किमी के क्षेत्र को कवर करने वाले लिथियम और संबंधित धातुओं के लिए प्रॉस्पेक्टिंग लाइसेंस (पीएल) की सिफ़ारिश की गई है और इसके संबंध में मंज़ूरी आदेश की प्रतीक्षा है। डेक्कन गोल्ड माइन्स लिमिटेड के प्रबंध निदेशक, श्री हनुमा प्रसाद मोदाली ने कहा, तंज़ानिया के एन्ज़ेगा-टेबोरा ग्रीनस्टोन बेल्ट में खोज, वैश्विक स्तर पर कुछ सबसे जटिल इलाकों में से एक में अन्वेषण और पूर्वेक्षण (प्रॉस्पेक्टिंग) में हमारी तकनीकी विशेषज्ञता को उजागर करती है। वैश्विक परिसंपत्तियों के विस्तार को लेकर चल रहे हमारे मौजूदा प्रयास, मुख्य व्यवसाय के पूरक हैं, और इनसे हमारी परिचालन शक्ति बढती है। लिथियम की खोज, क्रिटिकल मिनरल खंड में विविधता लाने की हमारी रणनीति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। डीजीटीपीएल के पास एन्ज़ेगा-टेबोरा ग्रीनस्टोन बेल्ट में सोने के लिए 4 प्रॉस्पेक्टिंग लाइसेंस (पीएल) और गेइटा-सुकुमालैंड ग्रीनस्टोन बेल्ट में सोने के लिए 1 पीएल है। ये सभी 5 पीएल 2021 के अंत में प्रदान किए गए थे। कंपनी ने हाल ही में, लिथियम पीएल मंज़ूरी के लिए आवेदन किया है जिसे मंज़ूर करने की सिफ़ारिश की जा चुकी है। क्रिटिकल मिनरल खंड में विविधता लाने की अपनी रणनीति के अंग के रूप में डीजीएमएल ने तंजानिया में संभावित क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण मात्रा में डेस्कटॉप अध्ययन किया है।

क्या लिंक्डइन बनेगा गेमिंग प्लेटफॉर्म?

नई दिल्ली (एजेंसी)। आजकल मुख्यधारा के इंटरनेट और स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म गेमिंग को अपना रहे हैं। ऐसे में माइक्रोसॉफ्ट के स्वामित्व वाली नेटवर्किंग कंपनी लिंक्डइन भी तेजी से बढ़ते इस बाजार में उतरने की योजना बना रही है। टेकक्रंच की रिपोर्ट के अनुसार, लिंक्डइन के 1 बिलियन से अधिक यूजर्स हैं। अब यह एक नई स्ट्रेटेजी पर काम कर रहा है। कंपनी के प्रवक्ता ने पुष्टि की कि वे गेमिंग पर काम कर रहे हैं, लेकिन अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। प्रवक्ता ने एक बयान में कहा, अभी हम पजल-बेस्ड गेम जोड़ रहे हैं ताकि यूजर्स को थोड़ा मज़ा आए। ऐप रिसर्चर नीमा ओउजी ने कहा है कि ऐसा लगता है कि लिंक्डइन गेमिंग के साथ प्रयोग कर रहा है।

शार्दुल ठाकुर के घरेलू क्रिकेट शेड्यूल पर सवाल उठाने के बाद बीसीसीआई ने बनाई समीक्षा समिति

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने घरेलू क्रिकेट के शेड्यूल को लेकर एक समीक्षा समिति का गठन किया है।18 मार्च को शीर्ष परिषद ने मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर, नेशनल क्रिकेट एकेडमी के निदेशक वीवीएस लक्ष्मण, महाप्रबंधक अबे कुरुविला और मुख्य कोच राहुल द्रविड़ को इस समिति में शामिल किया है।बता दें कि कुछ दिन पहले शार्दुल ठाकुर ने घरेलू शेड्यूल को लेकर कई सवाल उठाए थे। दिग्गजों के साथ बनी समिति सबसे पहले घरेलू क्रिकेट पर मौसम के प्रभाव की समीक्षा करेगी। रणजी ट्रॉफी जो 10 मार्च को समाप्त हुई वह खराब मौसम से काफी प्रभावित रही थी।खासकर पूर्वी और उत्तरी स्थानों पर खेले गए मैचों में काफी प्रभाव पड़ा था।साथ ही यह समिति घरेलू क्रिकेट कैलेंडर की भी समीक्षा करेगी। ऐसा माना जा रहा है कि खिलाड़ियों को बहुत जल्दी-जल्दी मुकाबले खेलने पड़ रहे हैं। ऐसे में उन्हें कुछ राहत मिल सके। शार्दुल मुंबई क्रिकेट टीम के लिए इस सीजन रणजी ट्रॉफी खेले थे। तमिलनाडु के खिलाफ उन्होंने अपने प्रथम श्रेणी करियर का पहला शतक भी जड़ा था।इसी शतक के बाद उन्होंने टाइट शेड्यूल के बारे में अपनी बात रखी थी।उनका कहना था कि 3 दिन के अंतराल के साथ बैक टू बैक मैच खेलना ठीक नहीं है। अगर ऐसे ही खिलाड़ी लगातार खेलते रहे तो चोटिल होने की संभावना काफी बढ़ जाएगी। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ है। शार्दुल ने यह भी कहा था कि अगले साल बीसीसीआई को इसपर फिर से विचार करना चाहिए। रणजी ट्रॉफी के पुराने दिनों में शुरुआती 3 मैचों में 3 दिन का ब्रेक होता था।इसके बाद 4 दिन का ब्रेक होता था। नॉकआउट मुकाबले से पहले खिलाड़ियों को 5 दिन का ब्रेक मिलता था।इस सीजन मैंने देखा है कि सभी मैच 3 दिन के अंतराल पर ही खेले जा रहे हैं। हमारे खिलाड़ी इसी कारण ज्यादा चोटिल हो रहे हैं। द्रविड़ ने इस बारे में कहा था कि भारतीय टीम में शामिल होने वाले कुछ खिलाड़ी व्यस्त शेड्यूल के बारे में शिकायत करते हैं।ऐसे में उनकी शिकायतों पर ध्यान देने की जरूरत है। वह अपना शरीर दांव पर लगा रहे हैं।हमें अपने शेड्यूल को सही करने के बारे में सोचना होगा। रणजी के अलावा दलीप ट्रॉफी और देवधर ट्रॉफी भी खेली जाती है। ऐसे में खिलाड़ी सोचने लगते हैं कि क्या सभी टूर्नामेंट इन दिनों में आवश्यक हैं।

गोला, खोपरा पाउडर एवं फूल मखाने में गिरावट

जयपुर (एजेंसी)। दक्षिण भारत में पैदावार बढ़ने एवं डिमांड कमजोर होने से स्थानीय थोक मंडियों में इन दिनों गोला निरंतर सस्ता हो रहा है। जयपुर मंडी में सोमवार को दीपा ब्रांड गोला 120 रुपए प्रति किलो थोक में बिक गया। चौतरफा ग्राहकी का अभाव होने के कारण फिलहाल गोले में तेजी के आसार कम हैं। समर्थन पाकर ओमशक्ति खोपरा पाउडर के भाव भी नीचे आकर 4450 रुपए तथा मंगल ब्रांड के भाव 4800 रुपए प्रति 25 किलो पर आ गए हैं। इसी प्रकार ऊंचे भावों पर बिकवाली के चलते फूल मखाने के भावों में 50 रुपए प्रति किलो की गिरावट दर्ज की गई है। वर्तमान में बाल राजभोग फूल मखाने के भाव 850 रुपए प्रति किलो रह गए हैं। स्थानीय राजधानी कृषि उपज मंडी कूकरखेड़ा स्थित फर्म उत्सव कॉर्पोरेशन के राजेन्द्र अग्रवाल ने बताया कि होली के आसपास सावों की डिमांड नहीं होने से गोला एवं खोपरा पाउडर में मामूली गिरावट का रुख बन जाता है। मगर अप्रैल में फिर से शादियों की धूम रहेगी। उस समय ग्राहकी निकलने से खोपरा पाउडर में मजबूती बन सकती है। इस बीच बेबी केसर 211 रुपए प्रति एक ग्राम पर स्थिर रही। बीते सप्ताह ग्वाटेमाला में कीमतें गिरने तथा ग्राहकी कमजोर होने से सभी ऑक्शन सेंटर्स पर छोटी इलायची के भाव 25 से 50 रुपए प्रति किलो नीचे आ गए। इसे देखते हुए एवरेज क्वालिटी की छोटी इलायची 1500 रुपए प्रति किलो के आसपास बेची जा रही थी। बड़ी इलायची भी एक पखवाड़े के अंतराल में काफी तेज हो जाने के बाद नेपाल के निर्यातकों की घटाकर बिकवाली आने से भाव 1350 रुपए प्रति किलो पर दबे हुए थे।

आईपीएल 2024 से पहले बीसीसीआई का बड़ा ऐलान सरफराज और जुरेल पर की करोड़ों की बारिश

नईदिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग के 17वें सीजन के शुरू होने से ठीक पहले बीसीसीआई ने 2 युवा खिलाड़ियों को बड़ी खुशखबरी दी है. विकेटकीपर-बल्लेबाज ध्रुव जुरेल और मिडिल ऑर्डर बल्लेबाज सरफराज खान को एक स्पेशल लिस्ट में शामिल किया है. इन दोनों खिलाड़ियों को बीसीसीआई ने साल 2023-24 की सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट की लिस्ट में शामिल कर लिया है. आईपीएल 2024 के शुरू होने से पहले बीसीसीआई ने विस्फोटक बल्लेबाज सरफराज खान और ध्रुव जुरेल को बड़ी सौगात दी है. बोर्ड ने उन्हें साल 2023-24 के सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट में शामिल कर लिया है. इन दोनों ही खिलाड़ियों को हाल ही में खत्म हुई टेस्ट सीरीज में शानदार प्रदर्शन का रिवॉर्ड मिला है. बीसीसीआई ने इंग्लैंड के साथ खेली गई टेस्ट सीरीज के चौथे मैच के बाद सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट की लिस्ट जारी की थी, जिसमें बताया था कि सरफराज खान और ध्रुव जुरेल को तीसरा टेस्ट खेलने के बाद सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट में शामिल कर लिया जाएगा. सोमवार को हुई बीसीसीआई एपेक्स काउंसिल मीटिंग में इनके नामों पर मुहर लगा दी गई. इन दोनों खिलाड़ियों को अब बीसीसीआई की ओर से सालाना 1 करोड़ रुपये दिए जाएंगे. आपको बता दें, इंग्लैंड के खिलाफ डेब्यू करते हुए दोनों खिलाड़ी छा गए थे.

जयदेव उनादकट काउंटी चैम्पियनशिप के लिए ससेक्स से फिर किया अनुबंध

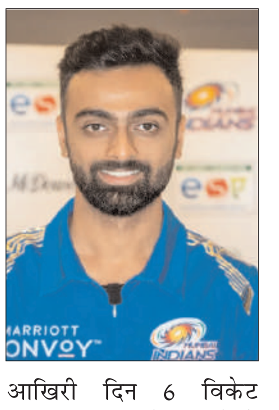

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारतीय तेज गेंदबाज जयदेव उनादकट ने काउंटी क्रिकेट चैम्पियनशिप के लिए फिर से पुरानी टीम और इंग्लिश क्लब ससेक्स से अनुबंध कर लिया है।वह इंडियन प्रीमियर लीग के बाद चैंपियनशिप के आखिरी 5 मैचों के लिए ससेक्स के साथ जुड़ेंगे।उनादकट ने पिछले सीजन में ससेक्स के लिए अंतिम 4 मैचों में से 3 खेले थे और 24.18 की औसत से 11 विकेट चटकाए थे। इससे टीम को डिवीजन-2 में तीसरा स्थान हासिल करने में मदद मिली थी। नए अनुबंध पर उनादकट ने कहा, पिछले सीजन होव में मैने लीसेस्टरशायर के खिलाफ आखिरी दिन 6 विकेट चटकाकर टीम को 15 रनों से रोमांचक दिलाने में मदद की थी। उस प्रदर्शन ने मुझे काउंटी क्रिकेट और ससेक्स में घर का अहसास कराया था।उन्होंने कहा, जब मुख्य कोच पॉल फार्ब्रेस ने मुझे इस सीजन के आखिरी चरण के लिए अनुबंध की पेशकश की तो मुझे बहुत खुशी हुई। उम्मीद है मैं टीम के लिए बेहतर प्रदर्शन करूंगा। मुख्य कोच फार्ब्रेस ने कहा, उनादकट ने पिछले सीजन बेहतरीन प्रदर्शन किया था और उम्मीद है कि वह इस सीजन भी वही लय बरकरार रखेंगे। हम सभी खुश हैं कि उनादकट आखिरी 5 चैंपियनशिप मैचों के लिए द फर्स्ट सेंट्रल काउंटी ग्राउंड लौट रहे हैं।उन्होंने कहा, उनादकट न केवल मैदान पर अपनी क्लास दिखाएंगे, बल्कि हम जो हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं उसका हिस्सा भी बनेंगे। वह एक बहुत अच्छे इंसान हैं। उनादकट इस आईपीएल सीजन में सनराइजर्स हैदराबाद का प्रतिनिधित्व करेंगे और टीम को उनसे बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद होगी। वह टीम के प्रमुख तेज गेंदबाजों में से एक हैं। आईपीएल संस्करण के बाद वह काउंटी चैंपियनशिप के लिए रवाना होंगे। 32 साल के उनादकट ने भारतीय क्रिकेट टीम की ओर से 22 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं।उन्होंने 4 टेस्ट मैचों में 77.00 की औसत और 2.92 की इकॉनमी रेट से 3 विकेट अपने नाम किए हैं।8 वनडे क्रिकेट मैचों में उन्होंने 25.00 की औसत और 3.95 की इकॉनमी रेट से 9 विकेट चटकाए हैं।इसी तरह 10 टी-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों में उन्होंने 21.5 की औसत और 8.68 की इकॉनमी रेट से 14 विकेट लिए हैं।

पीएसएल : ड्रेसिंग रूम में सिगरेट फूंकते पकड़े गए इमाद वसीम

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रिकेट जगत में पाकिस्तान हमेशा चर्चा में रहता है। हालांकि, इसके पीछे वजह उनका खेल नहीं बल्कि करतूत है। पाकिस्तान जिस टी20 लीग (पीएसएल) की टक्कर आईपीएल से करता है, उसके फाइनल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। ये वीडियो ड्रेसिंग रूम का बताया जा रहा है। जिस ड्रेसिंग रूम में खिलाड़ी रणनीति बनाते हैं, खाना खाते हैं, वहां एक पाकिस्तानी क्रिकेटर सिगरेट फूंकते पकड़ा गया। इस्लामाबाद यूनाइटेड के ऑलराउंडर इमाद वसीम को सोमवार को कराची के नेशनल बैंक स्टेडियम में मुल्तान सुल्तांस के खिलाफ पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) फाइनल में शानदार प्रदर्शन के बाद ड्रेसिंग रूम में धूम्रपान करते हुए देखा गया। इस ऑलराउंडर ने इस्लामाबाद यूनाइटेड की तीसरी पीएसएल खिताब जीत में अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने मुल्तान सुल्तांस को 159/9 पर रोकने के लिए पांच विकेट हासिल किए और बाद में सफल रन चेज़ का नेतृत्व करने के लिए नाबाद 19 रन भी बनाए। हालांकि, मैदान पर अपने प्रदर्शन के तुरंत बाद वसीम एक विवाद में फंस गए। उन्हें मैच के दौरान टीम के ड्रेसिंग रूम में धूम्रपान करते देखा गया। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो के अनुसार, जब कैमरा इमाद पर था तब वो स्मोकिंग करते दिखे। बाद में वह खुद हंसने भी लगे। वीडियो में यह नजारा कैप्चर हो गया है और इसको लेकर सोशल मीडिया पर बवाल मचा हुआ है। हैरानी की बात ये है कि इमाद स्मोकिंग करने के बाद बल्लेबाजी के लिए भी उतरे और नाबाद रहकर टीम को जीत भी दिलाई। वसीम को उनके ऑलराउंडर प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द मैच भी चुना गया। इस्लामाबाद यूनाइटेड ने 2018 के बाद पहला फाइनल जीतकर पीएसएल ट्रॉफी पर अपना कब्जा जमाया।

भारत की पहली डिजाइनर लॉयड एयर कंडीशनर रेंज लांच की

रैपिड कूल टेक्नोलॉजी से युक्त केवल 29 मिनट में भारत का सबसे तेजी से बर्फजमी

85 व 100 इंच स्क्रीन साइज़ में गूगल क्यूएलईडी टीवी, फार फील्ड टेक्नोलॉजी के साथ

हैवल्स इंडिया लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक योगेश कुमार गुप्ता की पत्रकार वार्ता

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। आज हैवल्स इंडिया अपनी यात्रा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि की सगर्व घोषणा करती है, जिससे मेक इन इंडिया के लिए हमारी अचल प्रतिबद्धता प्रकट होती है । 2024 के लिए अपनी दमदार लाइनअप पेश करते हुए हम बहुत रोमांचित हैं जिसमें उन्नत एयर कंडीशनर, वॉशिंग मशीनें, टेलीविजन और रेफ्रिजरेटर शामिल हैं । यह लांच महज हमारी प्रोडक्ट लाइन का विस्तार नहीं है बल्कि यह इनोवेशन, टेक्नोलॉजी व भारत के मैन्युफैक्चरिंग ईकोसिस्टम के लिए हमारी प्रतिबद्धता का भी परिचायक है ।

लॉयड का स्टायलस एयर कंडीशनर भारत का पहला डिजाइनर ए.सी. है, यह रूप व कार्यक्षमता दोनों में नवीनता लेकर आया है ।

यह स्मार्ट ए.सी. ऐडिटेबल फेशिया प्रस्तुत करता है जिसकी मदद से आप इसे अपने घर की सज्जा से मेल खाता बना सकते हैं; इसमें ग्रे, टरकॉइज़ और वुड पैटर्न के विकल्प हैं ।

दमदार परफ़ॉरमेंस में निरंतरता के साथ लॉयड 52 डिग्री सेल्सियस जैसी उच्च गर्मी में भी ठंडक दे सकता है ।

यह ए.सी. एचईपीए और ऐक्टिवेटिड कार्बन फिल्टर्स से लैस है तो पार्टिकुलेट मैटर और माइक्रोब को रोक कर यह स्वच्छ व स्वास्थ्यकर हवा देता है ।

इसमें स्मार्ट 4-वे स्विंग भी है जो सटीकता से हवा फैलाता है, गैस कम होने पर मेन्टिनेंस का अलर्ट देता है और इसका इंस्टॉलेशन चैक समुचित सैटअप सुनिश्चित करता है ।

ओपन डोर अलर्ट जैसे सुरक्षा फीचर इसके परिचालन में सुरक्षा की एक अतिरिक्त परत जोड़ते हैं ।

एचडीएफसी बैंक ने भारत भर में 60 बैंकिंग आउटलेट का किया उद्घाटन, आरबीआई द्वारा अधिसूचित अनबैंक्ड रूरल सेंटर्स में वीएलई द्वारा संचालित

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारत के निजी क्षेत्र के सबसे बड़े बैंक, एचडीएफसी बैंक ने आज पूरे भारत में आरबीआई द्वारा अधिसूचित अनबैंक्ड रूरल सेंटर्स (यूआरसी) में 60 बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट (बीसी) बैंकिंग आउटलेट्स शुरू करने की घोषणा की। ये नए आउटलेट अब एचडीएफसी बैंक की यूआरसी नेटवर्क उपस्थिति को 5,020 आउटलेट्स तक बढ़ा देते हैं। गौरतलब है कि बैंक का 34ल बीसी एजेंट नेटवर्क अब 10,602 गांवों में फॉर्मल फाइनेंशियल प्रोडक्ट और सर्विसेस देने का करने का काम करता है। यह पहल सीएससी ई-गवर्मेंट के सहयोग से की गई थी। यह सूक्ष्म-उद्यमियों के रूप में कार्य करने वाले विलेज लेवल आंत्रपेन्योर (वीएलई) को भौतिक केंद्रों के माध्यम से सीधे अंतिम छोर तक आवश्यक बैंकिंग सेवाएं पहुंचाने में मदद करेगा और वंचित क्षेत्रों में समुदायों को सशक्त बनाएगा।

ग्राहकों को बैंक के व्यापक वित्तीय समाधानों से लाभ होगा, जिनमें शामिल हैं: एईपीएस-इनेबल्ड ट्रांजेक्शन के माध्यम से सुविधाजनक नकद जमा और निकासी। ऋणों के ईएमआई संग्रह के लिए नेबरहुड लोकेशन। बीमा सुरक्षा जाल बनाने के लिए सरकार समर्थित सामाजिक सुरक्षा योजनाएं। सरकारी योजना का लाभ सीधे प्राप्त करने के लिए बैंक खाता खोलना। वित्तीय नियोजन के लिए फिक्स्ड और रेकरिंग डिपाजिट विकल्प।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com
रायपुर, गुरुवार 21 मार्च 2024

बेमौसम बारिश ने बढ़ाई कृषकों की चिंता

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ में बेमौसम बारिश ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है. फसलों को भारी नुकसान होने की संभावना जताई जा रही है. सीएम विष्णु देव साय ने एक्स पर कहा कि बेमौसम बारिश और ओले गिरने से फसलों को हानि हुई है, पर इससे किसान भाइयों को मायूस होने की जरुरत नहीं है. नुकसान का आकलन किया जा रहा है. हमारी सरकार किसानों के हितों के लिए सदैव प्रतिबद्ध है

ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी और फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया ने सबसे बड़े मानव राष्ट्रीय ध्वज लहराने का नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया

रायपुर (विश्व परिवार)। आज आयोजित एक अभूतपूर्व कार्यक्रम में, ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी (JGU) ने फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया (FFI) के साथ मिलकर पिछले सारे गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स को पीछे छोड़ते हुए सबसे बड़े मानव राष्ट्रीय ध्वज लहराने का एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। इस आयोजन में प्रमाणिक तौर पर JGU 7368 छात्रों और कर्मचारियों ने भाग लिया, जिसकी पुष्टि गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स संगठन के अधिकारियों द्वारा की गई। वास्तव में यह लम्हा बेहद गौरवपूर्ण था, क्योंकि इस अनोखे अवसर को मनाने के लिए सभी प्रतिभागी पूरे उत्साह के साथ भारतीय ध्वज के रंगों में एकत्रित हुए, जिनमें छ्त्त के सभी स्कूलों एवं संस्थानों के छात्र, कर्मचारी, प्राध्यापक और अन्य अधिकारी शामिल थे।

इस आयोजन को प्रमाणित करने के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के निर्णायक, श्री ऋषि नाथ परिसर में उपस्थित थे और इस अवसर पर उन्होंने कहा, इस बात की घोषणा करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है कि, ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी ने फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया के सहयोग से 7368 उत्साही प्रतिभागियों के साथ सबसे बड़ा मानव झंडा लहराने का रिकॉर्ड बनाने में सफलता प्राप्त की है। अब यह रिकॉर्ड JG और FFI के नाम है, और मुझे प्रसन्नता है कि उनके इस प्रयास के बाद यह नया रिकॉर्ड आधिकारिक गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स का हिस्सा होगा।

इस ऐतिहासिक कार्यक्रम का आयोजन छ्त्त द्वारा फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया के सहयोग से किया गया था, जो भारतीय राष्ट्रवाद की भावना को नए सिरे से जगाने की दिशा में काम करने वाला एक गैर-लाभकारी संगठन है। तिरंगा हमारे आधुनिक लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्षता और उदारवादी मूल्यों का प्रतीक है, तथा एक मजबूत और प्रगतिशील भारत के निर्माण के अपने प्रयास में सभी भारतीयों को इसे अपनाना चाहिए, जो दुनिया में अपना उचित स्थान हासिल करेगा। ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के संस्थापक कुलाधिपति, श्री नवीन जिंदल फ्लैग फाउंडेशन के प्रेरणास्रोत रहे हैं और इस अवसर पर उन्होंने कहा, मैं फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया और ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी को बधाई देता हूँ, जिन्होंने लहराते हुए राष्ट्रीय ध्वज की सबसे बड़ी मानव छवि का नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने में सफलता हासिल की है। भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने 23 जनवरी, 2004 को अपने फैसले में कहा कि, भारतीय संविधान सभी भारतीय नागरिक को भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता है और इसके तहत राष्ट्रीय ध्वज फहराना देश के हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। अपने देश के गौरव और एकता को प्रदर्शित करने के लिए महत्वपूर्ण सार्वजनिक भवनों के साथ-साथ अपने घरों पर भी राष्ट्रीय ध्वज फहराना काफी मायने रखता है। जब हम झंडा प्रदर्शित करते हैं, तो हम धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र जैसी छोटी सोच से ऊपर उठते हैं और यह हमें याद दिलाता है कि हम सबसे पहले एक भारतीय हैं। साथ ही, यह भारत के सभी धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों और क्षेत्रों को दर्शाता है और इस प्रकार यह हमारी विविधता में एकता की सबसे बड़ी निशानी है।

प्री होली सेलिब्रेशन में करंट लगने से युवक की मौत, परिजनों में मचा कोहराम

रायपुर (विसं)। राजधानी रायपुर से एक छात्र की दर्दनाक मौत की खबर सामने आई है। मिली जानकारी के अनुसार रायपुर के पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र के पेटल्स फार्म्स रिजॉर्ट में एक छात्र को करंट की चपेट में आने से मौत हो गई। वहीं बताया जा रहा है कि यह घटना तब घटी जब युवकों द्वारा प्री होली सेलिब्रेट किया जा रहा था। इसी दौरान खैरागढ़ गोलबाजार के व्यवसायी गौतम सालेचा के 25 वर्षीय पुत्र यश सालेचा की करंट लगने से जान चली गई।

पुरानी बस्ती थाना पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार यश सालेचा कार से ड्राइवर व दो बहनों के साथ रायपुर आए थे। रायपुर में यश के दोस्तों ने पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र खारुन नदी के पेटल्स फार्म्स (रिसार्ट) में प्री होली सेलिब्रेशन पार्टी का आयोजन रखा था। इसी पार्टी के दौरान सभी छात्र रिसार्ट के स्विमिंग पूल में बाल गेम खेल रहे थे। इस दौरान छात्र यश स्विमिंग पूल साफ करने वाले वाइपर को हटाकर दूसरी ओर रख रहा था। ऊपर से हाई टेंशन विद्युत का तार था और अचानक छात्र यश इसकी चपेट में आ गया। आनन-फानन में छात्र को अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

बृजमोहन अग्रवाल छत्तीसगढ़ बाल कल्याण परिषद के निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित

बृजमोहन अग्रवाल ने कहा- नया रायपुर में बनाया स्पीच एंड हियरिंग थेरेपी सेंटर

दिव्यांग बालक-बालिकाओं के लिए विशेष पोस्ट मैट्रिक शिक्षण संस्थान खोला जाएगा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद प्रदेश में बालक-बालिकाओं के कल्याण के लिए निरंतर कार्यरत है। परिषद स्वास्थ्य, शिक्षा, बाल अधिकारों की सुरक्षा और उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम का संचालन कर रहा है। जो एक सराहनीय कार्य है। यह बात मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल ने बुधवार को परिषद की सामान्य सभा की बैठक के दौरान कही।

बैठक में श्री बृजमोहन अग्रवाल को परिषद का निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि, सेवा के लिए किसी पद की जरूरत नहीं होती। हम बिना पद पर रह कर भी जरूरतमंदों की सेवा कर सकते हैं। श्री अग्रवाल ने जानकारी दी की परिषद गरीब और दिव्यांजन बच्चों के लिए विभिन्न कार्यों के संचालन कर रहा है। जिसमे जीवन ज्योति बालगृह (बालिका) रायपुर, कोंडागांव, बालगृह (बालक) माना कैम्प, खुला आश्रय गृह, स्पीच एंड हियरिंग थेरेपी सेंटर शामिल है। जो प्रशंसनीय कार्य है। उन्होंने यह भी बताया कि केंद्र सरकार ने परिषद को नया रायपुर में स्पीच एंड हियरिंग थेरेपी सेंटर खोलने की मंजूरी दे दी है जिसके लिए राज्य सरकार 30 एकड़ भूमि का आवंटन करेगा। राज्य सरकार के बजट में भी बाल भवन के लिए प्रावधान किया गया है। सप्रे स्कूल में स्पीच थेरेपी सेंटर खोला जाएगा और माना बाल गृह में सेवाओं का विस्तार किया जाएगा। इतना ही नहीं आने वाले समय में दिव्यांग बालक बालिकाओं के लिए विशेष पोस्ट मैट्रिक शिक्षण संस्थान भी खोला जाएगा। बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि कांग्रेस शासनकाल में परिषद की उपेक्षा के कारण आर्थिक स्थिति बिगड़ गई है। जिसको सुधारने के लिए पाठ्य पुस्तक निगम की तरफ से 5 लाख रुपए प्रति वर्ष दिए जाएंगे। उन्होंने अपनी तरफ से भी परिषद को 5 लाख रुपए देने की घोषणा की।

आज हुई बैठक में श्री चंद्रेश शाह को महासचिव, श्रीमती इंदिरा जैन को कोषाध्यक्ष, डॉ अशोक त्रिपाठी को उपाध्यक्ष चुना गया साथ ही महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े को वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया।

साथ ही परिषद की कार्यकारिणी में सदस्यों की संख्या 10 से बढ़ाकर 25 कर दी गई। बृजमोहन अग्रवाल ने सभी पदाधिकारियों और सदस्यों को बधाई दी।

ईपीएफओ द्वारा भविष्य निधि सदस्य के लाभार्थी को रिकॉर्ड समय में भविष्य निधि, ईडीएलआई एवं पेंशन का भुगतान

रायपुर (विश्व परिवार)। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) अपने सम्माननीय भ.नि. सदस्यों व पेंशनरों को सहज, सरल, सुलभ एंव घर पहुंच सेवा प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर एंव समर्पित है जिसका उदाहरण क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर ने प्रस्तुत किया है। नियोक्ता, मुख्य चिकित्सा एंव स्वास्थ्य अधिकारी, जिला कबीरधाम, छत्तीससगढ़ के सामुदायिक स्वास्थ्य ए केन्द्र, पण्डवरिया में मृतक सदस्य स्व. मोतीलाल कौशिक, एनआरसी अटेडेंट के पद पर संविदा कर्मचारी के रूप में कार्यरत थे जिनकी आकस्मिक मृत्यु सेवाकाल में 27.07.2023 को हो गयी थी उनकी पत्नी की मृत्यु प्रसव के समय 10.12.2022 को छह माह पूर्व ही हो चुकी थी उनका एक ही पुत्र लुकेश कौशिक जिसका जन्म 02.12.2022 को हुआ था, जिसका लालन-पालन वर्तमान में उसके दादा सुखदेव कौशिक के द्वारा किया जा रहा है। उक्त मृत्यु प्रकरण में क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर के क्षेत्रीय भविष्यी निधि आयुक्ति एंव कार्यालय प्रभारी अभिषेक कुमार ने संज्ञान लेते हुए तत्काल प्रभाव से आवश्यक कार्रवाई किए जाने के संबंध में निदेश दिए। कार्यालय ने भविष्यत निधि भुगतान के रूप में सदस्य के 1 साल के पुत्र लुकेश कौशिक के पालक दादा सुखदेव के खाते में 1,17,440/- रुपए तथा इडीएलआई लाभ के रूप में 4,88,560/- रुपए भुगतान किया जो कि दिनांक 19.03.2024 को उनके खाते में जमा हो चुका है। साथ ही मासिक पेंशन 2071/- रुपए तथा पेंशन एरियर्स के रूप में 14704/- रुपए व्यक्तिगत रूप से पीपीओ की प्रति के साथ मृतक सदस्यक मोतीलाल कौशिक के पिता सुखदेव कौशिक को कार्यालय के प्रवर्तन अधिकारी द्वारा सौंपा गया जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा स्वास्थ्य विभाग ने बतौर नियोक्ता की तथा लाभार्थी सुखदेव ने भी इस संबंध में क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर के प्रति आभार प्रदर्शित करते हुए कहा कि उनका पुत्र तो नहीं रहा लेकिन जिस तरह से कर्मचारी भविष्य निधि संगठन ने स्वयं ही समस्त कार्रवाई करते हुए प्रकरण का निष्पादन किया और घर पर पीपीओ की प्रति प्रदान की है वो अकल्पनीय है।

प्रत्याशी तय नहीं कर पा रही कांग्रेस, ये चिंतन का विषय : किरण देव सिंह

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के अभी तक प्रत्याशी घोषित नहीं किये जाने पर भाजपा अध्यक्ष किरण सिंहदेव ने कांग्रेस पर तंज कसा है. उन्होंने कहा कि कांग्रेस एक उंगली बीजेपी की तरफ करती हैं तो तीन उंगली कांग्रेस की तरफ उठता है. कांग्रेस अभी तक प्रत्याशी तय नहीं कर पा रही है. ये कांग्रेस के लिए चिंतन का विषय है. इसके साथ ही किरण सिंहदेव ने प्रदेश के पांच संभागों में कांग्रेस की प्रेस कांफ्रेंस पर निशाना साधा है.

छत्तीसगढ़ बीजेपी के सहप्रभारी नितिन नबीन तीन दिनों के दौरे पर रहेंगे. नितिन नबीन के दौरे को लेकर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंहदेव ने कहा कि सभी कमेटियों की बैठक क्रमवार होगी. आगामी रणनीतियों पर चर्चा की जाएगी. कार्यकर्ता सम्मेलन प्रदेश भर में तेज गति से चल रहा है. 5 वर्षों में जो विकास के कार्य ठप पड़े थे वो चालू हो गया है. सभी कार्यकर्ता लोकसभा की दृष्टि से कार्य कर रहे हैं.

पांच संभागों में कांग्रेस की प्रेस वार्ता पर बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष किरण देव ने कहा कि कांग्रेस जिस मुद्दे को लेकर प्रेस वार्ता कर रही है. उसमें परेशानी क्या है, अच्छी प्रक्रिया है. सबको मालूम रहेगा किस पार्टी को कौन कितना सहयोग कर रहा है. कांग्रेस की छटपटाहट है. मोदी सरकार ने पारदर्शिता सरकार दी है. सरकार की हर काम की जानकारी आम जनता तक जाती है.

रायपुर रेल मंडल में ट्रेनों के सुरक्षित परिचालन को लेकर भाटापारा स्टेशन में संरक्षा सेमिनार का आयोजन संपन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। दिनांक 20 मार्च 2024 को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल के संरक्षा विभाग के द्वारा ट्रेनों के सुरक्षित परिचालन हेतु परिचालन, विद्युत परिचालन, सिगनल एवं दूरसंचार तथा इंजीनियरिंग विभाग के कर्मचारियों के साथ भाटापारा स्टेशन में संरक्षा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें निम्न बिंदुओं पर चर्चा की गई-

स्पैड से बचाव के लिए बरती जाने वाली सावधानियां एवं ऑन अवस्था में ऑटो सिग्नल पास करना, शंटिंग के दौरान बरती जाने वाली सावधानियां, इंजीनियरिंग विभाग के द्वारा ट्रैक संबंधी बरती जाने वाली ग्रीष्मकालीन सावधानियां एवं कार्य क्षेत्र में निजी संरक्षा, पॉइंट्स एवं सिग्नल फेल्योर के दौरान परिचालन एवं सिग्नल कर्मचारियों का कर्तव्य, चलती ट्रेन में फेलियर रोकने के लिए क्रू, ट्रेन मैनेजर एवं स्टेशन कर्मचारियों द्वारा साइडिंग एवं गुड्स शेड से गाड़ी क्लियर करते समय की जाने वाली निरीक्षण, प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स का प्रदर्शन, तथा अग्निशमन यंत्र का उपयोग एवं प्रदर्शन।

इस संरक्षा सेमिनार में श्री राजेंद्र कुमार साहू, अपर मंडल रेल प्रबंधक/ परिचालन /रायपुर, डॉ. देवेंद्र नाथ बिसवाल/ वरिष्ठ मंडल संरक्षाअधिकारी/ रायपुर, श्री बी. एन. पटेल/ वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता/ परिचालन/ रायपुर, सहायक मंडल अभियंता/ भाटापारा, सहायक मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार अभियंता /भाटापारा मुख्य रूप से उपस्थित थे। इस संरक्षा संगोष्ठी को सफल बनाने के लिये श्री त्रिनाथ मोहंती /संरक्षा सलाहकार/विद्युत, श्री संजीव कुमार, संरक्षा सलाहकार /इंजीनियरिंग तथा श्री शंकर लाल पटेल, संरक्षा सलाहकार/ सिग्नल एवं दूरसंचार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संरक्षा संगठन/रायपुर मंडल के द्वारा प्रत्येक माह में 02 संरक्षा संगोष्ठी का आयोजन रायपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों में किया जाता है, जिससे कर्मचारियों में कार्य करने के दौरान संरक्षा के प्रति जागरुकता लाई जा सके। उक्त संरक्षा संगोष्ठी में संरक्षा सलाहकार, सुपरवाइजर, एवं फील्ड कर्मचारियों को मिलाकर कुल 83 लोगों ने भाग लिया।

कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह ने कला केन्द्र पहुंचकर प्रशिक्षुओं व पालकों से लिया फीडबैक

कैलीग्राफी, वैदिक शिक्षा, फैशन डिजाइनिंग, बेकरी, भाषा ज्ञान जैसे शॉर्ट टर्म प्रशिक्षण का भी मिला सुझाव

रायपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह आज कला केन्द्र पहुंचकर अपने बच्चों को विभिन्न विधाओं से प्रशिक्षण दिलाने पहुंचे पालकों से बात की। उन्होंने कहा कि कला केन्द्र का संचालन प्रतिभा संपन्न व अपनी कला को निखारने की इच्छा रखने वाले हर आयु वर्ग के लोगों के लिए किया जा रहा है। नृत्य, संगीत, आर्ट एंड क्राफ्ट, गायन के साथ ही अपनी आवाज़ पर गाने की रिकॉर्डिंग के लिए बने स्टूडियो का कला प्रेमी उत्साह के साथ उपयोग कर रहे है। 10 मार्च से अबतक एक हजार से भी अधिक कला प्रेमियों ने प्रशिक्षण हेतु कला केन्द्र आकर संपर्क किया है।

जी.ई. रोड पर स्थित नालंदा परिसर के समीप बने इस कला केन्द्र में अपनी अभिरूचि के अनुरूप सैकड़ों की तादाद में बच्चें युवा एवं महिलाएं पहुंच रहें हैं। कलेक्टर डॉ. सिंह आज इन्हीं प्रशिक्षण प्राप्त कर रहें कला साधकों से मिलें और उपलब्ध सुविधाओं के संबंध में उनसे फीडबैक लिया। इस दौरान नगर निगम कमिश्नर श्री अबिनाश मिश्रा भी साथ थे। प्रशिक्षण प्राप्त कर रहें बच्चों के साथ उनके पालक भी कला केन्द्र में उपस्थित थे, जिनसे कलेक्टर ने विस्तार से बात की। पालकों ने सुझाव दिया कि कैलीग्राफी, वैदिक शिक्षा, फैशन डिजाइनिंग, बेकरी, भाषा ज्ञान जैसे शॉर्ट टर्म प्रशिक्षण की भी व्यवस्था होने से बच्चों को प्रशिक्षण के लिए लेकर आने वाले महिलाओं को अपने समय के बेहतर सदुपयोग का अवसर मिलेगा और इससे न केवल वर्तमान पीढ़ी, बल्कि तीन पीढ़ियों का जुड़ाव कला परिसर से होगा। कलेक्टर ने महिलाओं के सुझाव को गंभीरता से सुना एवं ठोस पहल हेतु आश्वस्त किया। उन्होंने निरीक्षण भ्रमण के दौरान इस परिसर की नियमित निगरानी हेतु पूरे परिसर में पर्याप्त रोशनी, सीसीटीवी कैमरे, पेयजल हेतु आर.ओ. मशीन व साथ आए परिजनों के लिए बैठक की अतिरिक्त व्यवस्था हेतु भी निर्देशित किया है। उन्होंने 01 अप्रैल से प्रशिक्षुओं एवं साथ आने वाले परिजनों के लिए पहचान पत्र जारी करने के लिए भी कहा है।

द लेजेंड रिटर्न्स : काइनेटिक ग्रीन की ई-लूना ने छत्तीसगढ़ की सड़कों पर दिखाया इलेक्ट्रिक एनर्जी का जलवा

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत में इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाली प्रमुख कंपनी, काइनेटिक ग्रीन ने आज रायपुर, छत्तीसगढ़ में आयोजित एक भव्य समारोह में बहुप्रतीक्षित ई-लूना का अनावरण किया। यह स्टाइलिश, मल्टी-यूटिलिटी इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी एवं फीचर्स से लैस है जो इसे व्यक्तिगत और व्यावसायिक उपयोग दोनों के लिए एक आदर्श वाहन बनाती हैं।

ई-लूना X1 वैरिएंट रु. 69,990 (एक्स-शोरूम) की आकर्षक शुरूआती कीमत से शुरू होता है। यह छत्तीसगढ़ में काइनेटिक ग्रीन डीलरशिप पर उपलब्ध है। यह परिवहन के विश्वसनीय और पर्यावरण-अनुकूल साधन चाहने वाले उपभोक्ताओं के लिए बहुत अच्छा विकल्प है। ई लूना की डिलीवरी पूरे छत्तीसगढ़ में काइनेटिक ग्रीन डीलरशिप से शुरू हो गई है।

इन विशिष्ट अतिथियों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई : काइनेटिक ग्रीन के को-फाउंडर और एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर श्री रितेश मंत्री और भारत ईवी- काइनेटिक ग्रीन डीलरशिप, रायपुर के मालिक श्री प्रदीप गोयल के साथ सम्मानित मंत्रियों ने संयुक्त रूप से ई-लूना का अनावरण किया जो छत्तीसगढ़ के इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण क्षण है।

ई-लूना तमाम जरूरतों को पूरा करने वाली खूबियों से लैस है। ये आपके बजट के मुताबिक यात्रा की दूरी को पूरा करने के लिए, 1.7 kWh से 3.0 kWh तक बैटरी विकल्पों की एक सीरीज में आती है। इसकी शक्तिशाली 2.0 kWh बैटरी एक बार चार्ज करने पर 110 किमी की दूरी तय करती है। इसमें फास्ट चार्जिंग की सुविधा दी गई है। नए अवतार में आने वाली ई-लूना बदली जा सकने वाली बैटरी के साथ आती है। सहज और सुरक्षित सवारी के लिए, ई-लूना में एक आधुनिक बीएलडीसी मिड-माउंट मोटर और एक कैन-इनेबल्ड कम्युनिकेशन सिस्टम दिया गया है। इस सिस्टम में सभी तरह के मौसम के लिए एक आकर्षक डिजिटल मीटर दिया गया है जो पानी और धूल-प्रूफ रहते हुए रियल टाइम डेटा प्रदर्शित करता है।

लोकसभा चुनाव के बाद जमीन के कीमतों में होगा इजाफा

रायपुर (आरएनएस)। अप्रैल के करीब आते ही जमीन की गाइडलाइन को लेकर उहापोह की स्थित बनी हुई है। कुछ लोगों का कहना है कि नई सरकार 30 प्रतिशत की छूट को एक अप्रैल से खत्म कर देगी।

ऐसे में जमीन की कीमतें बढ़ जाएंगी। यही वजह है कि रजिस्ट्री ऑफिस में लंबी कतार लगना शुरू हो गई है। ने जब इस मामले में पड़ताल की तो सामने आया कि लोकसभा चुनाव तक कोई कीमत नहीं बढ़ने वाली है।

जून के बाद पिछली सरकार की दी गई 30 प्रतिशत की छूट को खत्म किया जा सकता है। इसके अलावा शहर में शामिल हो चुके गांवों की जमीन की कीमतों को भी रिवाइज करने की बात सामने आ रही है। इससे जमीन की कीमतों में बड़ा उछाल आने की संभावना है। दिसंबर 2018 में कांग्रेस की सरकार बनी। 25 जुलाई 2019 को सरकार ने राज्य में प्रचलित गाइडलाइन दरों को 30 प्रतिशत की छूट दे दी। इसके बाद से गाइडलाइन दरों के पुनर्निरीक्षण का काम लगभग बंद हो गया। हर साल जिला मूल्यांकन समिति से नई दरें तो मंगाई जाती थी, लेकिन 31 मार्च को आदेश जारी कर दिया जाता था कि 2019 में दी गई छूट की अवधि को आगामी वर्ष के लिए बढ़ाया जाता है। इस साल भी यह प्रक्रिया दोहराए जाने के संकेत मिल रहे हैं।

क्योंकि अगर यह आदेश जारी नहीं हुआ तो स्वत: 30 प्रतिशत छूट खत्म हो जाएगी। जानकार कहते हैं कि ये छूट नियमविरुद्ध है, क्योंकि बाजार मूल्यों को कम नहीं किया जा सकता है। जमीन कीमतें बढ़ती ही हैं, घटती नहीं। मूल्यांकन समिति की नहीं हुई बैठक: हर साल गाइडलाइन रिवाइज करने उप जिला मूल्यांकन समिति के बाद जिला मूल्यांकन समिति की बैठक होती है।

कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट आज आएंगे रायपुर

रायपुर (विसं)। भाजपा के प्रदेश सह प्रभारी नितिन नबीन के बाद अब कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट दो दिन के दौरे पर कल रायपुर आ रहे हैं। वे कल दोपहर नियमित विमान से आने के बाद एयरपोर्ट से ही कार द्वारा पलारी, कसडोल, गिदौरी, रामगढ़ होकर जांजगीर जाएंगे। जहां कार्यकताओं की बैठक और चुनावी सभा लेंगे। सचिन रात बिलासपुर में रात्रि विश्राम के साथ स्थानीय नेताओं के साथ बैठक करेंगे। 22 को सुबह रायपुर आने के बाद राजीव भवन में रायपुर लोकसभा के कार्यकर्ताओं की बैठक के बाद 4.30 के विमान से लौट जाएंगे।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354